A Daily News Magazine
इंदौर
मंगलवार, 5 अगस्त, 2025

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 297, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

रूस से तेल सप्लाई घटी तो भारत के पास क्या हैं विकल्प ?

– अभय कुमार सिंह

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि उन्हें जानकारी मिली है कि भारत रूस से तेल ख़रीदना बंद कर सकता है। ट्रंप ने पत्रकारों से कहा, 'मेरी जानकारी में आया है कि अब भारत रूस से तेल नहीं ख़रीदेगा। मैंने ऐसा सुना है, ये एक अच्छा क़दम है। आगे क्या होता है, ये देखेंगे...।'

इससे दो दिन पहले ही ट्रंप ने घोषणा की थी कि 1 अगस्त से अमेरिका को जाने वाले हर भारतीय सामान पर 25 प्रतिशत टैरिफ़ लगाया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा था कि अगर भारत रूस से सैन्य उपकरण और तेल ख़रीदता रहा तो इस टैरिफ़ के अलावा अतिरिक्त पेनल्टी भी देनी होगी। उनका आरोप है कि भारत की ये ख़रीद रूस को यूक्रेन युद्ध जारी रखने में मदद देती है।

रूस से तेल ख़रीद के सवाल पर भारत के विदेश मंत्रालय प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने एक प्रेस ब्रीफ़िंग में कहा, 'आप जानते हैं कि हमारी ऊर्जा ज़रूरतों पर हम सारे हालात देखकर फ़ैसला लेते हैं। हम बाज़ार में क्या उपलब्ध है और दुनिया में क्या स्थिति है, उसी के आधार पर फ़ैसला लेते हैं।'

अब चर्चा इस बात पर है कि अगर भारत रूस से तेल ख़रीदना बंद कर दे या कम कर दे तो इसका असर देश की अर्थव्यवस्था, तेल की कीमतों और कूटनीतिक रिश्तों पर किस तरह पड़ेगा। भारत और चीन रूस के कच्चे तेल के सबसे बड़े ख़रीदार हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद से रूस से भारत का तेल आयात तेज़ी से बढ़ा है। वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक़, वित्त वर्ष 2024-25 में भारत के कुल तेल आयात का लगभग 35 प्रतिशत हिस्सा रूस से आया, जबकि वित्त वर्ष 2018 में यह केवल 1.3 प्रतिशत था।

ऐसे में सबसे अहम सवाल यही है कि अगर यह आपूर्ति रुक जाए तो क्या हालात बनेंगे।

'सर्च ग्रुप ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनीशिएटिव (जीटीआरआई) के फ़ाउंडर अजय श्रीवास्तव का मानना है कि वैश्विक स्तर पर तेल की उपलब्धता अभी भी पर्याप्त है और आपूर्ति में कोई संकट नहीं होगा। तेल एक कमोडिटी है। भारत दुनिया की कुल खपत का केवल क़रीब 2 प्रतिशत इस्तेमाल करता है। तेल में हमेशा से ओवर प्रोडक्शन की समस्या रही है। यही वजह थी कि ओपेक बना ताकि देश ज़्यादा उत्पादन न करें। लेकिन अब हालात ये हैं कि जो तेल उत्पादक देश हैं, वे जब चाहें ज़्यादा उत्पादन कर सकते हैं। इसलिए आज सप्लाई कोई समस्या नहीं है।'

हालांकि, 'निकोर एसोसिएट्स की अर्थशास्त्री मिताली निकोर का कहना है कि यह रास्ता इतना आसान नहीं होगा। यह भारत के लिए बहुत कठिन स्थिति है। अभी हम रूस से तेल डिस्काउंट पर ख़रीद पा रहे हैं। यूरोप भी रूस से कुछ तेल ख़रीद रहा है। अमेरिका भी रूस से कुछ सामान ख़रीद रहा है, भले ही वह तेल नहीं हो। तब अमेरिका दूसरे देशों को यह क्यों कह रहा है कि वे रूस से व्यापार न करें? चीन ने भी यही बात उठाई है।'

'ईवाई इंडिया के ट्रेड पॉलिसी लीडर अग्नेश्वर सेन आगे की रणनीति पर जोर देते हैं। उनका कहना है कि भारत को ऊर्जा सुरक्षा बनाए रखने के लिए कई स्रोतों की तरफ़ देखना होगा। अगर भारत रूस से तेल आयात कम करने का फ़ैसला करता है, तो उसे अपने पारंपरिक मध्य पूर्व के साझेदारों, सऊदी अरब, इराक़ और यूएई की तरफ़ देखना होगा। इसके साथ ही अफ्रीका और अमेरिका जैसे नए स्रोत भी तलाशने पड़ेंगे। लेकिन हर विकल्प के साथ चुनौतियां होंगी, जैसे ऊंची कीमतें और आपूर्ति की अनिश्चितता।'

'घरेलू उत्पादन इस समय कुल ज़रूरत का क़रीब 15 प्रतिशत पूरा करता है, जिसे जल्द बढ़ाना आसान नहीं है। इसलिए कम समय में भारत को अपनी ऊर्जा सुरक्षा, लागत और भू-राजनीतिक संतुलन बनाए रखने के लिए तेल के स्रोत में सावधानी से विविधता लानी होगी।'

भारत के पास तेल के लिए कई संभावित स्रोत हैं, लेकिन उनके अपने फ़ायदे और सीमाएं हैं।

मिताली निकोर बताती हैं, 'सबसे बड़ा विकल्प हमेशा मध्य पूर्व (यूएई) होता है। वहां से तेल महंगा है, लेकिन उपलब्ध है। अमेरिका से भी तेल लिया जा सकता है। अमेरिका की कोशिश है कि अपनी तेल कंपनियों को आगे बढ़ाए, क्योंकि आने वाले 40-50 साल में ही तेल बेचने का समय बचा है। अफ्रीका में भी कुछ देश हैं जहां तेल उपलब्ध है, लेकिन अफ्रीका में पिछले 20 सालों में चीन ने भारी निवेश किया है और वहां संसाधनों पर उसका काफ़ी नियंत्रण है। इसलिए वहां से तेल लेना भी आसान नहीं होता। यानी तेल ख़रीद के विकल्प मौजूद हैं, लेकिन वे न तो सस्ते हैं और न ही तुरंत उपलब्ध हो जाते हैं।'

'इन चुनौतियों का ज़िक्र केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी ने पिछले दिनो कहा था कि हमारे आपूर्ति के स्रोतों में काफ़ी विविधता है। अब हम 39 देशों से तेल आयात कर रहे हैं। और यह किसी की इच्छा के खिलाफ़ नहीं था।'

'अगर भारत रूस से तेल ख़रीदना बंद कर दे या काफ़ी कम कर दे, तो इसका घरेलू बाजार और अर्थव्यवस्था पर कैसा असर पड़ेगा? अजय श्रीवास्तव कहते हैं कि रूस से मिलने वाला सस्ता तेल भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए राहत ज़रूर लाया, लेकिन इसका लाभ आम लोगों तक नहीं पहुंचा। जो भी बचत हुई, वह सरकार या रिफ़ाइनिंग कंपनियों के पास रही। पेट्रोल-डीज़ल के दाम में कोई अप्रत्याशित कमी नहीं आई।' दूसरी तरफ़ मिताली निकोर मानती हैं कि अगर रूस से तेल नहीं लिया गया तो इसका असर हर हाल में दिखेगा। या तो हमें पेट्रोल-डीजल के दाम बढ़ाने पड़ेंगे, या हमें अमेरिका के टैरिफ़ का ख़तरा उठाना होगा, या सर्विस सेक्टर पर नए टैक्स या टैरिफ़ लग सकते हैं। हर तरफ़ नुकसान ही नुकसान है। इस स्थिति को सही तरीके से संभालने के लिए हमें अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत करना होगा, घरेलू खपत बढ़ानी होगी और युद्ध से दूरी रखनी होगी।'

तेल की सप्लाई को लेकर आने वाले समय में भारत की रणनीति क्या हो सकती है, इस पर मिताली निकोर का कहना है, 'मुझे लगता है कि सरकार का मौजूदा बयान सही है कि हम जहां से भी अच्छा रेट मिलेगा, वहां से तेल ख़रीदेंगे। हमारी रणनीति अब यह होनी चाहिए कि हम जल्दी से जल्दी अक्षय ऊर्जा में निवेश करें ताकि तेल पर निर्भरता घट सके।' अजय श्रीवास्तव के अनुसार अगर हम लंबे समय के लिए ऊर्जा में आत्मनिर्भर होना चाहते हैं, तो घरेलू तेल खोज पर ध्यान देना ज़रूरी है। रूस से तेल ख़रीदना एक आर्थिक फ़ैसला था, कोई राजनीतिक रुख़ नहीं।'

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सावन के आखिरी सोमवार को 1 लाख भक्तों ने महाकाल के दर्शन किए

महाकाल, काशी-देवघर में शिव भक्तों का सैलाब

उज्जैन/काशी (एजेंसी)। सावन महीने के आखिरी सोमवार पर मध्य प्रदेश के उज्जैन में महाकालेश्वर मंदिर में सुबह 7 बजे तक 35 हजार भक्त दर्शन किए थे। सुबह 11 बजे तक ये आंकड़ा 1 लाख पार हो चुका है। अभी भी भक्तों का आना जारी है। शाम को बाबा महाकाल की शाही सवारी निकली।

वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर के बाहर भक्तों की 5 किमी लंबी लाइन लगी थी। मंगला आरती में बाबा का विशेष श्रृंगार किया गया था। बाबा को स्वर्ण मुकुट पहनाया गया था। यहां भक्तों के लिए मंदिर प्रशासन ने रेड कारपेट बिछाया गया था। पुष्प वर्षा की गई। बारिश और बाढ़ के बावजूद लोगों की भक्ति में कमी नहीं आई है। झारखंड के देवघर में बाबा बैद्यनाथ धाम के पठ सुबह 3 बजे खोले गए थे।

काशी में भक्तों का जनसमूह उमड़ा

सावन का आखिरी सोमवार था। काशी विश्वनाथ के दर्शन करने के लिए अभी भी लाइन लगी हुई थी। इस बीच, मंगला आरती में बाबा का विशेष श्रृंगार किया गया था। सोने का मुकुट पहनाया गया था। भक्तों के लिए मंदिर प्रशासन ने रेड कारपेट बिछाया गया था। पुष्प वर्षा भी की गई थी।

भगवान गणेश, मां दुर्गा और महालक्ष्मी की प्रतिमाएं मिट्टी से ही बने : सीएम

भगवान गणेश सबके मनोरथ पूरे करें, कृपावंत का शुभाशीष सब पर बरसे

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार को मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा संचालित 'माटी गणेश-सिद्ध गणेश' अभियान का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भगवान गणेश के पूजन से व्यक्ति को ज्ञान, बुद्धि और रिद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती है। भगवान गणेश सबके मनोरथ पूर्ण करें। कृपावंत भगवान का शुभाशीष हम सब पर बरसे और हमारे प्रदेश में सुख-समृद्धि का सतत् संचार हों। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जन अभियान परिषद के पदाधिकारियों से कहा कि भगवान गणेश, नवरात्रि में मां दुर्गा और दीपावली पर्व पर महालक्ष्मी की प्रतिमाएं भी मिट्टी से ही निर्मित हो। इसके लिये जागरूकता अभियान भी चलाएं। उन्होंने कहा कि मिट्टी की प्रतिमाएं मिट्टी में ही समाहित हो जाती हैं, इससे पर्यावरण को

कोई नुकसान नहीं होता। इस अभियान का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और गणेश चतुर्थी पर्व पर जन-जन को पवित्र माटी और गौमाता के गोबर से निर्मित गणेश प्रतिमाओं के उपयोग को प्रोत्साहित करना है, ताकि जल स्रोतों की स्वच्छता बनी रहे और प्राकृतिक संतुलन भी अक्षुण्ण रहे।

पर्यावरण संरक्षण की नवाचारी पहल है 'माटी गणेश-सिद्ध गणेश अभियान'

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अभियान में निहित संकल्पना पर केन्द्रित एक सचित्र पोस्टर का विमोचन भी किया। परिषद् द्वारा पर्यावरण संरक्षण की नवाचारी पहल करते हुए माटी गणेश-सिद्ध गणेश अभियान चलाया जायेगा। इस अभियान में पर्यावरण हितैषी संस्थान नर्मदा समग्र द्वारा प्रशिक्षण के माध्यम से प्रदेश के सभी 313 विकासखण्ड में परिषद् के नेटवर्क से जुड़ी नवांकुर सखियों को प्रशिक्षित किया जायेगा। प्रशिक्षित सखियों द्वारा पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से अपने ग्रामों में स्थानीय महिलाओं को प्रेरित-प्रशिक्षित कर मिट्टी की 10 लाख गणेश प्रतिमाओं की घर-घर स्थापना करायी जायेगी। अभियान का लक्ष्य 10 लाख गणेश प्रतिमाओं का निर्माण कर 25 लाख लोगों की सहभागिता सुनिश्चित करना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अभियान के संकल्पना गीत एवं पोस्टर का विमोचन भी किया। कार्यक्रम में मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष श्री मोहन नागर भी उपस्थित थे। सभी ने संकल्प लिया कि इस वर्ष घरों में केवल मिट्टी और गौमाता के गोबर से बनी गणेश प्रतिमाएं ही स्थापित की जाएंगी और इन प्रतिमाओं का विसर्जन भी नितांत प्राकृतिक तरीके से ही किया जाएगा। म.प्र. जन अभियान परिषद के कार्यपालक निदेशक डॉ. बकुल लाड़ ने बताया कि परिषद् ने नर्मदा समग्र संस्था के साथ 'माटी गणेश-सिद्ध गणेश' अभियान की नई पहल की है।

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

सयानापन सुनो खंजर को
अंदर बांध रक्खा है,
कि अबकी बार पोरस ने
सिकंदर बांध रक्खा है..
बदलते दौर में देखो अजब
फ़िरकापरस्ती है,
किसी हुसियार बंदर ने
कलंदर बांध रक्खा है..
अदावत ज़िन्दगी से,
पर तुम्हें पाने की हसरत में,
अभी तक अपनी सांसों का
बवंडर बांध रक्खा है..
शहर जाने की ज़िद
करता तो नदिया पार कर लेता,
मगर हर गांव में गुंजा ने
चंदर बांध रक्खा है..
अदब महफ़ूज़ रक्खा है
हमेशा से दुपट्टों में,
अना इतनी कि पल्लू में
मुकद्दर बांध रक्खा है..
मरुस्थल में लिखे हैं
'प्रीति' के अशआर हमने भी,
ज़हन के एक कोने में
समंदर बांध रक्खा है..।

– प्रीति पांडेय

एअर इंडिया की सैन फ्रांसिस्को-मुंबई फ्लाइट में कॉकरोच

नई दिल्ली (एजेंसी)। एअर इंडिया की सैन फ्रांसिस्को से कोलकाता होते हुए मुंबई जाने वाली फ्लाइट में कॉकरोच मिलने का मामला सामने आया है। दो पैसेंजर्स ने अपनी सीट के पास कॉकरोच मिलने की शिकायत थी। इसके बाद केबिन क्रू ने

दोनों की सीट बदल दी। दोनों कॉकरोच देखकर परेशान हो गए थे। एयरलाइन ने एक बयान में बताया कि हमारे केबिन क्रू ने दोनों पैसेंजर्स को उसी केबिन की दूसरी सीटों पर बिठा दिया, जहां वे मुंबई पहुंचने तक आराम से बैठे थे।

कोलकाता में फ्यूल भरने के दौरान, ग्राउंड क्रू ने फ्लाइट की सफाई की। फिर फ्लाइट मुंबई के लिए रवाना हुई।

सुप्रीम कोर्ट की राहुल को फटकार

● आपके कैसे पता चीन ने जमीन हड़पी, सच्चे भारतीय होते तो ऐसा नहीं कहते

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को भारतीय सेना पर आपत्तिजनक टिप्पणी को लेकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी को फटकार लगाई। कोर्ट ने पूछा- आपको कैसे पता चला कि चीन ने भारत की 2000 वर्ग किमी जमीन पर कब्जा कर लिया है, विश्वसनीय जानकारी क्या है, अगर आप सच्चे भारतीय होते, तो ऐसा नहीं कहते।

कोर्ट ने कहा-जब सीमा पार संघर्ष चल रहा हो, तो क्या आप ये सब कह सकते हैं। आप संसद में सवाल क्यों नहीं पूछ सकते? आप (राहुल गांधी) विपक्ष के नेता हैं, संसद में बोलें, सोशल मीडिया पर नहीं बोले। इसके साथ, सेना पर आपत्तिजनक टिप्पणी मामले में लखनऊ की कोर्ट में राहुल के खिलाफ चल रही कार्रवाई पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी। कोर्ट ने इस मामले में शिकायतकर्ता (उदय शंकर श्रीवास्तव) और यूपी सरकार को नोटिस भेजा है। 16 दिसंबर 2022 में भारत जोड़ो यात्रा के दौरान राहुल ने विवादित बयान दिया था। कहा था- लोग भारत जोड़ो यात्रा के बारे में पूछेंगे, लेकिन चीन ने 2000 वर्ग किमी भारतीय जमीन कब्जा की है, 20 भारतीय सैनिक मारे गए और हमारे सैनिकों को अरुणाचल में पीटा जा रहा है। राहुल के बयान पर बॉर्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन के पूर्व निदेशक उदय शंकर श्रीवास्तव ने लखनऊ की एमपी एमएलए कोर्ट में मानहानि केस दर्ज कराया था। इसी साल 29 मई को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गांधी की याचिका खारिज कर दी थी और समन भेजा था। गांधी ने समन और शिकायत को चुनौती दी थी।

भारत की रोमांचक जीत, सीरीज 2-2 से ड्रॉ

इंग्लैंड के आखिरी 4 विकेट एक घंटे में गिरे, सिराज 9 विकेट लेकर मैन ऑफ द मैच

लंदन (एजेंसी)। भारत ने द ओवल टेस्ट के आखिरी दिन 4 विकेट लेकर 6 रन से मैच जीत लिया। इसी के साथ टीम ने 5 मैचों की एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी भी 2-2 से बराबर करा ली। मोहम्मद सिराज ने दूसरी पारी में 5 विकेट लेकर मैच पलटा और टीम को रोमांचक जीत दिलाई। सोमवार को मुकाबले के आखिरी दिन इंग्लैंड को 35 रन बनाने थे और 4 विकेट बाकी थे। मोहम्मद सिराज ने 3 विकेट लेकर जीत भारत की झोली में डाल दी।

द ओवल में गुरुवार को इंग्लैंड ने बॉलिंग

चुनी। पहली पारी में भारत ने 224 और इंग्लैंड ने 247 रन बनाए। 23 रन से पिछड़ने के बाद भारत ने दूसरी पारी में 396 रन बना दिए। इंग्लैंड को 374 रन का टारगेट मिला। टीम ने 3 विकेट के नुकसान पर 300 रन बना दिए थे। तभी हैरी ब्रुक सेंचुरी लगाकर आउट हो गए। यहां से भारत ने 354 तक इंग्लैंड के 8 विकेट गिरा दिए। गस एटकिंसन और जोश टंग ने आखिर में टीम को जीत दिलाने की कोशिश की, लेकिन सिराज ने आखिरी विकेट लेकर भारत को करीबी जीत दिला दी। इंजर्ड क्रिस वोक्स भी लेफ्ट हैंड से बैटिंग करने उतरे, लेकिन टीम को जीत नहीं दिला सके।

झारखंड के पूर्व सीएम शिबू सोरेन का निधन

राष्ट्रपति-पीएम ने दी श्रद्धांजलि

नईदिल्ली (एजेंसी)। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन का पार्थिव शरीर दिल्ली से रांची लाया जा रहा है। आज मंगलवार को उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा। इसमें कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष खड़गे और राहुल गांधी शामिल होंगे। राष्ट्रपति और पीएम मोदी ने गंगाराम अस्पताल पहुंचकर शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि दी। कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे, मीसा भारती, मनोज झा और आरजेडी के कई नेताओं ने भी अस्पताल में परिवार से मुलाकात की। दिशोम गुरुजी के नाम से प्रसिद्ध सोरेन ने सोमवार सुबह दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में अंतिम सांस ली। वे 81 साल के थे।

झारखंड में 3 दिन का राजकीय शोक– शिबू सोरेन के निधन पर झारखंड सरकार ने 3 दिन के राजकीय शोक का ऐलान किया है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ मंगलवार, 5 अगस्त 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और संगठन महा मंत्री ने जताया शोक

भोपाल, । भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक श्री शिबू सोरेन के निधन पर शोक व्यक्त किया है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि झारखंड में जनजातीय वर्ग के अधिकारों की लड़ाई के लिए श्री शिबू सोरेन सदैव याद किए जाएंगे। उनका अवसान राजनीतिक जगत और जनजातीय वर्ग के लिए बड़ी क्षति है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने एवं परिजनों को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

पहलगाम हमले के आतंकी पाकिस्तानी थे, लोकल नहीं

6 सबूत पाकिस्तान की नेशनल डेटाबेस से मैच

नईदिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन महादेव में 28 जुलाई को मारे गए तीन आतंकी लोकल नहीं, पाकिस्तानी थे। यह जानकारी सुरक्षा एजेंसी के अधिकारी ने सबूतों के आधार पर मीडिया को दी है। अधिकारी ने बताया कि आतंकियों और एनकाउंटर साइट से मिले 6 सबूत से स्पष्ट हुआ है कि वे पाकिस्तान से थे। एनकाउंटर साइट से सुरक्षाबलों को आतंकियों के पास से पाकिस्तानी वोटर

आईडी समेत अन्य सबूत मिले थे। सुरक्षा एजेंसी ने इन सबूतों को पाकिस्तान की नेशनल डेटाबेस एंड रजिस्ट्रेशन अथॉरिटी से मैच किया। आतंकियों के वोटर आईडी, बायोमेट्रिक रिकॉर्ड पाकिस्तान सरकार की ओर से जारी डिटेल्स से मैच हुए। इनमें सैटेलाइट फोन और जीपीएस डेटा भी शामिल हैं। अधिकारी ने कहा- ये सबूत आतंकवादियों की पाकिस्तानी नागरिकता साबित करते हैं।

संसद में विपक्ष का बिहार एसआईआर पर हंगामा

शिबू सोरेन के सम्मान में राज्यसभा में श्रद्धांजलि

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के मानसून सत्र का सोमवार को 11वां दिन थौ। दोनों सदनों में सुबह 11 बजे से कार्यवाही शुरू हुई। लोकसभा में कार्यवाही शुरू होते ही विपक्ष ने बिहार में वोटर्स लिस्ट रिवीजन (एसआईआर) के मुद्दे पर चर्चा की मांग को लेकर हंगामा शुरू कर दिया। इसके बाद स्पीकर ने पहले 2 बजे तक और फिर आज 11 बजे तक के लिए कार्यवाही स्थगित कर दी।

लोकसभा में सोमवार केंद्रीय युवा मामले और

खेल मंत्री मनसुख मंडाविया आज लोकसभा में नेशनल स्पोर्ट्स गवर्नेंस बिल, 2025 और नेशनल एंटी-डोपिंग एक्ट (अमेंडमेंट) बिल, 2025 पेश करने वाले हैं। दोनों बिलों पर एक साथ चर्चा की जाएगी। नेशनल स्पोर्ट्स गवर्नेंस बिल का मकसद खेल संगठनों के कामकाज में पारदर्शिता बढ़ाना है।

वहीं, राज्यसभा में कार्यवाही शुरू होने के बाद सिटिंग सांसद शिबू सोरेन के निधन पर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

सांसदों ने उनके सम्मान में मौन रखा। इसके बाद सभापति हरिवंश नारायण सिंह ने राज्यसभा की कार्यवाही मंगलवार सुबह 11 बजे तक के लिए सस्पेंड कर दिया।

भारत की पहली एआई आंगनबाड़ी यहां खुली

सुविधाएं ऐसी कि प्राइवेट स्कूलों से टक्कर, डबल हुए बच्चे

नागपुर (एजेंसी)। भारत के ग्रामीण इलाकों में भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की एंट्री हो चुकी है। बचपन से ही बच्चे एआई का इस्तेमाल और महत्व समझें, इसके लिए एआई की एंट्री आंगनबाड़ी के जरिए हुई है। महाराष्ट्र के नागपुर जिले की हिंगना तहसील के वडधामना गांव में एआई पावर्ड आंगनबाड़ी केंद्र की शुरुआत की गई है। यह नागपूर से करीब 18 किलोमीटर दूर है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इस आंगनबाड़ी केंद्र का उद्घाटन किया था। इसमें ऐसी-ऐसी सुविधाएं हैं जो प्राइवेट स्कूलों भी टक्कर दे सकती हैं।

● **आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को ट्रेनिंग मिली-** वडधामना गांव की इस आंगनबाड़ी में वाईफाई और सीसीटीवी कैमरा भी लगे हैं। यहां पर लगे डिवाइसेज की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए कैमरा लगे हैं और वाईफाई इसलिए लगा है, ताकि डिवाइस इंटरनेट से कनेक्टेड रहें। आंगनबाड़ी में काम रहे कार्यकर्ताओं को खास तरह की ट्रेनिंग दी गई है, ताकि वे स्मार्ट डिवाइस और एआई टूल्स का इस्तेमाल कर सकें।

एआई आंगनबाड़ी में ये सुविधाएं

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, इस एआई आंगनबाड़ी को नागपुर जिला परिषद की 'मिशन बाल भरारी' पहल के तहत शुरू किया गया है। यहां के बच्चे पहले बाकी आंगनबाड़ियों की तरह ही स्लेट और चॉक से पढ़ा करते थे, लेकिन अब डिजिटल क्लासरूम आ चुका है। यहां पर वर्चुअल रियलिटी हेडसेट, एआई से लैस स्मार्टबोर्ड, टैबलेट और इंटरैक्टिव डिवाइस से बच्चे पढ़ेंगे, उनकी क्रिएटिविटी भी बढ़ेगी।

बच्चों की हेल्थ भी ट्रैक करेगा एआई

यहां एआई और स्मार्ट डिवाइसेज की मदद से केवल पढ़ाई ही नहीं हो रही, बल्कि बच्चों के पोषण और विकास को भी मॉनिटर किया जा रहा है। सरकार के 'पोषण ट्रैकर' प्लेटफॉर्म को जोड़ा गया है, इससे बच्चों के खाने और फिजिकल हेल्थ का रियल टाइम डेटा मिल सकेगा। नतीजतन, बच्चों का समग्र विकास सुनिश्चित होगा। यहां पर शिक्षा और स्वास्थ्य, दोनों के लिए एआई मददगार होगा।

मुस्कान संगीत समूह ने मनाई किशोर कुमार जयंती

भोपाल। मध्यप्रदेश की धरती पर जन्मे प्रसिद्ध गायक और अभिनेता स्व. किशोर कुमार की 95 वीं जयंती पर शासकीय सरदार वल्लभ भाई पटेल पॉलिटेक्निक कॉलेज के सभागार में संगीत सभा का आयोजन किया गया। बाबू समझो इशारे शीर्षक से हुए इस कार्यक्रम में अनेक गायकों ने किशार कुमार के अंदाज में गीत पेश किए। प्रख्यात गायक और अभिनेता स्व. किशोर कुमार के भारतीय सिनेमा में योगदान के संबंध में लेखक अशोक मनवानी ने जानकारी दी। संगीत समूह की ओर से किरण श्रीवास्तव एवं कार्यक्रम संयोजक मोहन बेलानी ने कार्यक्रम की मुख्य अतिथि पार्षत बबिता डोंगरें, विशेष अतिथि रामकथा प्रस्तुत करने वाली नर्मदा मैया की बेटी मेकलसुता श्रीजी, किरण वाधवानी, गायिका प्रिया ज्ञानचंदानी और वरिष्ठ समाजसेवी जेडी गोलानी का

स्वागत किया। कार्यक्रम में मुरली बलवानी के कहानी संग्रह इच्छाएं का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम में जो गीत प्रस्तुत किए गए उनमें मेरा जीवन कोरा कागज, ऐसे न मुझे तुम देखो, मेरे नैना सावन भादो, छूकर मेरे मन को, रिमझीम गिरे सावन, तुम संग प्रीत लगाई, तेरे चेहरे से नजर नहीं हटती, ये रातें ये मौसम नदी का किनारा, इक रास्ता है जिंदगी, देखा एक ख्वा,ब तो, दिल क्या करे जब किसी से किसी को प्यार हो जाए, शामिल हैं। मोहन बेलानी ने कार्यक्रम का टाइटल सांग बाबू समझो इशारे की जोरदार प्रस्तुति दी। जिन गायक गायिकाओं ने समां बांधा, उनमें भविष्या, शालिनी, मनीषा, संतोष तिवारी, केआर श्रीवास्तव, अनुपमा गुप्ता, रमेश चंदानी, अतीक भाई, ललिता, हेमन्त मौर्य, सुरेश तनवानी, परसराम नाथानी, शरद सोनी, शांता थारवानी, विवेक नगुरकर,सुरंगमा सक्सेना, परम मनवानी, शक्ति खरे, योगेन्द्र श्रीवास्तव आदि शामिल हैं।

उप्र में 45 जिलों में बारिश-बाढ़

प्रयागराज-काशी में घर डूबे

● **कानपुर में सड़कें तालाब बनीं, 24 घंटे में औसत से 405 प्रतिशत ज्यादा बरसात**

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी में लगातार 3 दिन से हो रही बारिश से नदियां उफान पर हैं। सोमवार सुबह से 45 जिलों में बारिश हो रही हैं। लखनऊ समेत 22 जिलों में स्कूलों में छुट्टी कर दी गई। प्रदेश में 24 घंटे में बारिश से जुड़े हादसों में 12 लोगों की मौत हुई है। यूपी में 24 घंटे में 73 जिलों में औसतन 36.8 मिमी बारिश दर्ज की गई। ये मौसम विभाग के अनुमान 7.3 मिमी से 405 प्रतिशत अधिक है।

प्रयागराज, वाराणसी समेत 17 जिलों के 402 गांव बाढ़ की चपेट में हैं। लखनऊ में लगातार 50 घंटे से बारिश हो रही है। पॉश कॉलोनियों में सीवर का पानी घुस गया है। सामान तैरता हुआ नजर आया। वाराणसी में गंगा का जलस्तर आधा सेमी हर घंटे बढ़ रहा है। खतरे के निशान से 79 सेमी ऊपर गंगा बह रही है। सोमवार दोपहर 12 बजे गंगा का जलस्तर 72.05 मीटर रिकॉर्ड किया गया।

● **44 जिलों में अलर्ट, योगी ने बनाई स्पेशल टीम-** मौसम विभाग ने आज 44 जिलों में बारिश का अलर्ट जारी किया है। इनमें 4 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट है। सीएम योगी ने बाढ़ से राहत-बचाव के लिए मंत्रियों की स्पेशल टीम-11 बनाई है। ये मंत्री बाढ़ प्रभावित इलाकों का दौरा कर रहे हैं। प्रदेश में अब तक 343 मकान बारिश की वजह से ढह गए।

● **बदायूं में गड्ढे में भरा बारिश का पानी, 2 बच्चों की मौत-** बदायूं में गड्ढे में भरे बारिश के पानी में डूबने से 2 बच्चों की मौत हो गई। ग्रामीणों ने किसी तरह एक बच्चे को बाहर निकाल लिया। तीनों एक साथ नहाने गए थे। तभी डूबने लगे। मृतकों की पहचान भुवनेश्वर (9), नवनीत (14) के रूप में हुई है।

टीचर ने 4 महीने तक नाबालिग से किया रेप

● **रोटी बनाने के बहाने घर ले जाकर करता रहा दुष्कर्म, डेढ़ महीने से फरार, लोगों ने दिया अल्टीमेटम**

जालोर (एजेंसी)। जालोर जिले के बागरा थाना इलाके के एक गांव में सरकारी टीचर पड़ोसी नाबालिग लड़की से 4 महीने से रेप कर रहा था। आरोपी टीचर रोटी बनाने के बहाने घर ले जाकर पीड़िता से दुष्कर्म करता। विरोध करने पर डराता-धमकाता। इस कारण डरते हुए पीड़िता किसी को कुछ बता भी नहीं पाई। इधर मामले को लेकर लोगों का गुस्सा फूट पड़ा। लोगों ने आरोपी की 24 घंटे में गिरफ्तारी की मांग की है। साथ ही चेतावनी दी है कि आरोपी की गिरफ्तारी नहीं हुई तो मंगलवार से कलेक्ट्रेट के सामने 12 गांवों के लोग अनशन पर बैठेंगे।

मनोज पटेल की डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'परिवर्तन' को मिला प्रथम पुरस्कार

भोपाल। राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान के 6वें राष्ट्रीय फिल्म फेस्टीवल में जीता पुरस्कार, माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय में प्रोड्यूसर हैं पटेल, सिनेमा में बदले गाँव की कहानी पर केंद्रित है डॉक्यूमेंट्री। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के प्रोड्यूसर डॉ. मनोज पटेल की डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'परिवर्तन = गाँव की कहानी, सिनेमा की जुबानी' को राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान (एनआईआरडीपीआर) द्वारा आयोजित 6वें राष्ट्रीय फिल्म फेस्टीवल में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में आयोजित इस समारोह में देशभर के प्रतिभागियों ने अपनी फिल्में प्रस्तुत कीं, जो ग्रामीण विकास से जुड़ी कहानी कहती हैं। यह फिल्म 'समाज' थीम में पुरस्कृत हुई है। इस वर्ष के फेस्टिवल का मुख्य विषय 'पारिवारिक जीवन, समाज और आर्थिक

व्यवस्था' था। डॉ. पटेल ने अपनी फिल्म 'परिवर्तन' में गाँव में आए सामाजिक और आर्थिक बदलावों के साथ-साथ भारतीय सिनेमा में गाँव की प्रस्तुतियों में आए बदलावों को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से दिखाया है।

फिल्म 'परिवर्तन' का निर्देशन एवं संपादन डॉ. मनोज पटेल ने स्वयं किया है, वहीं इसकी पटकथा डॉ. केशव पटेल ने लिखी है। डॉक्यूमेंट्री को संदीप शर्मा ने अपनी आवाज दी है। निर्देशक डॉ. मनोज पटेल का कहना है कि फिल्म को मिले इस पुरस्कार ने ग्रामीण विकास और सिनेमा के क्षेत्र में काम करने वाले सभी कलाकारों और तकनीशियनों को नई प्रेरणा दी है। अन्य लोग भी अब ग्रामीण विकास के मुद्दों पर फिल्म बनाने के लिए आगे आएंगे। उल्लेखनीय है कि ग्राम विकास पर उनकी फिल्म 'बाचा = द राइजिंग विलेज' और 'गो-वर' भी पुरस्कृत एवं सराहनीय हैं। इसके साथ ही उन्होंने अपना शोध कार्य भी सिनेमा पर ही पूर्ण किया है।

चुनाव से पहले नीतीश का बड़ा फैसला

बिहार में शिक्षक भर्ती में डोमिसाइल लागू

पटना (एजेंसी)। चुनाव साल में नीतीश कुमार ने एक और बड़ी घोषणा की है। इसे बिहार सरकार का मास्टर स्ट्रोक बताया जा रहा है। नीतीश सरकार ने ऐलान किया है कि शिक्षक भर्ती में डोमिसाइल लागू किया जाएगा। ये व्यवस्था टीआरई -4 से ही लागू की जाएगी। नीतीश कुमार ने सोमवार को एक्स पर लिखा- नवम्बर 2005 में सरकार बनने

के बाद से ही हम लोग शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए लगातार काम कर रहे हैं।

शिक्षा व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण हेतु बड़ी संख्या में शिक्षकों की नियुक्ति की गई है। शिक्षकों की बहाली में बिहार के निवासियों को प्राथमिकता देने हेतु शिक्षा विभाग को संबंधित नियम में आवश्यक संशोधन करने का निर्देश दिया गया है।

इंडिगो एयरलाइंस की मुंबई फ्लाइट में आई खराबी

जबलपुर (नप्र)। मुंबई से जबलपुर आई इंडिगो की फ्लाइट में सोमवार दोपहर को अचानक ही खराबी आ गई। पायलट ने इसकी जानकारी तुरंत दिल्ली मुख्यालय में दी। फ्लाइट का पिछला टायर खराब हो गया था, जिसके बाद प्लेन को रनवे से अलग किया गया और फिर नए टायर की जानकारी दी गई।

शाम को दिल्ली से जबलपुर आने वाली फ्लाइट से नया टायर मंगवाया गया, जिसके बाद पुराने टायर को बदलकर नया टायर लगाया जा रहा है। एयरपोर्ट डायरेक्टर ने बताया कि यह प्लेन में आने वाली रूटीन गड़बड़ी है, ना कि इमरजेंसी लेडिंग।

दोपहर 12.10 बजे पहुंची थी फ्लाइट- जानकारी के मुताबिक दोपहर करीब 12 बजकर 10 मिनट पर इंडिगो की मुंबई-जबलपुर फ्लाइट डुमना एयरपोर्ट पहुंची थी, पायलट ने पार्किंग में फ्लाइट को खड़ा किया, और उड़ान भरने से पहले चेक किया जा रहा था। उस दौरान पायलट ने देखा कि फ्लाइट के पिछले तरफ का एक चक्का खराब हो गया है।

योगी बोले- मालेगांव में जान बूझकर हिंदू नेताओं को फंसाया गया

● **सहारनपुर में कहा- कांग्रेस-सपा गरीबों के साथ नहीं, जय श्रीराम के नारे लगे**

सहारनपुर (एजेंसी)। सीएम योगी सोमवार को सहारनपुर पहुंचे। यहां 381 करोड़ की 15 विकास योजनाओं का लोकार्पण किया। साथ ही विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को प्रमाणपत्र भी बांटे। इससे पहले योगी के मंच पर पहुंचते ही जय श्रीराम के जयकारे लगे। योगी ने कहा- महाकुंभ की सफलता से विपक्ष परेशान है। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के लोगों को परेशानी हो रही थी कि सनातन धर्म का गौरव इतना ऊंचा कैसे हो रहा?

ड्रैगन की बढ़ सकती है टेंशन

ब्रह्मपुत्र पर चीन के एक के जवाब में भारत के दो बांध...

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीन अपने कब्जे वाले तिब्बत में दुनिया का सबसे बड़ा बांध बना रहा है। जवाब में भारत का भी प्लान तैयार है। भारत दो बांध बनाने की तैयारी में है। माना जा रहा है कि भारत के इस कदम से चीन भी टेंशन में जरूर आएगा, क्योंकि ब्रह्मपुत्र का ज्यादातर पानी भारत से ही मिलता है। भारत चीन की तरह बांध पर बांध नहीं बना सकता और न ही उसे ऐसा करने की कोशिश करनी चाहिए। मगर, उसे बुनियादी ढांचे, कूटनीति, लचीलापन और क्षेत्रीय गठबंधनों के माध्यम से अपने हितों की रक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए। अतीत की आपदाएं और आज बन रहा बांध हमें यह बताते हैं कि अगली आपदा आने से पहले कार्रवाई करना जरूरी है। जानिए- भारत का क्या है प्लान और क्या हैं चुनौतियां?

● **भारत का ये है प्लान, चीन को दे सकता है टेंशन-** अधिकारियों ने अरुणाचल प्रदेश में दो अहम स्टोरेज डैम बनाने का प्रस्ताव दिया है। एक यिनकियोंग में और दूसरा ऊपरी सियांग पर।

ब्रह्मपुत्र को अरुणाचल प्रदेश में सियांग कहा जाता है। दोनों बांधों की स्टोरेज क्षमता 9.2 बिलियन क्यूबिक मीटर है। इससे मानसून के दौरान अतिरिक्त पानी को स्टोर किया जा सकेगा।

कहां और किस जगह पर बन रहा है चीन का बांध

मीडिया में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार, चीन यारलुग सांग्बो नदी पर मेगा डैम प्रोजेक्ट (इस नदी को तिब्बत में ब्रह्मपुत्र कहा जाता है) बना रहा है। यह बांध ग्रेट बेंड के पास बनाया जा रहा है, जहां से यह नदी भारत में प्रवेश करने से पहले तेजी से मुड़ती है। भारत 11,300 मेगावॉट का सियांग अपर बहुउद्देश्यीय परियोजना की सर्वे रिपोर्ट पर विचार कर रहा है।

इन बातों का खतरा

भारत चीन के बांध से जिन खतरों को लेकर चिंतित है, वही खतरे उसके अपने बांधों के विरोध में भी दिखते हैं। ये खतरे हैं-कमजोर जमीन, भूकंप का खतरा और स्थानीय लोगों की रोजी-रोटी पर असर। भारत को कई मोर्चों पर काम करना होगा। उसे अपनी परियोजनाओं को तेजी से पूरा करना होगा, पड़ोसी देशों के साथ मिलकर काम करना होगा, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी बात रखनी होगी, आपदाओं से निपटने के लिए तैयार रहना होगा और दुनिया को यह बताना होगा कि चीन के बांध कितने खतरनाक हैं। भारत को यह भी याद रखना होगा कि पानी अब एक रणनीतिक हथियार है और उसे अपनी सुरक्षा के लिए हर संभव कदम उठाना होगा।

भारत में किस तरह से बनेगा बांध- भारत की बांध परियोजना में 510-मीटर की योजना है। इससे यिंकिओंग का एक बड़ा हिस्सा डूब जाएगा। रक्षा संबंधी ढांचे पर भी असर पड़ेगा। यानी, लोगों को दूसरी जगह बसाना पड़ेगा। हालांकि, सियांग के लोग इसका खुलकर विरोध कर रहे हैं।

कॉम्बिंग गश्त में पुलिस ने 1101 को चेक किया, 533 पर वैधानिक कार्रवाई की गई

इंदौर। पुलिस ने शनिवार-रविवार की दरमियानी रात कॉम्बिंग गश्त में गुंडों, बदमाशों और अवैधानिक गतिविधियों में संलिप्त रहने वाले असामाजिक तत्वों सहित 1101 बदमाशो को चेक किया। उनमे से 533 पर वैधानिक कार्रवाई की गई। शराब पीकर वाहन चलाने वाले 140 लापरवाह वाहन चालकों के विरुद्ध की गई 185 मोटर व्हीकल एक्ट की कार्रवाई। शहर में अपराध व अपराधियों पर नियंत्रण के लिए तथा आगामी त्योहारों को ध्यान में रखते हुए शहर के चारों जोन व यातायात के डीसीपी के नेतृत्व में, 2 व 3 अगस्त की दरमियानी रात से सुबह तक नगरीय इंदौर के संबंधित क्षेत्र के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों व थाना प्रभारियों के साथ पुलिस फोर्स ने सभी थाना क्षेत्रों में गुंडे बदमाशों असामाजिक तत्व पर निगरानी एवं धरपकड़ के लिए सरप्राइज चैकिंग व कॉम्बिंग गश्त की।

इस दौरान पुलिस ने गुंडे, बदमाशों व असामाजिक तत्वों की निगरानी करते हुए 1101 बदमाशों को चेक करते हुए, 533 पर उचित वैधानिक कार्यवाही की। इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकरणों में वांछित 277 से ज्यादा वारंटों को तामील कराया गया। इसमें लंबे समय से फरार 63 स्थाई, 81 गिरफ्तारी और 133 जमानती वारंट के साथ ही 142 समंस भी तामील किए गए। शराब पीकर वाहन चलाने वाले लापरवाह वाहन चालकों पर कार्रवाई करते हुए 140 वाहन चालकों के विरुद्ध 185 मोटर व्हीकल एक्ट की कार्यवाही की गई। ये कार्यवाही निरंतर जारी रहेगी ताकि शराब पीकर वाहन चलाते हुए लोगों की जान जोखिम में डालने वाले ऐसे लापरवाह वाहन चालकों की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाया जा सके। वहीं यातायात नियमों का उल्लंघन कर लापरवाही पूर्वक गाड़ी चलाने वाले 4 लोगों के विरुद्ध की गई मोटर व्हीकल एक्ट की कार्रवाई की गई। अवैध रूप से सार्वजनिक स्थान पर शराब का सेवन करने वालों के विरुद्ध 15 तथा अवैध मादक पदार्थ का सेवन करने वाले के विरुद्ध 1 प्रकरण पंजीबद्ध किया गया। आदतन बदमाशों के विरुद्ध कार्यवाही करते हुए कुल 96 बदमाशों और असामाजिक तत्वों पर की गई प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की गई। इस दौरान क्षेत्र के अपराधिक प्रवृत्ति के 209-गुंडे, बदमाशों, 49 नकबजनों, 25 लुटेरों, 65 चाकूबाजों, 60 हिस्ट्री शीटर बदमाशों, 121 निगरानीशुदा बदमाश और 33 जिलाबदर व रासुका के बदमाशों तथा महिला संबंधी अपराधों के 4 एवं वाहनों में आगजनी व तोडफ़ोड़ में संलिप्त 2 अपराधियों सहित 568 से ज्यादा बदमाशों को चेक कर कार्रवाई की गई और आगे कोई अपराध न करने की हिदायत भी दी गई।

लव जिहाद की दूसरी घटना के बाद खाचरौद नगर अनिश्चितकालीन बंद

खाचरोद (उज्जैन)। (ऋतुराज बुड़ावनवाला) यहां एक सप्ताह में लगातार दूसरी बार लव जिहाद की घटना घटी। इससे स्थानीय लोगों में भारी आक्रोश है। लोगों ने इसके विरोध में नगर बंद करके अपना आक्रोश जताया। दो दिन पहले एक हिंदू लड़की वर्ग विशेष के लड़के के साथ भाग गई थी। रविवार की रात फिर एक लड़की के भागने की घटना सामने आई / यहाँ बीती रात लव जिहाद की एक और घटना हो गई। दर्जी समाज की 20 साल की युवती बागपुरा निवासी वर्ग विशेष के युवक सेजान पिता अफसरउद्दीन के साथ रात को 3 बजे कार में बैठकर चली गई। लड़की स्नातक की छात्रा है और लड़का आटा चक्की चलाता है। पुलिस थाने में दर्ज कराई गई एफआईआर के अनुसार वह अपने साथ 1.50 हजार रुपया नगद तथा सोने की चेन लेकर गई। खाचरौद और आसपास ग्रामीण क्षेत्रों में दिन पर दिन बढ़ती जा रही लव जिहाद की घटना को लेकर सर्व हिन्दू समाज उत्तेजित हैं। इसी के चलते सर्व हिन्दू समाज ने भारी संख्या में नगर में वाहन रैली निकालते हुए खाचरौद नगर अनिश्चितकालीन बंद का आह्वान किया और नगर बंद हो गया। बंद को सर्राफा, कपड़ा, रेडीमेड, किराना,कटलरी, खाद बीज, होटल,मिष्ठान भंडार, हार फूल, सहित सभी एसोसिएशनों ने समर्थन दिया। उल्लेखनीय है कि नजदीकी ग्राम चापानेर की धाकड़ समाज की 21 वर्षीय युवती गुरुवार को लापता हो गई थी। वह गाँव ड़ोडिया के दो बच्चों के पिता 24 वर्षीय सादिक के साथ कहीं चली गई। युवती ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो पोस्ट करके कहा कि वो किसी के बहकावे में घर से नहीं भागी, बल्कि अपनी मर्जी से सादिक के साथ आई है। वह सादिक से बहुत प्यार करती है और उससे ही शादी करेगी। उसने पुलिस प्रशासन अपील की है कि सादिक के परिवार को कोई हानि नहीं होना चाहिए।

गुंडों की योग पाठशाला से अपराधों पर रोक, मन की जागृति का प्रयास

इंदौर। गुंडों को अपराधिक घटनाओं से बाहर लाकर सामाजिक जीवन से जोड़ने में पुलिस लगी है। इसके लिए समझाइश, अपराध नहीं करने की शपथ दिलाने जैसे कार्य किए गए हैं। अब उनकी मनःस्थिति बदलने योग पाठशाला लगाई गई। यह पाठशाला बाणगंगा थाना परिसर में लगाई गई। इसमें 47 गुंडे एवं निगरानी बदमाशों को परिवार सहित बुलवाया गया था। सहायक पुलिस आयुक्त रुबीना मिजवानी ने बताया कि थाने के आदतन अपराधियों को स्वयं एडीसीपी द्वारा प्रत्येक आरोपी से उनके जीवन साधन, संगत, ठिकानों तथा हर अपराधी से अपराध में सक्रिय अन्य व्यक्तियों की जानकारियां ली गई। सकारात्मक परिवर्तन के लिए परिवारों द्वारा पुलिस को सहयोग कर थाने पर हाजरी लगाने की व्यवस्था की गई जिससे पुलिस की नजरों में रहें। पाठशाला में सभी से अपराध को रोकने के तरीके को बताया गया। पिछली पाठशाला में नशे से कैसे दूर रहा जाए, क्रोध पर कैसे नियंत्रण किया जाए यह बताया गया। विभिन्न योगासन कराए और इसे जीवन में आत्मसात करने करने प्रोत्साहित किया। सभी को फिर अपराध से दूरी बनाने शपथ कराई गई। साथ ही सभी को सख्ती से हिदायत भी दी गई की उनके द्वारा किया गया एक और अपराध स्वीकार्य नहीं होगा। इस दौरान सभी का रिकॉर्ड अपडेट किया गया। आगामी त्योहारों को ध्यान में रखकर सभी पर प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की गई।

ऑनलाइन डिलीवरी कंपनी से कारोबार बढ़ा

इंदौर। पिता का ट्रांसपोर्ट का कारोबार था। बचपन में पिता के साथ ट्रांसपोर्ट पर जाने लगा। यहीं से प्रेरणा जागी की कारोबार को सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर उतारा जाए। बचपन में पिता के साथ काम के साथ उन्होंने निजी कॉलेज से एमबीए किया। कई कंपनियों से जॉब ऑफर आए, लेकिन सभी को इनकार कर खुद का कारोबार शुरू किया। पिता के साथ काम करते समय उन्होंने देखा कि वाहन चालक किश्त जमा नहीं कर पाते थे। कई दिनों से उन्हें डिलीवरी का सामान नहीं मिलता था। यहीं से वे प्रेरित हुए थे। फिर क्या था, आनलाइन सर्चिंग कर 'लोड-मी' नाम से आनलाइन प्लेटफार्म शुरू किया। इंदौर के समीप बेटमा में रहने वाले फर्म के मालिक सौरभ मंत्री को प्रारंभिक दौर में छोटे कारोबारियों को जोड़ने में दिक्कत आई। लेकिन, समझाइश और बेहतर प्रचार-प्रसार ने उनके मंसूबे को सफल कर दिया। उनकी कंपनी से ओला, उबर चलाने वाले जुड़ गई। ओला, उबर से वे देशभर में आनलाइन डिलीवरी कर रहे हैं। कारोबार से उनका सालाना 6 करोड़ का टर्न ओवर है। फ्लिपकार्ट, अमेजन, डीमार्ट में भी वे सेवाएं देने लगे। आनलाइन ही आर्डर लेकर समयसीमा में माल डिलीवर करते हैं। कम समय, अधिक विश्वसनीयता और समय पर माल डिलीवरी करने से उनकी पहचान बनी।

गरम कोल्ड ड्रिंक्स पर डिलीवरी बाय की पिटाई

इंदौर। स्विगी कंपनी के डिलीवरी बॉय ने गरम कोल्ड ड्रिंक्स की डिलीवरी कर दी। इससे डिलीवरी लेने वाले नाराज हो गए और कर्मचारी से मारपीट की। यही नहीं, कर्मचारी की बाइक में भी तोड़फोड़ कर दी। परदेशीपुरा पुलिस के मुताबिक घटना सब्जी मंडी रोड नंबर 11 की है। फरियादी कुलदीप पिता बनेसिंह निवासी राम नगर की शिकायत पर आदिल गौरी, लव बैंडवाल, कैश गौहर, रुपम गौहर व मनीष के खिलाफ केस दर्ज किया गया। फरियादी ने बताया कि मैं स्विगी में डिलीवरी बॉय हूं। स्विगी में गर्म कोल्ड्रिंक्स देने की बात को लेकर आरोपी गालियां देने लगे। इसके बाद मेरे और मेरे साथियों किशोर, उदय व आदित्य के साथ मारपीट कर चोट पहुंचाई। आरोपियों ने बाइक क्रमांक एमपी-09 डीएल-5997 को नुकसान पहुंचाया। दूसरे पक्ष से पुलिस ने रूपम गौहर ने बताया कि मैंने अपने मोबाइल से कोल्ड ड्रिंक्स आर्डर किया। मोटरसाइकल पर 2 लड़के आए। मैंने उनके कहने पर 160 रुपए का आनलाइन भुगतान कर दिया। भुगतान के दौरान यूपीआई पर किशोर देवड़ा का नाम आ रहा था। उसके बाद कोल्ड ड्रिंक्स पेप्सी और थम्प्सअप की 2 बोतल गर्म थी। मैंने बोला कि ये बाटल तो गर्म है तो ये दोनों युवकों ने मारपीट की।

दो बदमाशों को जिला बदर किया गया

इंदौर। लगातार आपराधिक घटनाओं में लिप्त दो बदमाशों को पुलिस ने जिला बदर किया है। अन्नपूर्णा पुलिस ने शातिर बदमाश विशाल पिता रमेश करोसिया निवासी बाबू घनश्यामदास नगर तथा मोरा उर्फ मोरध्वज पिता नेपाल सिंह ठाकुर निवासी झुग्गी झोपड़ी प्रोफेसर कॉलोनी थाना भंवरकुआं को 6 माह की अवधि के लिए जिले से बाहर रहने के आदेश दिए हैं।

गांजे के साथ दो धराए - बाइक सवार दो तस्करों को राजेन्द्र नगर पुलिस ने चोइथराम मंडी के समीप चेकिंग कर रही थी। तभी बाइक क्रमांक एमपी 09 वीयू 2071 से दो किलो गांजा लेकर जा रहे बबलू पिता संतोष निवासी अमर पैलेस और दिनेश पिता शंकर लाल निवासी गणगौर नगर को पकड़ा।

जमीन की फर्जी डायरियों से बदमाशों की जमानत देने वाले गिरोह उजागर

सलोनी अरोरा मामले के खुलासे के बाद गिरोह के खिलाफ मुहिम

इंदौर। क्राइम ब्रांच ने फर्जी जमानतदारों के संगठित गिरोह को पकड़ा। इस गिरोह का 38वां सदस्य पुलिस के हाथ लगा। इस गिरोह को चाचा और उसका भतीजा चलाते हैं जिसके 50 से अधिक सदस्य हैं। ये कई सालों से फर्जी जमानत दे रहे हैं। बताते हैं कि इन लोगों ने जमीन की 2000 से अधिक फर्जी डायरियां (ऋण पुस्तिकाएं) छपवा रखी है। इन्हीं डायरियों पर ये गिरोह बदमाशों की जमानत देता है। फर्जी जमानत से कई बदमाश जमानत लेकर फरार भी हो चुके। जबकि, गिरोह के कई सदस्य भी फरार है, जिनकी पुलिस को तलाश है। कल्पेश याग्निक आत्महत्या केस में आरोपी सलोनी अरोरा की फर्जी जमानत का खुलासा होने के बाद केदार डाबी और सलोनी अरोरा को क्राइम ब्रांच ने गिरफ्तार किया है।

क्राइम ब्रांच ने कुछ साल पहले इस गिरोह का पर्दाफाश किया था। गिरोह का सरगना प्रकाश और उसका भतीजा करण है। जबकि, गिरोह में इंदौर और आस-पास के शहरों के 50 से अधिक सदस्य हैं, जो फर्जी जमानत देते है। इस गिरोह के बारे में पता चला है कि उन्होंने 2 हजार से अधिक फर्जी जमीन की डायरियां छपवा रखी है। ये डायरिया इन लोगों ने सदर बाजार और सिख मोहल्ला की दो प्रिंटिंग प्रेस पर छपवाई थी।

एक डायरी पर चार-पांच बदमाशों की जमानत करवाने के बाद ये लोग उसी जमीन का खसरा नंबर और अन्य जानकारी डालकर नई डायरी बना लेते हैं और फिर उससे जमानत देते हैं। ये गिरोह लगभग 10 साल से इंदौर, उज्जैन, देवास, खरगोन, महू सहित

कई अदालतों में फर्जी जमानत दे चुके हैं। हर व्यक्ति दस से बीस बदमाशों की फर्जी जमानत दे चुका है। कुछ पकड़े गए सदस्य को खुद भी फर्जी जमानत पर छूट चुके हैं। एक बार फिर पिछले दिनों सलोनी अरोरा केस में फर्जी जमानत का मामला समाने आया था। इसके बाद क्राइम ब्रांच ने सालों से फरार गिरोह के अन्य सदस्यों की तलाश शुरू की है। इसके लिए एसआईटी बनाई गई है। इसके बाद क्राइम ब्रांच ने गिरोह के दांगी, अकरम उर्फ बिजली निवासी खजराना, रमेश कलौता निवासी हातोद और क्राइम ब्रांच ने सुभाष पाल निवासी बाणगंगा को गिरफ्तार किया। उसके खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज था। वह कई सालों से फरार चल रहा था। उसने भी कई बदमाशों की फर्जी जमानत दी है। डीसीपी क्राइम राजेश कुमार त्रिपाठी ने बताया कि गिरोह के अभी भी कई सदस्य फरार चल रहे है।

उनको चिन्हित किया गया है, जबकि इन आरोपियों ने दस से अधिक फर्जी जमीन की डायरियां बरामद हुई है। अब पुलिस कोर्ट से उनके द्वारा दी गई फर्जी जमानत की जानकारी जुटा रही है, ताकि उन आरोपियों की भी जमानत निरस्त करवाई जा सके। अब तक पकड़े गए चार लोगों ने बीस से अधिक आरोपियों की फर्जी जमानत देने की बात सामने आई हैं। जल्द ही पुलिस गिरोह के अन्य सदस्यों को भी गिरफ्तार कर लेगी।

खजराना पुलिस ने बदल दिए बदमाश सुरीला के सुर, अमजद गिड़गिड़ाया

दोनों बदमाश, महिला मित्र एक चार पहिया गाड़ी में पकड़ाए

इंदौर। शहर मे गुंडों, बदमाशों एवं अवैध शराब की तस्करी करने वाले अपराधियों की धरपकड़ कर उनके विरुद्ध सख्त कार्यवाही के निर्देश दिए गए हैं। खजराना थाना प्रभारी मनोज सिंह सेंधव द्वारा टीम गठित कर गुंडों, बदमाशों एवं अवैध शराब की तस्करी करने वाले अपराधियों के संबंध मे गोपनीय रुप से लगातार असूचना संकलन कर कार्यवाही की जा रही हैं। इस क्रम में खजराना की टीम ने संदेहियो की तलाश एवं तलाश क्षेत्र के अलग-अलग स्थानों पर की। वाघेला गार्डन के आगे रोड पर 1 संदिग्ध कार दिखी, जिसमें 2 लड़के एवं एक लड़की दिखी जो पुलिस टीम को देखकर घबराकर भागने का प्रयास करने लगे। इस दौरान पुलिस ने उन्हें हिरासत में लिया। पूछने पर उन्होंने अपने नाम भय्यू उर्फ सुरीला उर्फ एहसान खान (34 साल) निवासी तंजीम नगर खजराना बताया। आरोपी 12वीं तक पढ़ा है और ड्रायवरी का कार्य करता है। दूसरा आरोपी अमजद उर्फ बकरा पटेल (28 साल) निवासी राजीव नगर बडला खजराना है, जो 5वीं तक पढ़ा है और फेब्रिकेशन का काम करता हे। तीसरी आरोपी ज्योति उर्फ आलिया (28 साल निवासी विकास नगर गोविंदपुरा भोपाल आउट हाल मुकाम जम जम खजराना है। आरोपी 12वीं तक पढ़ी है और कोई काम नहीं करती।

जप्तशुदा मशरूका - इन लोगों से 400 सफेद देसी मदिरा क्वार्टर (कुल 72 लीटर) जिसकी कीमत लगभग 28000 रूपए है। सफेद रंग की बिना नंबर की बोलेरा वाहन कार जिसकी कीमत लगभग 5 लाख है। आरोपियों के कब्जे से लगभग 5,28,000 मूल्य की कार एवं अवैध देसी शराब जब्त की गई। आरोपियो ने बताया कि शराब का नशा करने का आदी है। नशे की लत पूरी करने की नियत से सस्ते दामों पर शराब खरीदकर, नशे के आदि अन्य लोगों को महंगे दामों पर शराब बेचना कबूला है।

प्रकरण में आरोपियों के कब्जे से लगभग अवैध 400 देशी क्वाटर एवं 1 कार जब्त कर आरोपी के विरुद्ध थाना खजराना में अपराध पंजीबद्ध कर, विवेचना में लिया गया। इसके आधार पर अग्रिम वैधानिक कार्यवाही की जा रही हे। आरोपी से अवैध शराब के स्त्रोत व नेटवर्क के संबंध में पुलिस द्वारा सख्ती से पूछताछ की जा रही है। संलिप्त के आधार पर अन्य साथी आरोपियों के विरुद्ध भी वैधानिक कार्यवाही की जाएगी।

राजा के भाई सचिन के प्रेम से जन्मे बच्चे की 'डीएनए' रिपोर्ट उजागर

कथित पत्नी का आरोप, मेरे साथ विश्वासघात, बेटे को नकारा

इंदौर। हनीमून पर हत्याकांड मामले में देशभर में चर्चा में आए राजा रघुवंशी का परिवार एक नई मुसीबत में फंस गया। राजा रघुवंशी के भाई सचिन रघुवंशी इस वक्त चर्चा में हैं। उनकी कथित पत्नी ने अपने डेढ़ वर्षीय बेटे की डीएनए रिपोर्ट सार्वजनिक कर दी, जिससे यह पुष्टि हुई कि बच्चा सचिन का ही है। रिपोर्ट सामने आने के बाद रघुवंशी परिवार सवालों के घेरे में आ गया। पीड़िता ने मीडिया के सामने आकर कहा कि अब जब डीएनए से साबित हो गया है कि बच्चा सचिन रघुवंशी का है, तो उनके परिवार को चुप्पी तोड़नी चाहिए। उन्होंने न सिर्फ मेरे साथ विश्वासघात किया, बल्कि मेरे बेटे को भी नकारा। अब वक्त आ गया है कि वे इस सच्चाई को स्वीकारें। महिला ने आरोप लगाया कि सचिन और उनके परिवार ने जानबूझकर उसे और उसके बच्चे को समाज से अलग-थलग करने की कोशिश की। उसने कहा कि मैंने कई बार कोर्ट का सहारा लिया,

लेकिन हर बार मेरा अपमान हुआ। अगर सचिन ने शादी को स्वीकारा होता और पूरे सम्मान के साथ साथ निभाया होता, तो आज ये स्थिति नहीं आती। पीड़िता ने यह भी दावा किया कि उसके पास सचिन के साथ शादी के वीडियो और मंदिर में हुई रस्मों के पुख्ता सबूत मौजूद हैं, जिन्हें कोर्ट में भी पेश किया गया है। भावुक होते हुए उसने कहा कि मेरा बच्चा आज अपने हक के लिए दर-दर भटक रहा है। सचिन और उसके परिवार को अपने किए पर शर्म आनी चाहिए। इस पूरे विवाद के बीच हाईकोर्ट की भूमिका अब अहम मानी जा रही है। पीड़िता को उम्मीद है कि अदालत उसे न्याय दिलाएगी और सचिन रघुवंशी को उनके कृत्य की सजा मिलेगी।

10 में किराए से हेलमेट का स्टॉल लगाया, पुलिस कार्रवाई से पक्ष में

द्वारकापुरी पुलिस ने उसके खिलाफ बाउंड ओवर कार्रवाई की

इंदौर। रणजीत हनुमान मंदिर के पास सोशल मीडिया ब्लॉगर रोहित मोदी की रू. 10 में हेलमेट किराए पर देने की अनोखी पहल विवादों में आ गई। रविवार को रोहित हाथ में पोस्टर लेकर लोगों को हेलमेट किराए पर देता नजर आया। जब पुलिस कार्रवाई हुई तो उसने अपनी गलती स्वीकार की और कहा कि वह अब 15 दिन तक हेलमेट लगाने को लेकर न सिर्फ प्रचार-प्रसार करेगा, बल्कि रील भी चलाएगा। पहले उसने किराए से हेलमेट देने की अपनी इस पूरी गतिविधि का वीडियो बनाकर अपने सोशल मीडिया पर अपलोड कर दिया। इस वीडियो को यूज़र्स ने भी जमकर वायरल किया और उस पर कमेंट किए। स्थानीय लोगों की सूचना पर द्वारकापुरी थाना प्रभारी सुशील पटेल मौके पर पहुंचे और रोहित को थाने ले जाकर समझाइश दी। इसके बाद उसके खिलाफ कलेक्टर आदेश के उल्लंघन और सार्वजनिक स्थल पर बिना अनुमति गतिविधि चलाने को लेकर बाउंड ओवर की कार्रवाई की गई। यह

पहला मामला नहीं है। इससे पहले तेजाजी नगर और पालदा क्षेत्र में भी इसी तरह की घटनाएं सामने आ चुकी हैं, जिनका वीडियो वायरल होने के बावजूद कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। अब लोग सवाल उठा रहे हैं कि क्या पुलिस और प्रशासन सोशल मीडिया पर वीडियो डालने वालों के खिलाफ ही सक्रिय होता है? आम जनता और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इस मामले में निष्पक्ष और समान रूप से सख्त कार्रवाई की मांग की है।

अब खुद देने लगा समझाइश- कलेक्टर द्वारा पेट्रोल पंप पर हेलमेट अनिवार्य करने को लेकर सोशल मीडिया पर विरोध होने लगा। कलेक्टर के आदेश पर नकारात्मकता जताते हुए इस युवक ने विरोध में रील बना दी।

सभी वाहनों में हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट लगाने के निर्देश दिए

पूरे प्रदेश में 3 महीने में काम पूरा करने के सख्त निर्देश

इंदौर। प्रदेश के पंजीकृत वाहनों में हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट (एचएसआरपी) अनिवार्य रूप से लगाए जाने के लिए विशेष अभियान चलाया जाएगा। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकारों को इस आशय के आदेश दिए है। प्रदेश में एक अप्रैल 2019 के बाद पंजीकृत वाहनों में एचएसआरपी नंबर प्लेट लगाई जा रही है। सुप्रीम कोर्ट ने कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए है। केंद्र सरकार के सड़क परिवहन एवं राज्यमार्ग मंत्रालय की अधिसूचना 4 दिसम्बर 2018 के अनुसार एक अप्रैल 2019 के बाद सभी पंजीकृत वाहनों में एचएसआरपी प्लेट लगाई जाना अनिवार्य है। वाहन

पोर्टल में डाटा अपडेट करने के काम में तेजी लाई जा रही है। परिवहन विभाग ने परिवहन आयुक्त को इस कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए है। प्रदेश भर में दल गठित कर संबंधित वाहन डीलर के माध्यम से एनआईसी वाहन पोर्टल पर अद्यतन स्थिति दर्ज की जाएगी। इसके लिए एक विशेष अभियान चलाया जाएगा। परिवहन विभाग ने एचएसआरपी प्लेट बदलने का कार्य आगामी 3 माह में पूरा करने के निर्देश जिला परिवहन अधिकारियों को दिए है। निर्देश में कहा गया है कि अपने जिले के समस्त डीलरों से निरंतर सम्पर्क में रहते हुए वाहनों में एचएसआरपी नम्बर प्लेट लगाई जाए। जिन वाहनों में एचएसआरपी नहीं है उन्हें पॉल्यूशन अंडर कंट्रोल सेंटर द्वारा प्रमाण पत्र, डुप्लीकेट पंजीकरण प्रमाण पत्र (आरसी) जारी करने, पंजीकरण प्रमाण पत्र में पता बदलना, शुल्क देकर आरसी विवरण देखना संभव नहीं हो सकेगा। साथ ही वाहनों के स्वामित्व बदलने, हाइपोथिकेशन जोड़ना और हटाना, नवीन-डुप्लीकेट परमिट जारी करना, परमिट का हस्तांतरण और नवीनीकरण, कराधान प्राधिकार के साथ अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी करना और वाहन का पंजीयन निरस्तीकरण करना संभव नहीं हो सकेगा।

निर्देश में कहा गया है कि वाहन की स्थाई-अस्थायी अनुज्ञाएं जारी करने, डुप्लीकेट फिटनेस प्रमाण पत्र जारी करने, वाहनों का फिटनेस प्रमाण पत्र जारी करना, वाहनों के पंजीयन नवीनीकरण करने के साथ ही वाहन पोर्टल के माध्यम से दी जाने वाली सभी सुविधाएं मोटर मालिकों को नहीं मिल सकेंगी। परिवहन विभाग ने स्पष्ट किया है कि एचएसआरपी नंबर प्लेट होने से इन्फोर्समेंट के तहत लगाए गए कैमरे में दर्ज हो पायेंगी। इससे रोड सेफ्टी का भी पालन हो पाएगा। जिला परिवहन अधिकारियों को इस कार्य की नियमित मॉनिटरिंग के लिए भी कहा गया है।

संपादकीय

दिशोम गुरू का महाप्रयाण

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और सत्तारूढ़ झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक, जुझारू आदिवासी नेता शिबू सोरेन, जिन्हें आदर से लोग दिशोम गुरू यानी मार्गदर्शक कहते थे, का जाना इस देश में स्वातंत्र्योत्तर काल में सफल आदिवासी आंदोलन के एक समूचे अध्याय का समापन होना है। हालांकि सत्ता में रहने के कारण? शिबू पर भ्रष्टाचार के आरोप भी लगे और जेल में भी रहे, लेकिन झारखंड की आम जनता के बीच उनकी छवि हमेशा एक महानायक की रही। झारखंड के मुख्यमंत्री और शिबू के बेटे हेमंत सोरेन की यह मार्मिक टिप्पणी काफी कुछ कहती है कि आदरणीय दिशोम गुरुजी हम सभी को छोड़कर चले गए हैं। आज मैं शून्य हो गया हूँ। शिबू सोरेन काफी समय से बीमार थे और दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था। वहीं उन्होंने अंतिम सांस ली। झारखंड के आदिवासियों को एकजुट कर महाजनी प्रथा के खिलाफ लड़ाई को एक राजनीतिक सामाजिक न्याय के संघर्ष में बदलने में शिबू की निर्णायक भूमिका थी। उनका सारा जीवन आदिवासी समुदाय के हितों की रक्षा और संघर्ष में बीता। दरअसल शिबू झारखंड में आदिवासियों की पहचान बन गए थे। झामुमो को छोड़ दें तो देश में आदिवासियों की पार्टियां शायद ही सत्ता तक पहुंच पाई हैं। स्वयं शिबू में झारखंड के तीन बार मुख्यमंत्री और संसद के दोनों सदनों के सदस्य रहे। झारखंड के संथाल आदिवासी समुदाय में जन्मे शिबू सोरेन का बचपन संघर्ष से भरा था। उनका जन्म 1942 में पैतृक गांव रामगढ़ के नेमरा में हुआ था। आदिवासियों पर होने वाले अत्याचार और शोषण से आक्रोशित शिबू सोरेन ने पढ़ाई बीच में छोड़कर आदिवासियों को संगठित कर राज्य में महाजनी प्रथा के खिलाफ बगावत का बिगुल फूंक दिया। 1973 में उन्होंने झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन किया, जिसका उद्देश्य बिहार के जंगल और आदिवासी इलाक़ों से अलग झारखंड राज्य बनाना था। इसके लिए उन्होंने कभी कांग्रेस तो कभी भाजपा के साथ समझौते किए। लगभग तीन दशकों के संघर्ष के बाद उनका उद्देश्य साल 2000 में हासिल हुआ था, जब अलग झारखंड राज्य बना। हालांकि पहले इसका नाम आरएसएस के सुझाव पर वनांचल रखा गया था, लेकिन बाद जनता की मांग पर झारखंड कर दिया गया। शिबू सोरेन ने अपने 6 दशक के राजनीतिक जीवन में कई उतार चढ़ाव देखे। 2019 में वो बीजेपी उम्मीदवार सुनील सोरेन के हाथों लोकसभा का चुनाव हार गए थे। राज्य से इतर केंद्र की यूपीए सरकार में भी उन्होंने बतौर मंत्री काम किया। हालांकि गिरते स्वास्थ्य के कारण उन्होंने सक्रिय राजनीति से दूरी बना ली थी और उनके उत्तराधिकारी के रूप में बेटे हेमंत सोरेन को पार्टी का सारा काम सौंप दिया था। शिबू सोरेन के निधन से समूचे झारखंड में शोक की लहर छा गई। लोग अपने प्रिय नेता के अंतिम दर्शन के लिए उमड़ पड़े। इतिहास शिबू सोरेन को आदिवासियों के मुक्ति दाता भगवान बिरसा मुंडा की परंपरा के नेता के रूप में सदा याद रखेगा। बिरसा मुंडा अंग्रेजों के खिलाफ निर्णायक संघर्ष किया था, जबकि शिबू सोरेन ने आजादी के बाद आदिवासियों के हकों और शोषण के खिलाफ लंबी लड़ाई लड़ी। अपनी पार्टी को कई बार सत्ता तक पहुंचाया। उन्होंने आदिवासियों को इस बात का अहसास कराया कि लोकतंत्र में उनके समान अधिकार हैं और उन्हें अपनी मुक्ति की लड़ाई खुद लड़नी होगी। शिबू के इस आंदोलन से दूसरे राज्य के आदिवासियों ने भी काफी प्रेरणा ली, लेकिन झामुमो जैसी राजनीतिक सफलता कोई भी हासिल नहीं कर पाया है। मप्र में गोंडवाना पार्टी बनी, लेकिन वो टिक नहीं पाई। दरअसल आदिवासियों में राजनीतिक सामाजिक चेतना जगाना आसान नहीं है। लेकिन शिबू सोरेन ने वह कर दिखाया। उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि।

अमेरिका दोस्त या दुश्मन ?

बहरहाल उनकी दक्षिणपंथी सोच के चलते एक बार फिर अमेरिकी जनता ने उन्हें निर्वाचित कर लिया है। परन्तु इस बार वे कुछ अलग ही 'अवतार' में नज़र आ रहे हैं। जहाँ वे विश्व शांति दूत बनने की फ़िराक़ में युद्ध रत देशों के बीच 'युद्ध विराम' करने वाले एक महान शांतिप्रिय नेता के रूप में स्वयं को स्थापित करना चाह रहे हैं वहीं अपनी व्यवसायिक मानसिकता के कारण वे युद्धग्रस्त देशों को शस्त्रों की आपूर्ति करने में भी पीछे नहीं हैं । इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने इस दूसरे कार्यकाल में 'टैरिफ़ बम' छोड़ कर भी अनेक देशों को विचलित कर दिया है। ख़बरों के अनुसार राष्ट्रपति ट्रंप अब तक 92 देशों पर टैरिफ़ लगाने की घोषणा कर चुके हैं जो संभवतः 7 अगस्त 2025 से लागू होंगे। विभिन्न देशों पर अलग अलग कारणों से टैरिफ़ लगाने के अतरिक्त इसी सन्दर्भ में पिछले दिनों उन्होंने भारत व रूस को लेकर जो ग़ैर ज़िम्मेदाराना बातें कहीं वह पूरी तरह असत्य व असभ्य थीं। राष्ट्रपति ट्रंप ने 30 जुलाई 25 को सोशल मीडिया पर भारत और रूस की अर्थव्यवस्थाओं को 'मृत अर्थव्यवस्था' कह डाला।

नजरिया

तनवीर जाफ़री

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रम्प शांति का नोबल पुरस्कार लेने की फ़िराक़ में तो ज़रूर हैं परन्तु उनके फ़ैसले व बयानों से यही नज़र आ रहा है गोया उन्होंने पूरे विश्व को अशांत व विचलित करने का ठेका ले रखा है। ख़ासकर चूँकि वे स्वयं एक व्यवसायी पृष्ठभूमि से सम्बन्ध रखते हैं इसलिये उनके अनेक फ़ैसलों व बयानों में व्यवसायिकता का भाव साफ़ देखने को मिलता है। इत्तेफ़ाक़ से यही डोनाल्ड ट्रम्प 2017 से 2021 के अपने पहले कार्यकाल के दौरान झूठ बोलने व भ्रामक दावे करने का भी 'विश्व कीर्तिमान' बना चुके हैं। अमेरिकी प्रतिष्ठित समाचार पत्र वॉशिंगटन पोस्ट के मुताबिक़ ट्रम्प ने अपने पहले कार्यकाल में कुल 30,573 झूठे या भ्रामक दावे किए थे। यानी उन्होंने औसतन प्रतिदिन लगभग 21 झूठे दावे किए थे। 2021 में राष्ट्रपति भवन से उनकी बिदाई कितनी हिंसक व शर्मनाक थी यह भी दुनिया ने देखा था।

बहरहाल उनकी दक्षिणपंथी सोच के चलते एक बार फिर अमेरिकी जनता ने उन्हें निर्वाचित कर लिया है। परन्तु इस बार वे कुछ अलग ही 'अवतार' में नज़र आ रहे हैं। जहाँ वे विश्व शांति दूत बनने की फ़िराक़ में युद्ध रत देशों के बीच 'युद्ध विराम' करने वाले एक महान शांतिप्रिय नेता के रूप में स्वयं को स्थापित करना चाह रहे हैं वहीं अपनी व्यवसायिक मानसिकता के कारण वे युद्धग्रस्त देशों को शस्त्रों की आपूर्ति करने में भी पीछे नहीं हैं । इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने इस दूसरे कार्यकाल में 'टैरिफ़ बम' छोड़ कर भी अनेक देशों को विचलित कर दिया है। ख़बरों के अनुसार राष्ट्रपति ट्रंप अब तक 92 देशों पर टैरिफ़ लगाने की घोषणा कर चुके हैं जो संभवतः 7 अगस्त 2025 से लागू होंगे। विभिन्न देशों पर अलग अलग कारणों से टैरिफ़ लगाने के अतरिक्त इसी सन्दर्भ में पिछले दिनों उन्होंने भारत व रूस को लेकर जो ग़ैर ज़िम्मेदाराना बातें कहीं वह पूरी तरह असत्य व असभ्य थीं। राष्ट्रपति ट्रंप ने 30 जुलाई 25 को सोशल मीडिया पर भारत और रूस की अर्थव्यवस्थाओं को 'मृत अर्थव्यवस्था' कह डाला। उन्होंने भारत से आयात पर 25 प्रतिशत टैरिफ़ और रूस से तेल व सैन्य उपकरणों की ख़रीद के लिए भारत पर अतिरिक्त जुर्माना लगाने तक की घोषणा कर डाली । यह क़दम भारत और रूस के बीच गहरे व्यापारिक और रणनीतिक संबंधों, विशेष रूप से रूस से भारत के तेल आयात और सैन्य ख़रीद के कारण उठाया गया। ट्रंप की सोच है कि भारत और रूस के बीच गहरे व्यापारिक और रणनीतिक संबंध अमेरिका के व्यापारिक हितों के ख़िलाफ़ हैं। ट्रंप ने भारत और रूस को ब्रिक्स समूह का हिस्सा होने के कारण भी निशाना बनाया, जो अमेरिकी डॉलर को वैश्विक व्यापार में चुनौती देता है।

इसी सन्दर्भ में ट्रंप ने भारत और रूस की रणनीतिक साझेदारी, ख़ासकर रूस से तेल और हथियारों की खरीद को लेकर तंज़ कसते हुये कहा कि उन्हें परवाह नहीं कि भारत रूस के साथ क्या करता है, लेकिन दोनों देश अपनी 'मृत अर्थव्यवस्थाओं' को और नीचे ले जा सकते हैं। यह बयान भारत के रूस के साथ संबंधों को लेकर अमेरिका की नाराज़गी को दर्शाता है, विशेष रूप से जब अमेरिका, रूस-यूक्रेन युद्ध में रूस को अलग-थलग करने की कोशिश कर रहा है। भारत ने भले ही 'मृत अर्थव्यवस्था' (Dead economy) बताने पर ट्रंप को कोई माक़ूल जवाब नहीं दिया परन्तु रूसी सुरक्षा परिषद के उपाध्यक्ष और पूर्व राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव ने ज़रूर ट्रंप को धमकी भरा ज़बरदस्त जवाब दे दिया। मेदवेदेव ने अपने टेलीग्राम चैनल पर लिखा कि ट्रम्प को अपनी पसंदीदा फ़िल्म 'द वॉकिंग डेड' याद करनी चाहिए और यह सोचना चाहिए कि 'डेड हैंड' कितना ख़तरनाक हो सकता है। दरअसल 'डेड हैंड' शीत युद्ध के दौरान सोवियत संघ की एक स्वचालित परमाणु हथियार नियंत्रण प्रणाली थी, जो बड़े पैमाने पर रूसी नेतृत्व के नष्ट होने पर भी स्वचालित रूप से परमाणु हमला शुरू कर सकती है। मेदवेदेव ने ट्रम्प को साफ़ शब्दों में चेतावनी दी कि रूस की ताक़त को कम न आंकें। मेदवेदेव की यह चेतावनी ट्रंप के रूस और भारत की अर्थव्यवस्थाओं को 'मृत' क़रार देने तथा यूक्रेन युद्ध को 10 दिन में समाप्त करने की समय सीमा निर्धारित करने के जवाब में थी।

उधर राष्ट्रपति ट्रंप ने भी पूर्व रूसी राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव की 'डेड हैंड' चेतावनी के जवाब में रूस के निकटवर्ती क्षेत्रों में दो परमाणु पनडुब्बियों को तैनात करने का आदेश दे दिया है। ट्रंप ने मेदवेदेव के कथित 'भड़काऊ बयानों' का हवाला देते हुए कहा कि यह क़दम एहतियाती है ताकि ऐसी बयानबाज़ी को नियंत्रित किया जा सके। हालांकि, ट्रंप ने यह साफ़ नहीं किया कि ये पनडुब्बियां परमाणु हथियारों से लैस हैं या केवल परमाणु ऊर्जा से संचालित हैं परन्तु ट्रंप की इस घोषणा ने पूरे विश्व को चिंतित ज़रूर कर दिया है। रूस की ओर से भी यह बता दिया गया है यह दोनों ही अमेरिकी पनडुब्बियां उसके निशाने पर हैं। गोया दोनों देशों के बीच तनाव अपने चरम पर पहुँच गया है। सवाल यह कि राष्ट्रपति ट्रंप को किसी देश की अर्थ व्यवस्था को 'मृत अर्थव्यवस्था' कहने का क्या अधिकार है ? वैसे भी विश्व बैंक, आईएमएफ़ सहित और भी कई अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के अनुसार 2025-26 के लिए भारत की जीडीपी वृद्धि दर 6.3-6.7 प्रतिशत अनुमानित की है। यह जीडीपी वृद्धि दर अमेरिका की 1.9 प्रतिशत की तुलना में कहीं ज़्यादा है। इन आंकड़ों से ही पता चलता है कि भारत की अर्थव्यवस्था 'मृत' नहीं बल्कि जीवंत है और साथ ही यह प्रति व्यक्ति आय कम होने के बावजूद यह दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से भी एक है।

सच पूछिये तो आज यूक्रेन भी जिस बुरे दौर से गुज़र रहा है उसका कारण भी यूक्रेन को दिया जाने वाला अमेरिकी व नाटो समर्थन ही है। यानी यूक्रेन, अमेरिका की दोस्ती का नतीजा भुगत रहा है और अमेरिका यूक्रेन का साथ देने के बजाये इसमें भी व्यवसाय कर रहा है। इसी तरह पिछले दिनों ईरान ने अमेरिका के घनिष्ठ मित्र देश इस्राईल को धूल चटा डाली। हाँ,युद्ध के आख़री दिनों में अमेरिका ने ईरान में मामूली बंबारी कर इस्राईल को यह ज़रूर जता दिया कि घबराओ मत, हम तुम्हारे साथ हैं। परन्तु तब तक ईरान ने तेल अवीव के बड़े हिस्से को खंडहर बना दिया था। इसी तरह याद कीजिये 1971 के वह दिन जब अमेरिका ने पाकिस्तान को सैन्य सहायता के रूप में अपना सातवां युद्ध पोत भेजने का दिलासा दिया था। वह सातवां बेड़ा तो पहुंचा नहीं परन्तु इंदिरा गाँधी के सबल व कुशल नेतृत्व में भारतीय सेना ने पाकिस्तान के दो टुकड़े ज़रूर कर दिये। आज फिर अमेरिका उसी भारत विरोधी पाकिस्तान को हर तरह से शह देने की नीति पर चल रहा है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनसे यह साबित होता है कि जिसका 'दोस्त' अमेरिका हो उसे दुश्मन की ज़रूरत ही क्या है ?

कटखने कुत्तों पर कैसे लगे अंकुश?

मुद्दा

डॉ. रमेश ठाकुर

सदस्य, राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान भारत सरकार

पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं भाजपा के वरिष्ठतम नेता विजय गोयल ने कटखने कुत्तों से उत्पन्न हुई समस्याओं पर अंकुश लगवाने के लिए न सिर्फ अभियान छेड़ा हुआ है, बल्कि कुछ महीने पहले जंतर-मंतर पर धरना भी दिया था। आवारा और कटखने कुत्तों का आतंक पिछले कुछ समय से समूचे देश में तेजी से फैला है। रोजाना कुत्तों के हमले से जुड़े सैकड़ों मामले सामने आ रहे हैं। पिछले सप्ताह में दिल्ली-एनसीआर में दर्जनों ऐसी घटनाएं घटी जहां राह चलते लोगों पर कुत्तों ने जानलेवा हमला न किया हो? दिल्ली में ऐसे दो हजार कटखने कुत्तों को नगर निगम ने चिन्हित किया है। देशभर में ऐसे कुत्तों का आकंड़ा 32 लाख से भी ज्यादा बताया गया है। वर्ष 2016 में कटखने कुत्तों के आंतक से निजात के लिए केंद्र सरकार से लेकर तमाम राज्यां की सरकारों ने 'स्टट डॉग्स शेल्टर' बनाए जाने की योजना बनाई थी। कुछके राज्य इस दिशा में आगे बढ़े, बाकी राज्य निल बटे सन्नाटा रहे। कुल मिलाकर कागजी प्रयासों मात्र से ये विकराल रूप धारण कर चुकी समस्या नहीं सुलझेगी, इस गंभीर मुद्दे को संसद सत्र जैसे मंचों पर रखकर कोई कारगर कानून बनाए जाने की जरूरत है।

डॉग्स नसबंदी और एंटी रैबीज वैक्सीनेशन की भी कोई कमी नहीं है, बावजूद इसके आवारा कुत्तों की संख्या लगातार बढ़ रही है। कुत्तों के काटने की घटनाओं ने लोगों को खासा भयभीत किया हुआ है। यही, कारण है कि डर से लोगों ने सुबह की सैर करना और बच्चों ने पार्क में खेलना तक बंद कर दिया है। बीते सोमवार की ही घटना है जब गुरूग्राम में सुबह पार्क में टहल रही महिला पर एक पालतू कुत्ते ने जानलेवा हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। ऐसी घटनाएं अब आम हो गई हैं। पूरे देश में रोजाना करीब 8 हजार मामले दर्ज होते हैं जिनमें दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब राज्य प्रमुख हैं। ये खबर निश्चित रूप सुखद कही जाएगी कि पूर्व केंद्रीय मंत्री विजय गोयल आवारा कुत्तों की बढ़ती समस्याओं को लेकर अपनी ही सरकार को आईना दिखा रहे हैं। ऐसा कदम अन्य दलों के नेताओं को भी उठाना चाहिए, ताकी समस्या का निजात जल्द निकल सके। उन्होंने अपनी सरकार को चेतावनी भी दी है, अगर कोई कदम नहीं उठाया गया, तो वो जनआंदोलन भी छेडेंगे।

पशु-अधिनियम कानूनों में बदलाव की अब सख्त जरूरत है। पुरानी चरमराती व्यवस्था में बदलाव करना होगा। कटखने और आवारा पशुओं को पकड़कर कर एकांत शहरों से कहीं दूर-दराज क्षेत्रों में लेजाकर सुरक्षित ढंग से रखने की व्यवस्था बनाई जाए। जहां उन्हें एंटी रैबीज इंजेक्शन दिया जाए, जिससे उनके भीतर विषाक्त को नष्ट किया जाए। और सबसे जरूरी कदम, शहरों में नॉनबेज की दुकानों के आसपास से कुत्तों को हटाया जाए, जिससे वह ज्यादा हिंसक होते हैं। क्योंकि लोग मांस की हड्डिया इधर-उधर फेंकते हैं, जिसको लेकर कुत्ते आपस में लड़ते हैं, जो इनके हिंसक होने का बड़ा कारण है। भय इस कदर व्याप्त है कि कुत्ता पकड़ने जैसे काम में कोई हाथ तक नहीं डालना चाहता। कुत्तों को पकड़ने का जिम्मा नगर निगम के पशुधन विभाग का होता है, जहां कर्मचारियों का हमेशा टोटा रहता है। कोई भी कर्मचारी इस विभाग में अपनी सेवाएं देने को राजी नहीं है, जो आते भी हैं तो वह ज्यादा रुचि नहीं लेते?

बहरहाल, आवारा कुत्ते ही नहीं, छुट्टा पशुओं के चलते भी नई किस्त की इस आफत ने आतंक मचाया हुआ है। पशु हिंसक क्यों हो रहे हैं? ये एक अनसुलझी पहेली बन गई है। हालांकि, ये भी तथ्यात्मक है कि पशु जब तक खूंटे से बंधे होते हैं या मालिकों के कैद में होते हैं, अ-हिंसक रहते हैं। पर, जैसे ही छूटते हैं, एकाएक खूंखार हो जाते हैं। हिंसक कुत्ते अब बकायदा झुंड में रहते हैं। सड़कों और मोहल्ले की गलियों में चलना तक दूभर हो गया है। गली, चौक-चौराहों पर अक्सर देखने को मिलता है कि कुत्तों का झुंड रास्ता घेरे बैठे हैं। बच्चों पर कुत्ते ज्यादा अटैक करने लगे हैं। पिछले वर्ष दिल्ली की घटना ने सबको झकझोर दिया था। जहां एक मासूम को दिनदहाड़े दो कुत्तों ने मिलकर चबचबा दिया था। बचाव में दौड़े उसके बड़े भाई को लहूलुहान कर दिया था।

अक्सर, दिन ढलने के बाद कुत्ते और भी खूंखार हो जाते हैं। स्कूटी व अन्य गाड़ियों के पीछे कुत्तों का दौड़ लगाना भी आम हो गया है। कुछ समय की घटना है, जब जयपुर में टयूशन पढकर स्कूटी से वापस घर लौट रही 10वीं की छात्रा के पीछे आवारा कुत्ते दौड़ पड़ते हैं जिससे उसकी स्कूटी सामने आ रही कार से जा टकराई। घटना में उसकी एक टांग और रीड की हड्डी टूट गई। ऐसी घटनाओं को देखकर भी नगर निगम के अधिकारियों की नींद नहीं टूटती? हिंसक जानवरों पर नकेल कसने की दरकार अब ज्यादा होने लगी है। चाहें इसके लिए कानून बनाना पड़े, या कोई और आधुनिक व्यवस्था करनी हो, गंभीरता से विमर्श किया जाना चाहिए। घटनाएं कोई एकाध जगहों पर नहीं, देशभर में घट रही हैं। हाल में दिल्ली, हैदराबाद, बठिडा, बरेली, देहरादून जैसे जगहों पर कुत्तों द्वारा मासूम बच्चों पर हमले और उन्हें मारने की घटनाओं ने सबको झकझोरा है। कभी छिटपुट घटनाएं आम हुआ करती थी, जिस पर रेबीज के टीके या घरेलू उपचारों से मरीज ठीक हो जाया करते थे। पर, अब ऑन स्पॉट कुत्ते जान लेने लगे हैं।

तात्कालिक रूप से हुकूमत या प्रशासनिक स्तर पर कोई हल निकले इसकी भी संभावनाएं नहीं दिखती? घटनाओं पर अगर उदासीनता ऐसी ही रही, तो ना जाने कितने लोग आवारा कुत्तों का निवाला बन जाएंगे। मरीजों की संख्याओं का इजाफा अस्पतालों में एकाएक बढ़ा है। कई बार तो रैबीज के इंजेक्शन अस्पतालों मिलते भी नहीं? उस स्थिति में मरीज औने-पौने दामों में निजी अस्पतालों से रेबीज का टीका लगवाते हैं। बिना रेबीज टीका लगे मरीज बेमौत मर भी जाते हैं। कटखने कुत्तों के संबंध में जब पीड़ित नगर निगम के कार्यालयों में संपर्क करते हैं तो वहां से संतुष्टि पूर्ण जवाब नहीं मिलता। प्रेसर डालने पर वो प्राइवेट कुत्ता पकड़ने वाली एजेंसियों से बात करने की सलाह दे देते हैं। उनसे बात होती है तो वह मोटा चार्ज करते हैं। पैसे लेने के बाद वह कुत्ते को पकड़कर नसबंदी करके एकाध दिनों में फिर वहीं छोड़ जाते हैं। ये विकराल समस्या है, जिसका बिना देर किए निदान होना चाहिए।

दृष्टिकोण

ध्रुव शुक्ल

लेखक साहित्यकार हैं।

नेताओं, समृद्ध पूरब की परिकल्पना करो

सदियों पहले जब यूरोप के लोग वीरानी और अभावों में अपना जीवन गुजार रहे होंगे, एशिया में समृद्ध सभ्यता के प्रमाण मिलते रहे हैं। सभी धर्मों के प्रवर्तन की भूमि भी यही रही है। श्रीकृष्ण, बुद्ध, ईसा, जरथुस्त,मुहम्मद, कन्फ्यूशियस और लाओत्से जैसे प्रज्ञावान एशिया की माटी में ही उपजे हैं।

प्राचीन काल में अपनी प्राकृतिक सम्पदा के स्वभाव के अनुरूप एशिया ही दैहिक जीवन के व्यावहारिक अध्यात्म का महाद्वीप रहा है। यूरोप तो सोलहवीं सदी के बाद अपनी उपनिवेशवादी लूट और टेक्नालाजी की दम पर ही ताकतवर बना। यूरोप के द्वारा एशिया के साधनों की लूट बीते पॉच सौ वर्षों से जारी है। यूरोप की प्रसिद्धि मानव मन को ठगने वाली भौतिक सभ्यता के रूप में ही है। यूरोप की व्यापारिक बुद्धि जीवन के एकात्म से कोई संबंध जोड़ने में पिछड़ी हुई है।

विश्व की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था को अपने पक्ष में बदलने का जो जाल यूरोप अब तक फैलाता आया है उससे बाहर निकलने का एक ही उपाय है कि भारत सहित एशिया के इकतालीस देश मिलकर एक समृद्ध पूरब की परिकल्पना करें। एशिया के सभी देश अपने प्राकृतिक साधनों की विपुलता और मानव श्रम के मूल्य से परिचित हैं। यूरोप अपनी व्यापारिक और आर्टीफीशियल व्यभिचारिणी बुद्धि के छल से इन्हीं साधनों और मानव श्रम का दोहन करने को उतावला है।

जब यूरोप के देश संगठित होकर अपनी मुद्रा और मनमानी का भार एशिया के विपुल साधनों और जीवन पर डाल रहे हैं तब एशिया के सभी देशों को एक समन्वित राजनीति और अर्थनीति की रचना करना चाहिए। एशिया के नेता यह भलीभॉति जानते हैं कि यूरोप की कुटिल नीतियॉ एशिया के देशों के बीच अनगिनत दूरियॉ पैदा करने में अब तक सफल होती आयी हैं। वे युद्ध और आतंक के व्यूह में फॉसकर एशिया के देशों को अपना कर्जदार बनाये हुए हैं। उनके हथियारों का धंधा फल-फूल रहा है और एशिया के लोगों का जीवन अभावग्रस्त होकर अशान्ति के बीच बेहाल होता जा रहा है।

एक समृद्ध एशियाई पूरब ही उस पश्चिम (यूरोप) का सामना करने में समर्थ हो सकता है जो सदियों से एशिया के साधनों को ही नहीं लूट रहा बल्कि एशिया की संस्कृति और सभ्यता के जीवन मूल्यों को विकृत कर रहा है। ग़ैर ज़रूरी आयातित चीज़ों और विचारों के बीच जीवन में संयम का अभाव बढ़ता जा रहा है। साधनों की लूट से जीवन पर उपकारी पृथ्वी ही अब बार-बार कॉप रही है। जीवन ढह रहा है।

भारत ने तो कभी सह-अस्तित्व पर आधारित विश्व नागरिकता की परिकल्पना भी की थी और ऐसे निर्भय नेताओं के उदय की उम्मीद बॉधी थी जो पृथ्वी के उपकारों के प्रति विनत होकर मनुष्य सहित सभी प्राणियों के शुभ चिन्तक हो सकेंगे। जिसमें नस्ल, रंग, जाति, सम्प्रदाय का कोई भेद नहीं होगा। बस समूचे जीवन के प्रति संवेदनशील और सहकारी मनुष्यता होगी। दुनिया में शान्ति और सद्भाव होगा जिसमें यंत्रों की गुलामी के बजाय मानवीय श्रम से ही समृद्धि आयेगी।

एशिया के जो शासक यूरोप के जाल को तोड़ने में अपने आपको असमर्थ पाते हैं वे इस प्रस्ताव की हँसी उड़ा सकते हैं।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

संजय तेलंग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार और व्यंग्यकार हैं।

मिजाजपुर्सी का महारोग और बीमार की फजीहत

अस्पताल के बेड पर लेटा मरीज बीमारी से उतना त्रस्त नहीं होता, जितना हालचाल पूछने वालों की भीड़ और उनके बेतुके सवाल उसे कर देते हैं। साथ ही बिन मांगी सलाहों के तो कहने ही क्या! बीमार यदि उन सलाहों पर अमल करना शुरू कर दें, तो उनका टिकट कटते देर नहीं लगे। उधर, यदि डॉक्टर गलती से सलाह सुन ले, तो बेचारा माथा कूट ले। वैसे बेड पर पड़ा बीमार तो 'सुनो सबकी, करो डॉक्टर के मन की' फार्मूले पर अमल कर किसी तरह अपनी जान बचाने की ही जुगाड़ में रहता है। कहने को यह बहुत आम प्रक्रिया है लेकिन मरीज पर भारी पड़ती है। एक तो बीमारी से परेशान, दूसरे हालचाल बता-बता नाक में दम।

आपकी जानकारी के लिए बता देते हैं, बीमार का हालचाल जानने के लिए पहुंचने वालों के लिए डिक्शनरी में दिया एक शब्द चलन में है 'मिजाजपुर्सी।' मरीज के हालचाल लेने जाना हो, तो डिटेल में बताने की जरूरत नहीं है। बस 'मिजाजपुर्सी' के लिए जा रहे हैं, कह देना ही काफी है। दरअसल, बीमार की मिजाजपुर्सी के लिए पहुंचे लोग खुद एक रोग से पीड़ित होते हैं। जी हां, मिजाजपुर्सी किसी महारोग से कम नहीं है। इसे रोगी की पीड़ा बढ़ाने वाला रोग कहना ज्यादा सही होगा। वैसे, मरीजों के हालचाल जानने की यह बहुप्रचलित प्रक्रिया प्राचीन काल से चली आ रही है। फर्क सिर्फ इतना आया है कि पहले हालचाल पूछने आने वाले बीमार को जल्दी भले-चंगे होने की दुआएं देते थे, अब दुआओं के साथ बिन मांगी सलाह भी उस पर चेप देते हैं।

मिजाजपुर्सी के महा रोगियों से बीमार और उसकी देखभाल करने वालों की हालत बयां करना हो, तो यही कहा जा सकता है कि उनकी तो शामत ही आ जाती है। उन्हें एक जैसे अनेक सवालों के जवाब बार-बार दोहराने हैं। मिजाजपुर्सी के पहुंचे लोगों के सवाल 'कौन सी दवाएं चल रही हैं, डॉक्टर कौन है? रोगी की धड़कनें बढ़ाने के लिए काफी हैं और पलंग पर टंगे रोगी की केस हिस्ट्री, उपचार और दवाओं की डिटेल्स तो वे ऐसे देखते हैं, जैसे विशेषज्ञ डॉक्टर हों। पेपर्स में डॉक्टर द्वारा लिखा गया मजमून सिवा कैमिस्ट के किसी के पल्ले नहीं पड़ता, लेकिन मिजाजपुर्सी के महारोगी उसे इतने गौर से देखते हैं, जैसे सब कुछ समझ गए हों। फिर शुरू होते हैं सवाल- क्या हुआ, कब हुआ, कैसे हुआ? महा रोगियों के सवालों से परेशान अस्पताल में भर्ती हमारे एक मित्र ने तो अपने बेड के पास एक बोर्ड लगा लिया था। उस पर उनसे पूछे जाने वाले संभावित सवालों के जवाब लिखे थे। मिजाजपुर्सी का रोगी जब भी सवाल दागता, वे बोर्ड की तरफ इशारा कर चुप्पी साध लेते।

वैसे मरीज की मिजाजपुर्सी के लिए कितने लोग पहुंचे, यह आजकल स्टेटस सिंबल भी बन गया है। विशेष रूप से अफसर और नेताओं के मामले में। मिजाजपुर्सी के लिए जितने अधिक लोग पहुंचे, वही बड़ा अफसर या नेता। यहां लोकप्रियता या भावना की बात सोचना मना है। नेता और अफसर की मिजाजपुर्सी के लिए आने वाले प्रायः भारी भरकम महंगे बुके लेकर पहुंचते हैं। लेकिन भीतर पहुंचते ही अफसर-नेता के मातहत या अर्दली उनके हाथ में जाने से पहले ही बुके झपट कर कोने में रखी बड़ी सी टेबल पर पहुंचा देते हैं।

वैसे मिजाजपुर्सी के रोगी इसका बुरा नहीं मानते, क्योंकि उन्हें मालूम है, उनका चेहरा देख लिया गया है, जो भविष्य में कोई न कोई तो फायदा तो दिलाएगा ही। अस्पताल के रूम के बाहर टेबल पर रजिस्टर और पेन भी रखा जाता है, ताकि बीमार यदि नींद में हो तो आने वाले अपनी आमद का प्रमाण छोड़ के जा सकें। आप यकीन करें या ना करें लेकिन यह भी सच है कि नेता-अफसरों की मिजाजपुर्सी के लिए आने वालों की आजकल वीडियो शूटिंग भी होने लगी है। सब पता चल जाता है, कौन आया और कौन नहीं! जैसे सबका बाद में हिसाब किया जाएगा! वैसे अफसर या नेता अस्पताल में भर्ती हों, तो अस्पताल की रौनक भी बढ़ जाती है। बड़े-बड़े अधिकारी और नेता मिजाजपुर्सी के लिए पहुंचते हैं। अस्पताल भी अखबारों की सुर्खियों में आ जाता है, उसे मुफ्त में प्रचार मिल जाता है।

आपने अस्पतालों के गलियारों में प्रायः एक बोर्ड टंगा देखा होगा- कृपया शांति बनाए रखें, रोगी को आराम करने दें। लेकिन इस बोर्ड की सबसे ज्यादा अनदेखी अस्पताल में काम करने वाले ही करते दिखेंगे। गासिप के दौर और उन पर जमकर ठहाके गलियारों में सुनाई देना नई बात नहीं है। जब अस्पताल के नियमों को वहीं के लोग नहीं मानते तो मिजाजपुर्सी के लिए पहुंचे लोगों से उन्हें मनवाने का आग्रह क्यों? यही सोच कर वे अपने नियमों पर चलते हैं और बीमार से मिल मन की पूरी भड़ास निकालते में पीछे नहीं रहते। रही बीमार की बात तो उसे तो अपनी बीमारी से लड़ने के अलावा अस्पताल के सभी प्रोटोकाल्स का पालन करना ही है, जब तक वह वहां है। बेहतर तो यह होगा कि किसी को कभी अस्पताल में भर्ती होने की नौबत ही न आए।

एमपी में फिल्मसिटी

प्रो. मनोज कुमार

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

'कटहल' का स्वाद और '12th फेल' की कामयाबी

'कटहल' का स्वाद और '12th फेल' की कामयाबी से मध्यप्रदेश के सिने प्रेमियों का चेहरा खिल उठा. यह स्वाभाविक भी है और होना भी चाहिए. इस कामयाबी के बहाने फिल्म सिटी की संभावना और मध्यप्रदेश का रजतपट पर योगदान को भी समझा जा सकता है. मध्यप्रदेश हमेशा से सिनेमा के लिए मुफीद रहा है. शोमेन राजकपूर से लेकर दिग्गज फिल्म निर्देशक प्रकाश झा को मध्यप्रदेश लुभाता रहा है. यही नहीं, राजकपूर, प्रेमनाथ और सदी के नायक कहे जाने वाले अमिताभ बच्चन का ससुराल भी मध्यप्रदेश है. लता मंगेशकर से लेकर किशोर कुमार, अशोक कुमार, अनूप कुमार, जया भादुड़ी, निदा फाजली, अन्नू कपूर जैसे अनेक नाम लिए जा सकते हैं तो पटकथा लेखकों में जावेद अख्तर और सलीम को कौन भुला सकता है? पीयूष मिश्रा की अदायगी, लेखन और आवाज के तो युवा पीढ़ी दीवानी है. यह तो थोड़े नाम हैं जिनके बिना रजतपट पर रंग नहीं चढ़ता है.

मध्यप्रदेश सिनेमा के लिए हमेशा से ऊर्वरा भूमि रही है. संभवतः अपने जन्म के साथ ही रजतपट पर मध्यप्रदेश का दबदबा रहा है. साल 2025 के राष्ट्रीय पुरस्कारों में कटहल और '12th फेल'' नें पुरस्कार जीत कर यह एक बार फिर प्रमाणित हो गया कि रजतपट में मध्यप्रदेश का कोई सानी नहीं. इन पुरस्कारों के साथ ही मध्यप्रदेश में फिल्म सिटी को आकार लेने के दावों को एक और वजह मिल गई है. 'कटहल' के युवा निर्देशक और पटकथा लेखक मध्यप्रदेश के हैं. युवा निर्देशक यशोवर्धन एवं पटकथा लेखक अशोक मिश्र का रिश्ता पिता-पुत्र का है. खास बात यह है कि 'कटहल' यशोवर्धन निर्देशित पहली फिल्म है. इसी तरह '12th फेल' फेल एक ऐसे युवा की सच्ची कहानी है जिसने अपने आत्मविश्वास से नाकामयाबी को कामयाबी में बदल दिया. ऐसे युवक मनोज कुमार शर्मा का रिश्ता मध्यप्रदेश से हैं और वह वर्तमान में भारतीय पुलिस सेवा के उच्चाधिकारी हैं. उनकी कहानी को अनुराग पाठक ने ऐसे पिरोया कि '12th फेल' ने ना केवल दर्शकों का दिल जीत लिया बल्कि एक बड़े निराश युवावर्ग में उत्साह का संचार किया.

'कटहल' का स्वाद और '12th फेल' की कामयाबी से मध्यप्रदेश के सिने प्रेमियों का चेहरा खिल उठा. यह स्वाभाविक भी है और होना भी चाहिए. इस कामयाबी के बहाने फिल्म सिटी की संभावना और मध्यप्रदेश का रजतपट पर योगदान को भी समझा जा सकता है. मध्यप्रदेश हमेशा से सिनेमा के लिए मुफीद रहा है. शोमेन राजकपूर से लेकर दिग्गज फिल्म निर्देशक प्रकाश झा को मध्यप्रदेश लुभाता रहा है. यही नहीं, राजकपूर, प्रेमनाथ और सदी के नायक कहे जाने वाले अमिताभ बच्चन का ससुराल भी मध्यप्रदेश है. लता मंगेशकर से लेकर किशोर कुमार, अशोक कुमार, अनूप कुमार, जया भादुड़ी, निदा फाजली, अन्नू कपूर जैसे अनेक नाम लिए जा सकते हैं तो पटकथा लेखकों में जावेद अख्तर और सलीम को कौन भुला सकता है? पीयूष मिश्रा की अदायगी, लेखन और

आवाज के तो युवा पीढ़ी दीवानी है. यह तो थोड़े नाम हैं जिनके बिना रजतपट पर रंग नहीं चढ़ता है. नए समय में यशोवर्धन जैसे निर्देशक उम्मीद जगाते हैं. यहां इस बात का स्मरण कर लेना चाहिए कि बीते एक दशक में अनेक मल्टीस्टारर फिल्मों और टेलीविजन सीरियल्स के साथ वेबसीरिज का निर्माण हो रहा है. यह मध्यप्रदेश के कलाकारों, पटकथा लेखकों और तकनीकी जानकारों के लिए सुनहरा अवसर है. इस संभावना के साथ मध्यप्रदेश में फिल्मसिटी बनाने के लिए लम्बे समय से प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन अभी तक फिल्मसिटी की योजना मूर्तरूप नहीं ले सका है. यह एक टीस देने वाली बात है.

उल्लेखनीय है कि कभी मध्यप्रदेश फिल्म विकास निगम नाम से फिल्मों निर्माण एवं इससे संबंधित पक्षों को प्रोत्साहित करने की मकबूल संस्था थी. अनेक कारणों और नाकामी के चलते इसे बंद कर दिया गया. फिल्म विकास निगम के विसर्जन के साथ सिनेमा की असीमित संभवनाएं भी हाशिए पर चली गई. सबसे बड़ा नुकसान हुआ फिल्म विकास निगम द्वारा प्रकाशित गंभीर वैचारिक पत्रिका 'पटकथा' का अवसान. फिल्मसिटी के साथ इन सबको पुर्नजीवन देने की एक बार फिर जरूरत महसूस की जा रही है. मध्यप्रदेश में सिनेमा और फिल्मसिटी की जमीन तलाशने वाले श्रीराम तिवारी के हिस्से में फिल्म विकास निगम की जिम्मेदारी थी और आज वे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के संस्कृति सलाहाकार हैं तो सहज अपेक्षा होती है कि रजतपट पर मध्यप्रदेश की सशक्त उपस्थिति दर्ज कराने और मध्यप्रदेश की सिने प्रतिभाओं को तराशने के लिए अपने पुरानी पहल को आगे बढ़ाएं.

प्रसंगवश याद दिला देना जरूरी हो जाता है कि अगस्त 2025 में अपने पचास साल पूरा करने जा रही फिल्म 'शोले' का मध्यप्रदेश कनेक्शन रहा है. फिल्म में अमितभ बच्चन, जया भादुड़ी, जगदीप ने अभिनय किया तो सलीम-जावेद की जोड़ी भी मध्यप्रदेश से ही है. और तो और गब्बर को कैसा अभिनय करना है, यह पाठ भी अमजद खान ने देश के सुपरिचित पत्रकार एवं लेखक तरूण कुमार भादुड़ी की पुस्तक 'अभिशप्त चंबल' से किया. इस समय भोपाल में रंगमंच में सक्रिय राजीव वर्मा एवं रीता (भादुड़ी) वर्मा का भी हिन्दी सिनेमा में योगदान रहा है. अनेक फिल्मों में वर्मा दंपत्ति ने अपनी छाप छोड़ी है. इसी तरह वरिष्ठ रंग निर्देशक संजय मेहता भी रंगमंच के साथ लगातार फिल्मों में काम कर रहे हैं. हालिया 'धडक़न-2' में भी उनकी भूमिका उल्लेखनीय है. ऐसे में मध्यप्रदेश में फिल्म सिटी की अनिवार्यता हो जाती है. देश का दिल मध्यप्रदेश सिनेमा के लिए सौफीसद माकूल है. लोकेशन के लिहाज से, अभिनय और कथानक की दृष्टि से और सुरक्षा और सुरक्षित होने की दृष्टि से. प्रकाश झा ने आरक्षण, राजनीति और चक्रव्यूह जैसी बड़ी फिल्मों का निर्माण मध्यप्रदेश की जमीं पर किया. इसके बाद उनकी वापसी कभी होगी, किसी नए विषय को लेकर लेकिन तब तक मझोले और छोटे फिल्मकार नियमित रूप से मध्यप्रदेश में सक्रिय हैं, उन्हें सुविधा मिलेगी तो मध्यप्रदेश की सिनेमा परिदृश्य उन्नत होगा. फिल्मसिटी बन जाने से टैक्स के रूप में ना केवल सरकार को राजस्व का लाभ होगा बल्कि कलाकारों को भी उचित मेहनताना मिल सकेगा. उम्मीद की जाना चाहिए कि सबके प्रयासों से फिल्मसिटी जल्द ही आकार लेगा. तब हम हर वर्ष राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में बार बार 'कटहल' का स्वाद और '12th फेल' की कामयाबी का जश्न मना सकेंगे.

अपनी-अपनी सुविधा के खोल में हमें

विचार

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

यह संसार है ही इस तरह से कि हर आदमी अपने ही अंदाज में रहता है और जो अंदाज उसने बना लिया है उससे वह मुक्त नहीं होना चाहता। एक तरह से यह उसकी सुविधा का खोल होता है जिसमें वह हर स्थिति में चला जाता है और जब तक मन होता तब उस दुनिया में पड़ा रहता है फिर दुनिया में चला आता है । हम अपनी अपनी सुविधा का खोल बनाते हैं और उस खोल से बाहर आना ही नहीं चाहते। जो दुनिया जो जीवन हम जी रहे होते हैं उससे निकलना ही नहीं चाहते क्योंकि आप जब नया कुछ करने चलते हैं तो अलग से फिर बहुत कुछ करना होता है जिसके लिए हर कोई तैयार नहीं होता। आदमी एक दुनिया और एक कहानी लेकर बैठ जाता है, बस उससे कोई मिल जाये जिसे कहानी सुनने में रूचि हों फिर वह कहानी सुनाने लगता है। सीधी सी बात है कि दुनिया भर की कहानियां वह सुनाता रहता है। ऐसे सुनाता है कि इससे बढ़कर कोई और काम हों ही नहीं। इसीलिए यह बराबर से देखने में आता है कि आदमी एक निश्चित लय में, एक ढ़र्रे पर चलता है उसमें थोड़ा भी विचलन आता है तो बौखला जाता है। यदि आपके आसपास कुछ बौखलाएं हुए आदमी दिखें तो आश्चर्य करने की जरूरत नहीं है न ही उनके लिए किसी तरह से परेशान होने की जरूरत है यह सब एक तरह से आदमी का एक स्वाभाविक रूप है। वह इसी तरह से दिखेगा। आदमी इसी तरह दुनिया में आते हैं और दुनिया में अपनी गति बनाने का कारक भी स्वयं होते हैं। आदमी कैसे चलें और कितना चलें कि उसका चलना ठीक माना जाएं। अक्सर यह देखने में आता है कि लोग-बाग एक दूसरे की नकल करने में लगे रहते हैं। आखिर आप क्या कर सकते हैं और क्या नहीं कर सकते यह कोई और कैसे तय करेगा ? इसे तो आपको ही तय करना होगा। दूसरे के उपर हर कोई अपनी राय रखना जानता है बिना यह सोचे कि जिस आदमी पर हम राय रख रहे हैं वह भला कैसे चलेगा कहां तक चलेगा पर हमें राय रखनी होती है और रख देते हैं । कौन कितना कहां परेशान होता इससे हमें कोई लेना देना नहीं होता। हमारा काम कुछ इस तरह से होता है कि हमें अपनी राय रखनी है। हर आदमी अपने बारे में और दुनिया के बारे में एक राय रखने का जैसे अधिकारी ही हों।

लोग हैं कि कहीं से कहीं चले जाते हैं। किसी ऊंचाई पर जाने के लिए किसी की प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं होती न ही कोई आयेगा और आपको किसी ऊंचाई पर ले जाकर रख देगा। ऐसा कुछ नहीं होगा और मान लीजिए किसी ने सहारा देकर उपर उठा भी दिया तो कब छोड़ देगा कह नहीं सकते और फिर धड़ाम से नीचे गिरने के अलावा कोई चारा नहीं है। फिर इस गिरे हुए आदमी पर अनायास ही कुछ लोग चर्चा और विचार विमर्श करने लगेंगे जिसका इस गिरने और उठने में कोई योगदान नहीं होता वे चर्चा करने में ही मगन हो जाते हैं। उनके लिए आदमी का उपर उठना विषय हो या न हो पर गिरे हुए आदमी पर विचार करने को अपना मुख्य कर्म मानते हैं। अक्सर यह देखने में आता है कि लोग इस तरह के कर्म में ही अपनी सारी ऊर्जा लगा देते हैं। ऐसे लोगों को आप उस समय व्यस्त देख सकते हैं जब कोई व्यस्त नहीं रहता। इनकी बौद्धिक खुशी इसमें छिपी होती है कि कौन कहां कैसे परेशान है। परेशान लोगों के लिए दुःख जताने भी ये सबसे पहले पहुंचते हैं। वहां ये इसलिए नहीं जाते कि दुःख को दूर करने

में कोई मदद करेंगे या उस आदमी के कुछ कष्ट दूर करने का कारण बने या उसे किसी भी तरह से थोड़ी सी खुशी दे दें। वहां तो बस यह देखने जाते हैं कि यह आदमी दुःखी हैं और इस तरह से आदमी एक दिन दुःखी हो जाता है। उसके दुःख भरे संसार पर अपनी खेती लहराने चलें जाते हैं। विचारों के दुःख का ऐसा रोना रोते हैं कि संसार में उनसे ज्यादा दुःख किसी और को मिला नहीं और वे संसार के दुःख में अपनी दुनिया भूलकर इतने दुःखी हो जाते हैं कि कोई भी उन्हें वहां से उठा नहीं सकता और यदि उठ भी गये तो आंख में इतना आंसू लेकर उठेंगे कि उन्हें देखकर आप भी थोड़ी देर के लिए चौंक जाएंगे कि अरे भाई! क्या हो गया ? फिर सादगी के साथ बाहर आयेंगे। थोड़ा आसमान देखेंगे और फिर मौसम और दुनिया पर चर्चा करते हुए जलेबी की मिठास लेने जलेबी की दुकान पर चलें जायेंगे। मन भर जलेबी खायेंगे, संसार पर बातें करेंगे और फिर दुनियादारी के लिए किसी और के यहां का रास्ता ले लेंगे। यह उनका नित्य कर्म है। इसमें किसी तरह से बांधा नहीं आना चाहिए। इस तरह के लोगों की सेहत का राज इसमें छिपा होता है कि सुबह सुबह दो चार लोगों तक यात्रा कर लें दो चार का हाल-चाल ले लें। यदि जा नहीं पाये तो मोबाइल पर हाल ले लेंगे। दो चार लोगों से मिल लेने के बाद इनके पेट का पानी पच जाता है। फिर तो शांत चित्त होकर अपनी जगह पर लेट जायेंगे। इन्हें लेटने के लिए किसी विशेष साधन सुविधा की जरूरत नहीं होती न ही किसी तरह के एकांत की ये जहां जैसी स्थिति में होते हैं वहीं अपना एकांत बना लेते हैं और उसी स्थिति में मगन मन सो जाते हैं। नींद ही तो है जब आती है तो आ जाती है इसके लिए अलग से क्या सोचना। ऐसे लोगों के लिए संसार बस संसार की तरह होता है जहां थोड़ा हिसाब-किताब रखना पड़ता है कि कौन कहां कब किस स्थिति में मिला था। वह नहीं भी मिला तो हम तो मिल लेते हैं हम अपना स्वभाव क्यों बिगाड़े। इस तरह से दुनिया भर की बातों के बीच दुनियादारी के लिए वे समय निकाल ही लेते हैं। उन्होंने एक दिन बड़े मार्के की बात कही कि बिना मतलब हम लोग परेशान होते हैं। यह दुनिया है और इसे दुनिया की तरह ही लेना चाहिए। यदि सुख से रहना चाहते हो तो दुःख की चादर ओढ़ लीजिए। दुःख एक चादर है। जिसे बिछा भी सकते हैं और ओढ़ भी सकते हैं। जब कहीं मन न लगे तो दुःख की चादर को ओढ़ कर सो जाइए। जब जागना होगा तो जाग जायेंगे। अभी दिन सोने के हैं तो फिर क्यों परेशान हों। अभी तो आराम से सो लें। यह जो दुःख की चादर मिली है वह फट न जाए और फिर दुःख किसी और के यहां चला गया तो हम क्या करेंगे। इसीलिए दुःखी ब्रांड चादर लेकर सो जाता हूं।

गरीबी से लड़ने की मानसिकता चाहिए

आलेख

जवाहर चौधरी

विपक्ष का वाजिब सवाल है कि जब गरीबों की संख्या पांच करोड़ है तो अस्सी करोड लोगों को मुफ्त राशन कैसे दिया जा रहा है। यदि मध्य वर्ग को भी मुफ्त राशन की जरूरत पड़ रही है तो यह देश के लिए शर्मनाक स्थिति है। केंद्र सरकार के मंत्री गडकरी ने भी कहा है कि देश में गरीबों की संख्या लगातार बढ़ रही है और अमीरों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। इसका मतलब यह हुआ की अमीरी और गरीबी के बीच में खाई बढ़ती जा रही है। देश की सत्तर प्रतिशत संपत्ति पांच प्रतिशत अमीरों के पास है और शेष तीस प्रतिशत संपत्ति पिन्च्यान्वे प्रतिशत लोगों के पास है। ऐसा अक्सर होता है कि जब भी कहीं चुनाव होते हैं झूठे आंकड़ों की बाढ़ सी आ जाती है। सच यह है कि एक बार कोई सत्ता में आ जाए तो उसके लिए गरीबी समस्या नहीं सत्ता में बने रहने का सस्ता साधन होती है। इसलिए बयानों में गरीबी की चिंता तो होती है लेकिन वास्तविक धरातल पर कोई गरीबों को समाप्त नहीं करना चाहता है।

इन दिनों गरीबी को लेकर विशेष चर्चा चल रही है। सरकारी दावा है कि पिछले पांच वर्षों में गरीबों की संख्या कम हुई है। दावा तो यह है कि देश में गरीब केवल पांच करोड़ के आसपास रह गए हैं। बाकी लोग गरीबी की रेखा से ऊपर निकल आए हैं। विपक्ष का वाजिब सवाल है कि जब गरीबों की संख्या पांच करोड़ है तो अस्सी करोड लोगों को मुफ्त राशन कैसे दिया जा रहा है। यदि मध्य वर्ग को भी मुफ्त राशन की जरूरत पड़ रही है तो यह देश के लिए शर्मनाक स्थिति है। केंद्र सरकार के मंत्री गडकरी ने भी कहा है कि देश में गरीबों की संख्या लगातार बढ़ रही है और अमीरों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। इसका मतलब यह हुआ की अमीरी और गरीबी के बीच में खाई बढ़ती जा रही है। देश की सत्तर प्रतिशत संपत्ति पांच प्रतिशत अमीरों के पास है और शेष तीस प्रतिशत संपत्ति पिन्च्यान्वे प्रतिशत लोगों के पास है। ऐसा अक्सर होता है कि जब भी कहीं चुनाव होते हैं झूठे आंकड़ों की बाढ़ सी आ जाती है। सच यह है कि एक बार कोई सत्ता में आ जाए तो उसके लिए गरीबी समस्या नहीं सत्ता में बने रहने का सस्ता साधन होती है। इसलिए बयानों में गरीबी की चिंता तो होती है लेकिन वास्तविक धरातल पर कोई गरीबों को समाप्त नहीं करना चाहता है।

कभी सोने की चिड़िया कहा जाने वाला देश गरीबी की पहचान कैसे बना यह विचारणीय है। हजार साल की गुलामी और विदेशी आक्रमणकारियों की लूट से हम परिचित है। आजादी के बाद विभाजित भारत की जनसंख्या लगभग बतीस करोड़

थी जो अब एक सौ चालीस करोड़ है। जमीन हमारी उतनी ही है लेकिन खेत और जंगल की जमीन घटी है। इसका असर हमारे मित्र प्राणियों पर भी हुआ है। हम जमीन जंगल और प्राणियों से अपने लिए अधिकतम दोहन कर रहे हैं। फिर भी हमारी गरीबी दूर नहीं हो रही है। करोड़ों कल के बाद से सरकार को अस्सी करोड लोगों को मुक्त राशन देना पड़ रहा है। अनेक राज्य महिलाओं के खाते में प्रति माह राशि जमा कर रहे हैं। इसका परिणाम यह हो रहा है कि लोगों में काम करने की रुचि कम हो रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि मजदूर नहीं मिलते हैं जिसका असर कृषि उद्योग पर पड़ रहा है। नगरों में भी श्रमिकों का अभाव है। निर्माण कार्यों को देरी और लागत की समस्या आ रही है। इस प्रवृत्ति का असर हमारी जीडीपी यानी सकल घरेलू उत्पादन पर पड़ेगा।

सवाल यह है कि सरकारी सहायता का लाभ लेकर लोग अपने रोजगार के अवसरों से भी फायदा क्यों नहीं उठाना चाहते हैं। एक व्यापारी अधिक कमाने के बाद अगले दिन और अधिक के लिए जुट जाता है। इसके विपरीत हमारे गरीब मुफ्त राशन मिलने के बाद अपने दरिद्रता दूर करने से कतरा क्यों रहे हैं?

यहां पता चलता है कि गरीब दो तरह के हैं। एक भौतिक गरीबी, जिसमें व्यक्ति को जीवन यापन और अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करने में दिक्कत होती है। अभाव का जीवन ही गरीबी है। इसमें व्यक्ति में अपनी गरीबी से बाहर निकालने की इच्छा नहीं रहती है। वह अपनी दरिद्रता को मुफ्त सामान लेने का लाइसेंस मान लेता है। मिल जाए मुफ्त खाने को, तो कौन जाए कमाने को।भाग्य को श्रेय देते हुए वह स्वयं को अपराधबोध से मुक्त कर लेता है। किसी प्रकार की कोशिश करने में उसकी कोई रुचि नहीं होती है।

इकहत्तर के चुनाव में इंदिरा गांधी ने गरीबी हटाओ का नारा दिया था। निसंदेह यह एक राजनीतिक लाभ के लिए दिया गया नारा था। यह उन तमाम लोगों के लिए प्रेरणा जगाने वाला था जो गरीबी के कारण निराशा में थे। नारा उनमें एक विश्वास जगाने का प्रयास था कि कोशिश करने पर गरीबी से बाहर निकला जा सकता है। सपनों के जिंदा होने से ही आत्मविश्वास को बल मिलता है। उन्हें लगता है कि भविष्य में उम्मीद है यदि वे प्रयास करें तो। यदि लोग अपनी गरीबी से बाहर निकालने के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं होंगे तो वह कभी भी निकल नहीं सकेंगे। यदि लोग लंबे समय तक गरीबी में रहते हैं तो फिर गरीबी को आत्मसात कर लेते हैं। हमारे यहां तो भाग्य, भगवान और अगले जन्म की अवधारणा उन्हें यथा स्थिति में बने रहने का साहस देती है। गरीबी हटाओ का नारा कहीं ना कहीं इस मानसिकता को बदलने का प्रयास था। हालांकि वीभिन्न राजनितिक कारणों से इस नारे की आलोचना हुई। लेकिन यह सच है कि केवल भौतिक संसाधनों का होना पर्याप्त नहीं है लोगों की मानसिकता में बदलाव और बेहतर भविष्य की आकांक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। और इसमें किसी को संदेह नहीं होना चाहिए कि यह काम शिक्षा के अलावा और कोई नहीं कर सकता। गरीबों को मुफ्त राशन और लाडली राशि देने की अपेक्षा मुफ्त शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध होना चाहिए। हजारों सरकारी स्कूलों के बंद होने की खबरों के बीच यह चिंता और बढ़ जाती है।

चार करोड़ का पैचवर्क का ठेका, फिर भी एक-एक फीट गहरे गड्ढे

पांच माह पहले हुए थे वर्क आर्डर, फिर भी गड्ढों से परेशान हो रहे वाहन चालक, बसों के पट्टे भी टूट रहे

बैतूल। बैतूल-इटारसी फोरलेन की 21 किलोमीटर सडक का काम अटकने के कारण एनएचएएआई ने 4 करोड़ की लागत से इस सडक़ के पैचवर्क का ठेका किया था। इसके तहत इस फोरलेन के गड्ढे भरे जाने थे, लेकिन पांच महीने पहले काम शुरू किए जाने के बावजूद अब तक यहां 40 प्रतिशत ही काम हुआ है। अब भी इस सडक़ पर काम अधूरा है, एक-एक फीट गहरे गड्ढे यहां पर हो चुके हैं। बारिश में यह गड्ढे समझ में नहीं आते, जिसके कारण वाहन चालक दुर्घटना के शिकार हो रहे हैं। यहां तक कि इन गहरे गड्ढों में बडे वाहनों के जाने से वे खराब हो रहे हैं, उनके पट्टे टूटने से हजारों का नुकसान वाहन चालको को हो रहा है। दरअसल बैतूल-इटारसी फोरलेन के 72 किलोमीटर में से 51 किलोमीटर सडक़ बन चुकी है। वहीं 21 किलोमीटर सडक़ अधूरी है। इसका मामला अधर में है, इसका पैचवर्क नहीं किया गया है। एनएचएआई ने इसके पैचवर्क का 4 करोड़ का ठेका करते हुए लगभग पांच महीने पहले श्रीजी एसोसिएट्स को वर्क आर्डर जारी किए थे। 6 महीने में काम पूरा किया जाना था, लेकिन काम देरी से शुरू किया गया। एनएचएआई का दावा है कि 40 प्रतिशत काम हो चुका है, अभी बारिश के कारण काम रुका है। लेकिन हकीकत यह है कि इस पूरी सडक़ पर गड्ढे ही गड्ढे हैं। एक-एक फीट गहरे गड्ढे हो चुके हैं। वाहनों के इनमें जाने से इनमें खराबियां आ रही हैं। चार करोड़ की लागत से 40 प्रतिशत काम हो गया, लेकिन इसका असर यहां पर

देखने को नहीं मिल रहा है। अब काम जल्द पूरा करने की जरूरत है। इस बारे में श्रीजी एसोसिएट के गौरव थापक को फोन लगाया गया। दूरभाष पर इनसे संपर्क किया गया तो इन्होंने मोबाइल तक रिसीव नहीं किया। ना ही कोई रिटर्न कॉल किया। इस कारण उनका पक्ष उनकी ही लापरवाही से नहीं रखा जा सका है। जबकि इधर विरोध के बावजूद टोल नाके पर लगातार टोल टैक्स वसूली की जा रही है। बस ऑपरेटर योगेश पोटे ने बताया कि बसों के पहियों में गिट्टी घुसने और आगे-पीछे के पट्टे टूटने की स्थितियां बहुत बन रही हैं। दो बसें हमारी चलती हैं, इनमें खराबी लगातार आ रही है। हर बार पट्टा बदलने पर 1400 से 2600 रुपए तक खर्च होते हैं। इसी के साथ अन्य बसों के वाहन चालको जिनमें सोनू बारस्कर समेत अन्य शामिल हैं, ने बताया कि इतने गहरे गड्ढे हैं कि वाहन खराब हो रहे हैं।

51 किमी बनी सड़क, लेकिन सुविधाएं अधूरी

बैतूल से इटारसी के बीच 650 करोड़ की लागत से 72 किलोमीटर फोरलेन बनना था। 72 किलोमीटर में से 21 किलोमीटर में अभी भी काम रुका हुआ है। लेकिन जो 51 किलोमीटर सडक़ बनी है उसमें भी इंतजामात अधूरे ही हैं, सडक़ पर ट्रैफिक शुरू होने और टोल टैक्स वसूली करने के बाद अब तक यहां पर सुविधाएं अधूरी हीं हैं। इस सडक़ का अधिकांश हिस्सा अंधेरे में डूबा रहता है। कई जगहों पर क्रॉसिंग भी नहीं बनी है। जिससे लोग रांग साइड से वाहन चलाते है और दुर्घटना का शिकार बन रहे है। कुछ जगहों पर लाइट नहीं होने से लोगों को आने-जाने में दिक्कते होती है।

फोरलेन पर बनना है एनीमल अंडरपास- फोरलेन निर्माण से बाघों और अन्य वन्य प्राणियों का आवागमन प्रभावित नहीं हो, इसके लिए फोरलेन सडक़ पर दो जगह एक किलोमीटर और 400 मीटर के एनीमल अंडरपास बनाने की रिपोर्ट, राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड ने एनएचएआई को दी थी। इस रिपोर्ट के अनुसार तवा परियोजना के प्रवेश द्वार के समीप और बरेठा घाट के समीप दो जगहों पर ये अंडरपास बनाने पडेंगे, जिससे कि वन्य प्राणियों का आवागमन इस फोरलेन के बनने पर प्रभावित नहीं हो। अब इस रिपोर्ट के अनुसार ही यहां पर आगे काम होगा। इस रिपोर्ट के बाद 21 किलोमीटर में रुका हुआ काम शुरू होने के आसार भी बन गए हैं। लेकिन काम शुरू नहीं हुआ है।

इनका कहना है -

अभी बरेठा घाट पर पैच वर्क का कार्य चल रहा है। बारिश में डामर का पैच वर्क करने में परेशानी होती है, इसीलिए जैसे ही कुछ दिन के लिए बारिश बंद होती और मौसम खुला रहता है, तो पैचवर्क शुरू कर देते हैं। लगभग 40 प्रतिशत पेंचवर्क का काम हो गया है, अगले चरण में केसला एवं भौंरा के पास पैंचवर्क किया जाएगा।

- मनीष मीणा,
प्रोजेक्ट डायरेक्टर, एनएचएआई

छोटा महादेव भोपाली में करीब 15 हजार श्रद्धालुओं ने किये दर्शन

सावन माह के अंतिम मंदिरों में उमड़ी भीड़, हुए धार्मिक आयोजन

बैतूल। सावन मास के चौथे और अंतिम सोमवार को शहर के शिव मंदिरों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ रही। श्रद्धालुओं ने मंदिर पहुंचकर भगवान शिव का जल से अभिषेक किया और पूजा-अर्चना की। सबसे ज्यादा भीड़ जिला मुख्यालय से 30 किमी दूर छोटा महादेव भोपाल में देखी गई। यहां 15 हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने शिव गुफा मंदिर में पहुंचकर भगवान शिव का पवित्र जल से अभिषेक किया और सुख समृद्धि की कामना की। मंदिरों में सुबह से ही भगवान शिव की पूजा अर्चना के लिए श्रद्धालुओं के पहुंचने का क्रम शुरू हो गया था, जो देर रात तक चलते रहा। जिससे भोपाली की पहाड़ी भगवान शिव के जयकारों से गुंजायमान हो उठी। दूर दराज से आए श्रद्धालुओं ने भंडारों के स्टाल लगाए। जिसमें साबूदाना की खिचड़ी, केला, मूंगदाल की खिचड़ी आदि वितरित की गई। भीड़ को देखते हुए सारणी एसडीओपी के नेतृत्व में थाना प्रभारी अवधेश तिवारी के निर्देश में रानीपुर पुलिस बल अंबा माई से शिखर गुफा तक लगाया गया, ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो एवं किसी प्रकार की कोई अप्रिय घटना न घटे। थाना प्रभारी अवधेश तिवारी ने झरने के ऊपर चढक़र नहाने के लिए श्रद्धालुओं को मना किया। इधर रानीपुर बस स्टैंड पर भी भंडारे के इंस्टाल लगाए गए, जिसमें भोपाली जाने वाले श्रद्धालु ने भंडारा प्रसादी ग्रहण की।

मंदिरों में रही श्रद्धालुओं की भारी भीड़- सावन मास के चौथे एवं अंतिम सोमवार शहर के शिवालयों में भक्तों की भीड़ रही। शिव भक्तों ने शिवालय पहुंचकर जल, पंचामृत और दूध से भगवान शिव का अभिषेक किया। वहीं मुक्तकंठ से जयकारे लगाये। जिससे शहर के समस्त शिवालय जयकारों से गूंजायमान हो उठे। सावन माह के सोमवार को भगवान शिव की पूजा-अर्चना के लिए बेहद शुभ माना जाता है। जिसके कारण सुबह से शिवालयों में जलाभिषेक के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। वहीं मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना की गई। कई भक्तगण कावड़ लेकर छोटा महादेव भोपाली भी पहुंचे, जहां भक्तों ने कावड़ में भरे जल से मंत्रोच्चारण के साथ भगवान शिव का अभिषेक किया। इसके अलावा मंदिरों में महाआरती का आयोजन किया गया।

श्रमिकों के साथ सरकार कर रही अन्याय

भोपाल। निर्माण श्रमिक के पंजीयन के लिए जन अभियान परिषद को 2017-18 मे 20.54 करोड़ दिए गए । अनुबंध अनुसार कार्य नहीं होने पर फरवरी 2019 में विभाग द्वारा पूरे पैसे वापस देने की मांग पर अगस्त 2023 में 2.05 करोड वापस दिए और बताया कि 18.50 करोड 64220 मजदूरों के पंजीयन पर खर्च हो गये । यह जानकारी श्रम मंत्री ने विधायक पंकज उपाध्याय के प्रश्न के उत्तर में दी ।

श्रम मंत्री ने बताया कि 2011 में 17.09 लाख निर्माण श्रमिक पंजीकृत थे, जो 2018 में 26.04 लाख तथा जून 2025 तक 17.26 लाख हो गए । वर्ष 2011 से 2018 तक श्रमिकों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई , लेकिन 2019 से जून 2025 तक 8.40 लाख की गिरावट हुई । इस अवधि में दुकान स्थापना श्रमिक तथा ठेका श्रमिकों की संख्या में कई गुना वृद्धि हुई । दिसंबर 2022 में दुकान स्थापना श्रमिक 21.31 लाख से बढ़कर दिसंबर 2024 में 34.92 लाख हो गए और ठेका श्रमिक 4.26 लाख से 13.03 लाख हो गए ।

महालेखाकार की निर्माण श्रमिकों के कल्याण के लिए 2019 से 2022 की के लेखा परीक्षा में कई चौकाने वाले बिंदु उजागर हुए । केंद्र सरकार के निर्देश के बाद भी श्रमिकों के लिए बीमा योजना और पेंशन योजना लागू नहीं की गई , तथा इस मद की राशि को अन्य मद में खर्च कर दिया गया । एवं 2011 से 2016 की लेखापरीक्षा में जिन कमियों का उल्लेख किया गया था वह सारी कमियां अभी भी यथावत है । जबकि शासन का कहना है कि समस्त कमियों का निराकरण किया गया है । 2019 से 2022 की लेखापरीक्षा में 45 कंडिकाओ में से विभाग द्वारा 15 कंडिका का जवाब दिया गया जिसे महालेखाकार द्वारा नहीं माना गया । 30 कंडिकाओं के बारे में विभाग का कहना है कि कार्यवाही प्रचलन में है ।

जंगल सत्याग्रह के महानायक सरदार गंजनसिंह कोरकू की जयंती पर उमड़ा जनसैलाब

बैतूल। मध्य भारत के एकमात्र जंगल सत्याग्रह आंदोलन के महानायक आदिवासी योद्धा सरदार गंजनसिंह कोरकू की जयंती एवं सांस्कृतिक महारैली का आयोजन जोहार मिशन ट्राइबल-5 जिला बैतूल के तत्वावधान में किया गया। यह आयोजन जिला मुख्यालय पर स्थित शहीद भवन मुठवा धाम में हुआ। आयोजन की शुरुआत सरदार गंजनसिंह कोरकू के छायाचित्र पर पूजा-पाठ व माल्यार्पण के साथ की गई। इसके पश्चात एक भव्य सांस्कृतिक महारैली का आयोजन किया गया, जिसमें आदिवासी समाज के हजारों लोग शामिल हुए। रैली शहीद भवन से प्रारंभ होकर सबसे पहले रानी दुर्गावती की प्रतिमा स्थल पहुंची, जहां माल्यार्पण किया गया। इसके बाद रैली भगतसिंह चौक, कारगिल चौक होते हुए भीमराव अंबेडकर चौक पहुंची, जहां डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित किए गए और जय भीम के नारों से वातावरण गूंज उठा। रैली जब जिला अस्पताल पहुंची, तो समाजजनों ने पुनः वर्ष 2018 में दिए गए आश्वासन की याद दिलाते हुए मांग की कि जिला अस्पताल का नाम सरदार गंजनसिंह कोरकू के नाम पर किया जाए। जनसैलाब ने इस मांग को लेकर नारेबाजी की और शासन से मांग की कि इस महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी को उनका उचित स्थान और सम्मान दिया जाए। आयोजन के अंत में जोहार मिशन ट्राइबल-5 बैतूल की टीम द्वारा सभी उपस्थित अतिथियों, समाजजनों, कलाकारों, युवाओं का आभार प्रकट किया गया।

विद्यार्थियों के नामांकन में कम प्रगति पर सभी बीईओ का 7 दिवस वेतन काटे जाने के निर्देश दिए

कलेक्टर ने सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों के शीघ्र निराकरण किए जाने के दिए निर्देश

बैतूल। सोमवार को समय सीमा की बैठक में कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने केन्द्र एवं राज्य शासन की फ्लैगशिप योजनाओं की विभागवार विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने कहा कि शासन की अति महत्वाकांक्षी योजनाओं का लाभ अंतिम पात्र हितग्राहियों को मिले यह सुनिश्चित किया जाए। सभी विभाग योजनाओं में लक्ष्य को हासिल करें और विभागीय वसूली में प्रगति लाए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने शिक्षा विभाग में निशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण, निशुल्क साइकिल वितरण तथा कक्षा 9वीं, 10वीं तथा 12वीं के विद्यार्थियों के नामांकन प्रगति की ब्लॉकवार समीक्षा की। योजनाओं की समीक्षा के दौरान कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने कम प्रगति मिलने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए सभी बीईओ का 7 दिन का वेतन काटे जाने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी तहसीलदार, नायब तहसीलदार को निर्देशित किया कि जिले में निशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण, नामांकन तथा साइकिल वितरण की प्रगति का सतत निरीक्षण करें। इसके अलावा उन्होंने स्कूलों के माध्यम से जाति प्रमाण पत्र वितरण किए जाने की भी विस्तृत समीक्षा कर सभी एसडीएम को निर्देशित किया कि बीईओ के माध्यम से विद्यार्थियों के आवेदन प्राप्त कर जाति प्रमाण पत्र बनाए जाए। पीएम आवास योजना 2.0 की समीक्षा के दौरान कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने जिले में अपूर्ण आवासों की राशि हितग्राहियों से वसूल किए जाने के निर्देश सभी तहसीलदार, नायाब तहसीलदार को दिए। बैठक में कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने लंबित पेंशन प्रकरणों के निराकरण के लिए 6 अगस्त को कलेक्ट्रेट सभागार में शिविर लगाएं जाने के निर्देश

दिए। बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन, बैतूल एसडीएम मकसूद अहमद सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

सुरक्षा बीमा कराने के दिए निर्देश- कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने जीवन ज्योति बीमा योजना, सुरक्षा बीमा योजना, अटल पेंशन योजना तथा जनधन खाते की प्रगति की समीक्षा की। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बैठक में महिला एवं बाल विकास विभाग, श्रम विभाग, जनपद पंचायत और शिक्षा विभाग सहित अन्य विभागों के अधिकारियों को निर्देशित किया कि उनके अधीनस्थ सभी कर्मचारियों और उनके परिवारजनों का जीवन ज्योति बीमा तथा सुरक्षा बीमा योजना के अंतर्गत बीमा कराया जाए। कलेक्टर ने कहा कि सरकारी योजनाएं तभी प्रभावी बनती हैं जब हर पात्र व्यक्ति तक उनका लाभ समय पर और व्यवस्थित रूप से पहुंचे। अधिकारियों की जिम्मेदारी है कि वे न केवल स्वयं जागरूक रहें, बल्कि अपने अधीनस्थों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

विद्यार्थियों के लिए लगाए जाएंगे विशेष शिविर- कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बैठक में शिक्षा विभाग, उच्च शिक्षा विभाग एवं जेएच कॉलेज के संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि जिले के सभी शैक्षणिक संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के जनधन खाते तत्काल खोले जाएं। कलेक्टर ने विशेष रूप से एलडीएम और जिला शिक्षा अधिकारी को यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए कि जिन विद्यार्थियों के अभी तक बैंक खाते नहीं खुले हैं, उनकी सूची शिक्षकों के माध्यम से तैयार की जाए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने कहा कि शिक्षा केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि आर्थिक समावेशन भी इसका अहम हिस्सा है। विद्यार्थियों के जनधन खाते खुलने से भविष्य में संचालित होने वाली छात्रवृत्ति, बीमा और पेंशन जैसी योजनाओं का भी लाभ मिल पाएगा। उन्होंने निर्देशित किया कि बैंकिंग संस्थानों के सहयोग से स्कूलों और कॉलेजों में विशेष कैंप आयोजित किए जाएं, जहां विद्यार्थियों के जनधन खाते खोले जा सकें।

समय पर प्रकरणों का निराकरण न करने पर लगेगा 5 हजार का अर्थदंड

कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बैठक में राजस्व विभाग की गहन समीक्षा करते हुए अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि लंबित प्रकरणों का शीघ्र निराकरण किया जाए। उन्होंने कहा कि यदि कोई अधिकारी तय समय-सीमा में प्रकरणों का निराकरण नहीं करता है, तो उस पर 5 हजार का अर्थदंड लगाया जाएगा। कलेक्टर ने सभी तहसीलदारों और नायब तहसीलदारों को निर्देशित किया कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में लंबित प्रकरणों की सूची तैयार कर प्राथमिकता के आधार पर निराकरण सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि आमजन से जुडे मामलों को लंबित रखना प्रशासन की जवाबदेही को प्रभावित करता है, इसलिए सभी अधिकारी जिम्मेदारी के साथ कार्य करें।

सीएम हेल्पलाइन की समीक्षा कर दिए आवश्यक निर्देश

कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने सभी विभागीय अधिकारियों को सीएम हेल्पलाइन पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों का त्वरित, संतोषजनक निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने विशेष रूप से 50 दिवस से अधिक समय से लंबित शिकायतों की समीक्षा करते हुए नाराजगी व्यक्त की तथा संबंधित विभागों को शीघ्र निराकरण की दिशा में ठोस कार्रवाई करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने कहा कि सीएम हेल्पलाइन आमजन की समस्याओं के समाधान के लिए एक सशक्त माध्यम है। कलेक्टर ने यह भी निर्देशित किया कि सभी विभागीय अधिकारी नियमित रूप से सीएम हेल्पलाइन पोर्टल की समीक्षा करें और शिकायतकर्ता से संपर्क कर फीडबैक प्राप्त करें। उन्होंने कहा कि यदि शिकायत का निराकरण गुणवत्तापूर्ण नहीं पाया जाता है तो उसकी पुन- समीक्षा कर वास्तविक समाधान प्रस्तुत किया जाए।

भक्तों से मिलने शाही सवारी पर निकले भोलेनाथ

महाकाल की तर्ज पर भोपाल में आयोजन ; महाआरती के बाद निकली शोभायात्रा

भोपाल (नप्र)। सावन महीने के आखिरी सोमवार भोपाल की जनता कॉलोनी में मां अंबे सरकार मंदिर परिसर में धार्मिक आयोजन हुआ। यहां रविवार को नवमी तिथि पर पारंपरिक आस्था और आध्यात्मिक उल्लास के साथ विशाल पार्थिव शिवलिंग निर्माण किया गया।

कथावाचक शशांक शेखर महाराज के सान्निध्य में भक्तों ने 'ऊँ नमः शिवाय' की गूंज के साथ श्रद्धा पूर्वक 1,008 पार्थिव शिवलिंगों का निर्माण किया। रूद्री पाठ और शिव पंचाक्षरी मंत्रों के जाप से वातावरण शिवमय हो गया। महाराज ने भक्तों को पार्थिव शिवलिंग निर्माण के धार्मिक महत्व और पुण्य फल की व्याख्या करते हुए बताया कि यह पूजा हर मनोकामना को पूर्ण करने वाली

होती है।

महाआरती में पहुंचे सैकड़ों भक्त- विशेष श्रृंगार के बाद पार्थिव महाकाल स्वरूप शिवलिंग का षोडशोपचार विधि से पूजन किया गया। इसके बाद गूंजती घंटियों और डमरू नाद के बीच भक्तों ने महाआरती की। भक्ति से ओतप्रोत माहौल में श्रद्धालु 'हर हर महादेव' के जयघोष करते दिखे। आरती के बाद बाबा भोलेनाथ को मणिमहेश रूप में शाही सवारी पर विराजित किया गया। डमरू दल की ताल और बम-बम भोले के नारों के बीच पालकी यात्रा मंदिर परिसर से प्रारंभ होकर नगर में भव्य भ्रमण पर निकली। आकर्षक साज-सज्जा के साथ शोभायात्रा में भारी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए।

सपने से सच्चाई तक

प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के नेतृत्व में एम्स भोपाल की उल्लेखनीय प्रगति

भोपाल। एम्स भोपाल ने प्रो. (डॉ.) अजय सिंह, कार्यपालक निदेशक एवं सीईओ को भावभीनी विदाई दी एम्स भोपाल ने कार्यपालक निदेशक एवं सीईओ प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के दूरदर्शी नेतृत्व में 2022 से 2025 के बीच स्वास्थ्य सेवाओं, चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। 4 अगस्त 2025 को उनके सफल तीन वर्षीय कार्यकाल की समाप्ति के साथ, एम्स भोपाल ने उन्हें भावुक और हार्दिक विदाई दी। यह अवधि रोगी केंद्रित पहलों, डिजिटलीकरण, शैक्षणिक विस्तार और आधारभूत ढांचे के विकास के साथ संस्थागत उन्नति की उल्लेखनीय कहानी रही है। प्रो. (डॉ.) अजय सिंह का कार्यकाल एम्स भोपाल के इतिहास का एक परिवर्तनकारी अध्याय रहा है। अत्याधुनिक चिकित्सा तकनीकों को संस्थान में स्थापित करने से लेकर रोगी हितैषी पहलों को आरंभ करने और कई उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापना तक, उनका नेतृत्व समग्र संस्थागत विकास के प्रति प्रतिबद्धता से परिपूर्ण रहा। उनके मार्गदर्शन में शिक्षण, अनुसंधान और रोगी देखभाल के पीएमएसएसवाई जनादेश को सफलतापूर्वक प्राप्त किया गया, और एम्स भोपाल देश के शीर्ष 14 संस्थानों में अपनी मजबूत स्थिति दर्ज कराने में सफल रहा। इस यात्रा की प्रमुख उपलब्धियों को बियॉन्ड मेडिसिनः द एम्स भोपाल स्टोरी 2022-2025 नामक कॉफी टेबल बुक में विस्तार से दर्ज किया गया है। इस अवधि में ओपीडी में 134 प्रतिशत से अधिक वृद्धि हुई–2022 में 6.06 लाख से बढ़कर 2024 में 14.20 लाख तक पहुंचना स्वास्थ्य सेवाओं की बेहतर उपलब्धता को दर्शाता है। आईपीडी में 59.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो इनपेशेंट सेवाओं की मजबूती को दर्शाता है। सर्जिकल प्रक्रियाओं में 303 प्रतिशत और बड़ी सर्जरी में 37.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई–जो ऑपरेटिंग थिएटरों के विस्तार और डिजिटलीकरण का परिणाम है। ट्रॉमा एवं इमरजेंसी विभाग में रोगियों की संख्या में 133त्न की वृद्धि हुई, जिसे 24×7 सेवाओं की उपलब्धता, वरिष्ठ चिकित्सकों की सक्रिय उपस्थिति और डिजिटल बेड मैनेजमेंट जैसी सुविधाओं से सशक्त किया गया। लैबोरेटरी जांचों में 91 प्रतिशत और रेडियोलॉजिकल जांचों में 66 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो उन्नत निदान तकनीकों के समावेश का परिणाम है। रोगियों की सुविधा के लिए 'एम्स स्वास्थ्य ऐप' के माध्यम से सेवाओं का डिजिटलीकरण किया गया, जिसके माध्यम से 15 लाख से अधिक क्यूआर-आधारित पंजीकरण और 5.45 लाख से अधिक आभा लिंकिंग की गई।

मध्य भारत में पहली बार एम्स भोपाल में रोबोटिक सर्जरी और 3डी प्रिंट आधारित प्रक्रियाएं सफलतापूर्वक की गईं। कार्डियक, किडनी, कॉर्निया और बोन मैरो ट्रांसप्लांट सेवाएं भी प्रारंभ की गईं। संस्थान ने ट्रांसजेंडर, किशोर, जेरियाट्रिक और इनफर्टिलिटी जैसे 106 से अधिक विशेष क्लीनिकों की शुरुआत की, जिससे ओपीडी विज़िट्स में 416 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई। बोन, स्किन और मिल्क बैंक जैसी नई सेवाओं की शुरुआत भी समग्र स्वास्थ्य देखभाल को सुनिश्चित करने की दिशा में एक बड़ा कदम रही। साथ ही, 'सेंटर ऑफ हैपिनेस ' और 'स्टूडेंट वेलनेस सेंटर ' जैसी पहलें समग्र स्वास्थ्य और मानसिक कल्याण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू की गईं। शैक्षणिक क्षेत्र में बीएससी नर्सिंग की सीटों में 20त्न की वृद्धि हुई, वहीं 10 नए पीजी पाठ्यक्रम, 24 सुपर-स्पेशलिटी और 10 सहयोगी स्वास्थ्य पाठ्यक्रम जोड़े गए। वर्ष 2022 से 2025 के बीच संस्थान को रू. 62 करोड़ से अधिक की एक्सट्राम्यूरल रिसर्च फंडिंग प्राप्त हुई। टेली-आईसीयू और टेली-क्लासरूम सेवाओं की शुरुआत से परिधीय क्षेत्रों में क्रिटिकल केयर को मजबूती मिली और विशेषज्ञों की रीयल टाइम सहायता सुनिश्चित हुई। इसके अतिरिक्त, कई उत्कृष्टता केंद्रों और एनएबीएल प्रमाणित अनुसंधान प्रयोगशालाओं की स्थापना से कैंसर, संक्रामक रोग और उन्नत निदान सेवाओं को नई दिशा मिली।

विदाई समारोह के दौरान, संकाय सदस्यों ने एम्स भोपाल को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के प्रति आभार व्यक्त किया। अपने विदाई संबोधन में उन्होंने कहा, 'एम्स भोपाल मेरे लिए सिर्फ एक कार्यस्थल नहीं रहा - यह एक परिवार रहा है। मुझे इस बात पर गर्व है कि हमने मिलकर क्या कुछ हासिल किया है।' उन्होंने यह भी कहा कि वे अपने नए दायित्व में भी देश की सेवा करते रहेंगे। अब प्रो. (डॉ.) अजय सिंह उत्तर प्रदेश आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय (यूपीयूएमएस), सैफई, उत्तर प्रदेश में कुलपति के पद का दायित्व संभालेंगे। यह विश्वविद्यालय चिकित्सा, नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी और डेंटल साइंसेज जैसी सुव्यवस्थित फैकल्टीज़ के साथ-साथ बहुविशिष्ट और सुपर-स्पेशियलिटी अस्पतालों से सुसज्जित है। चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और स्वास्थ्य सेवा के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता के साथ, यूपीयूएमएस ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के स्वास्थ्य तंत्र पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव डालने के लिए अग्रसर है।

वनाधिकार पट्टों को लेकर आदिवासियों के साथ अन्याय कर रही है सरकार: नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार

भोपाल। मध्यप्रदेश विधानसभा के मानसून सत्र के दौरान आज नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने आदिवासियों के वनाधिकार दावों को निरस्त किए जाने और उन्हें बेदखल किए जाने के मुद्दे पर सरकार को आड़े हाथों लिया। ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के माध्यम से नेता प्रतिपक्ष श्री उमंग सिंघार ने यह मुद्दा मजबूती से उठाया और कहा कि सरकार की नीयत साफ नहीं है। जो आदिवासी पीढ़ियों से जंगलों पर निर्भर हैं, उनसे उनकी ज़मीन छीनकर सरकार निजी हाथों में सौंपना चाहती है।

नेता प्रतिपक्ष ने बताया कि प्रदेश में अब तक लगभग 3 लाख 22 हजार वनाधिकार पट्टे निरस्त कर दिए गए हैं, जो आदिवासी समाज के साथ खुला अन्याय है। उन्होंने कहा कि सरकार को इस नीति पर पुनर्विचार करते हुए स्पष्ट बदलाव करने की आवश्यकता है। सिंघार ने वन विभाग की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठाए।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि पिछले 10 वर्षों में 41 करोड़ पौधे लगाने का दावा किया गया है, जो प्रदेश की जनसंख्या से भी अधिक है। उन्होंने पूछा कि इतने पौधे आखिर कहां लग गए? उन्होंने आरोप लगाया कि शिवराज सरकार में नर्मदा किनारे लाखों पौधे लगाने का दावा किया गया था, लेकिन एक भी पौधा नहीं बचा।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि क्या जनता का पैसा इसी तरह बर्बाद किया जाएगा? - उमंग सिंघार ने सरकार को सुझाव देते हुए कहा कि सैटेलाइट इमेजरी और आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल कर सरकार 2005 के पहले के दावों का पता लगा सकती है। उन्होंने स्पष्ट किया कि वह आदिवासियों के जल, जंगल और जमीन के अधिकारों की रक्षा के लिए हर मंच पर संघर्ष करते रहेंगे।

संक्षिप्त समाचार

गैरतगंज में जिला स्तरीय युवा संगम मेला 12 अगस्त को

रायसेन (निप्र)। जिले के बेरोजगार युवाओं को रोजगार तथा स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने हेतु कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा के निर्देशानुसार तथा जिला पंचायत सीईओ श्रीमती अंजू पवन भदौरिया के मार्गदर्शन में दिनांक 12 अगस्त को जनपद पंचायत गैरतगंज में जिला स्तरीय युवा संगम मेले का आयोजन किया गया है। जिला रोजगार कार्यालय, जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र तथा कौशल विकास विभाग के संयुक्त तत्वधान में आयोजित यह युवा संगम मेला 12 अगस्त को प्रातः 11 बजे से अपरान्ह 04 बजे तक आयोजित किया गया है। इस युवा संगम मेले के माध्यम से युवाओं को विभिन्न कम्पनियों में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाने के साथ ही शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी भी दी जाएगी। इस जिला स्तरीय युवा संगम मेले में नवभारत फर्टीलाइजर भोपाल, वोल्वो, आयशर बगरोदा, टेस्ला ट्रांसफामर्स इंडिया लिमिटेड मण्डीदीप, अनंत स्पिनिंग मिल्स मंडीदीप, नाहर स्पिनिंग मिल मंडीदीप, इंसुलेटर्स एण्ड इलेक्ट्रिकल्स मंडीदीप, आईडब्ल्यूआई स्टेशनरी मण्डीदीप, यश्यवी ग्रुप मण्डीदीप, वर्धमान यार्न मंडीदीप, होम हेल्प सेंटर रायसेन, फोनटी फाउन्डेशन मण्डीदीप द्वारा विभिन्न पदों पर भर्ती की जाएगी। इसके लिए अनिवार्य योग्यता पदानुसार कक्षा 8वीं, 10वीं, 12वीं, स्नातक, आईटीआई, डिप्लोमा इंजीनियरिंग एवं डिग्री इंजीनियरिंग है। आयु सीमा 18 वर्ष से 35 वर्ष निर्धारित है। इस अवसर पर ऐसे अभ्यर्थी जो स्वयं का स्वरोजगार स्थापित करना चाहते हैं उन्हें विभिन्न स्वरोजगारमूलक विभागों द्वारा मार्गदर्शन दिया जाएगा और शासन की ओर से दी जाने वाली सहायता एवं योजनाओं के बारे में जानकारी दी जाएगी।

230 गांव में पहुचा डेंगू जागरूकता रथ

विदिशा (निप्र)। 11 से 31 जुलाई के बीच 230 गांव में डेंगू रथ के माध्यम से डेंगू के बारे में प्रचार-प्रसार किया गया। रथ के माध्यम से आशा कार्यकर्ता एएनएम सुपरवाइजर मेडिकल ऑफिसर आदि को डेंगू के बारे में जानकारी देते हुए आम नागरिकों को जागरूक करने हेतु प्रेरित किया गया। सीएमएचओ डॉ. रामहित कुमार के निर्देशन में 11 जुलाई से शुरू हुए प्रचार-प्रसार अभियान के तहत जिले के विदिशा ब्लॉक पीपलखेडा, लटेरी, सिरोंज, शमशाबाद, नटेरन, ग्यारसपुर, कुरवाई, बासौदा एवं त्योंदा के 230 गांव , में डेंगू रथ का भ्रमण कराया गया। डेंगू रथ के माध्यम से ऑडियो का भी सहयोग लिया, गांव-गांव, वार्ड-वार्ड में डेंगू रथ पहुंचकर घरों के आसपास टायर कूलर पानी मिट्टी के बर्तन में से पानी को पलटी कर कर उसमें दवा का छिड़काव किया गया। इस दौरान पंपलेट फोल्डर एवं नारों के माध्यम से ग्रामीणों में जागरूकता फैलाई गई। 31 जुलाई 2025 डेंगू निरोधक माह जुलाई का समापन प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र अहमदपुर में किया गया।

स्वास्थ्य विभाग द्वारा हेपेटाइटिस जांच एवं उपचार शिविर आयोजित

सीहोर (निप्र)। स्वास्थ्य विभाग द्वारा राष्ट्रीय वायरल हेपेटाइटिस नियंत्रण कार्यक्रम के तहत सीहोर स्थित आदित्य इंफॉर्मेशन मैनेजमेंट सोसायटी सेंटर पर हेपेटाइटिस जांच एवं उपचार शिविर आयोजित किया गया। शिविर में चिकित्सकों द्वारा 76 सदस्यों हेपेटाइटिस बी एंड सी और एचआईवी सिपलिस की जांच की गई और उपचार प्रदान किया गया।

शहर की सड़कों के ब्लैक स्पॉट का कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक ने किया निरीक्षण

नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना एवं पुलिस अधीक्षक डॉक्टर गुरकरण सिंह ने शुक्रवार को शहर के विभिन्न स्थलों के सड़कों के ब्लैक स्पॉट का निरीक्षण किया। सड़कों के ब्लैक स्पॉट में सुधार कार्य करने के निर्देश दिए। कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना ने श्री कुंज गार्डन के पास स्थित ब्लैक स्पॉट, एसपीएम रेलवे क्रॉसिंग बुधनी रोड के ब्लैक स्पॉट का निरीक्षण किया एवं लोक निर्माण विभाग के अधीक्षक यंत्री श्री अनुराग सिंह को निर्देश दिए की तत्परता से सड़कों के इन ब्लैक स्पॉट को सुधार कर ठीक करें ताकि किसी भी प्रकार की सड़क दुर्घटना एवं वाहन दुर्घटना से बचा जा सके। कलेक्टर ने जिला परिवहन अधिकारी को निर्देश दिये कि वह शहर में स्थित और भी ब्लैक स्पॉट को प्राथमिकता से चिन्हित करें। निरीक्षण के दौरान अनुविभागीय राजस्व अधिकारी श्रीमती नीता कोरी, डीएसपी ट्रैफिक श्री मिश्रा, नगर पालिका अधिकारी श्रीमती हिमेश्वरी पटले, जिला परिवहन अधिकारी श्रीमती रिंकू शर्मा एवं संबंधित अधिकारी गण उपस्थित थे।

यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों पर बिना दबाव करें सख्त से सख्त कार्रवाई

नर्मदापुरम (निप्र)। सुप्रीम कोर्ट की सड़क सुरक्षा समिति के अध्यक्ष और सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री अभय मनोहर सप्रे ने शनिवार को अपने नर्मदापुरम प्रवास के दौरान कलेक्टर कार्यालय के सभा कक्ष में सड़क सुरक्षा से जुड़े मामलों की समीक्षा की। न्यायमूर्ति श्री सप्रे ने जिला सड़क सुरक्षा समिति के साथ बैठक कर जिले में पिछले 5 वर्षों में हुए हादसों उनके कारण तथा हादसों के दौरान हुई मृत्यु की विस्तार पूर्वक समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने पिछले वर्षों में सड़क सुरक्षा समिति की आयोजित बैठकों की जानकारी भी ली तथा उन बैठकों के दौरान सड़क सुरक्षा से जुड़े हुए मामलों में क्या सुधार कार्य किए गए हैं इसकी जानकारी भी ली। बैठक के दौरान कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना द्वारा बताया गया कि पूर्व में आयोजित बैठकों के दौरान 25 से अधिक ब्लैक स्पॉट्स को चिन्हित किए गए थे उन्हे खत्म कर दिया गया है। केवल एक ब्लैक स्पॉट शेष है जिसे खत्म करने के लिए बनाई गई कार्ययोजना पर काम किया जा रहा है। न्यायमूर्ति सप्रे ने अधिकारियों से कहा, आप सभी को यह सुनिश्चित करना है कि

हादसों को रोकने के लिए सड़कों में किए जाएं तकनीकी सुधारः न्यायमूर्ति अभय मनोहर

ब्लैक स्पॉट्स को खत्म किए जाने के लिए तैयार करें विशेष कार्य योजना

सड़क हादसे क्यों हो रहे हैं, उनके कारण क्या हैं और उन्हें कैसे रोका जा सकता है। इसके लिए व्यापक कार्य योजना बनाकर उसे गंभीरता से क्रियान्वित करें। 6 माह बाद सड़क हादसों में मृत्यु दर तथा हादसों की संख्या का फिर से आकलन किया जायेगा। इस अवधि में प्रयास करें कि सड़क हादसों में न्यूनतम मृत्यु हो अथवा मृत्यु दर को शून्य ही कर दिया जाए। बैठक के दौरान कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना, पुलिस अधीक्षक डॉक्टर गुरकरन सिंह, संयुक्त कलेक्टर श्रीमती संपदा सराफ, सिटी मजिस्ट्रेट श्री बृजेंद्र रावत, एडिशनल एसपी श्री आशुतोष मिश्रा, क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी श्रीमती रिंकू शर्मा, डीसीपी ट्रैफिक श्री संतोष मिश्रा सहित अन्य संबंधित अधिकारी गण उपस्थित रहे। न्यायमूर्ति श्री सप्रे ने कहा कि सड़क हादसों में जनहानि होना बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि अगर हम मानवीय दृष्टिकोण से देखें तो सड़क हादसों में केवल पीड़ित ही नहीं बल्कि उसका पूरा परिवार भी इस विपत्ति के कारण कष्टों का सामना करता है। बैठक के दौरान न्यायमूर्ति श्री सप्रे ने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मृत्यु के लिए बिना हेलमेट के यात्रा, बिना सीट बेल्ट के यात्रा, निर्धारित गति सीमा से अधिक गति से गाड़ी चलाना तथा ड्रिंक एंड ड्राइव जैसे कारण भी प्रमुख है। उन्होंने कहा इन सब की अतिरिक्त इंजीनियरिंग फैलियर भी सड़क हादसों को आमंत्रित करने की एक प्रमुख वजह है। उन्होंने कहा कि खराब इंजीनियरिंग तथा गुणवत्ता हीन सड़कों के निर्माण के लिए संबंधितों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई भी की जाना सुनिश्चित किया जाए। न्यायमूर्ति श्री सप्रे ने कहा कि मध्य प्रदेश सड़क हादसों की संख्यात्मक तुलना में पूरे देश में दूसरे नंबर पर है। उन्होंने इस स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जाना बहुत आवश्यक है। न्यायमूर्ति श्री सप्रे ने कहा कि सड़क पर चलने वाले हर एक व्यक्ति का जीवन बहुत ही बहुमूल्य है। समीक्षा के दौरान उन्होंने कहा कि किसी अन्य की गलती से सड़क पर चलने वाले निर्दोषों की मृत्यु होना या जीवन भर के लिए हादसे की विभीषिका झेलना न्यायसंगत नहीं है। इस स्थिति को सुधारना हमारी साझा जिम्मेदारी है। न्यायमूर्ति श्री सप्रे ने समीक्षा बैठक के दौरान कहा कि सीमित जनसंख्या वाले नगरों में कुछ हादसों में हेलमेट न होने के कारण मृत्यु होना भी बहुत गंभीर विषय है। उन्होंने कहा कि आम जनमानस के बीच यह जागरूकता लाई जाए कि हेलमेट लगाने से दुर्घटनाओं में जनहानि को रोका जा सकता है। उन्होंने कई पूर्व दुर्घटनाओं का उदाहरण देते हुए बताया कि तुलनात्मक आंकड़े दिखाते हैं कि हेलमेट न लगाने वालों से हेलमेट लगाने वाले व्यक्तियों के दुर्घटना के बाद बचने के अवसर अधिक होते है। न्यायमूर्ति श्री सप्रे ने कहा कि जन जागरूकता अभियान के माध्यम से हेलमेट की उपयोगिता लोगों को बताएं। उन्होंने कहा कि समय समय पर हेलमेट वितरण भी करवाया जाए। सड़क हादसों में घायल होने वाले तथा जान गंवाने वाले लोगों में सबसे अधिक 20 से 45 आयु वर्ग के युवा होते हैं इसीलिए विशेष तौर पर युवाओं को हेलमेट ना पहने एवं अधिक गति से वाहन चलाने के दुष्प्रभावों से अवगत कराने के लिए उन्हें जागरूक करें। न्यायमूर्ति श्री सप्रे ने कहा कि ड्रिंक एंड ड्राइव तथा यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध बिना किसी दबाव के सख्त से सख्त कार्यवाही की जाना भी सुनिश्चित करें।

आईआईटी खड़गपुर और एम्स भोपाल के बीच एमओयू

स्टूडेंट्स व मरीजों की मानसिक स्थिति समझने करेंगे रिसर्च, विशेषज्ञ बोले- दिमाग बंदर की तरह चंचल, कंट्रोल जरूरी

भोपाल (नप्र)। कैंसर से जूझते बच्चे हों या मेडिकल छात्रों का तनाव, एम्स भोपाल में खुला सेंटर ऑफ हैप्पीनेस उनके जीवन में मुस्कान लौटाने की नई उम्मीद बन गया है। सेंटर में एक्सपर्ट मानसिक रूप से हारे हुए, डिप्रेशन और उदासी में डूबे व्यक्ति की जिंदगी में खुशियों की रोशनी और मानसिक तनाव कम करने में मदद करते हैं। जिससे वे अपनी मूल समस्या का अधिक प्रभावी रूप से सामना कर सकें। अब इसे एक कदम आगे बढ़ाते हुए स्टूडेंट्स से लेकर मरीजों की मानसिक स्थिति को समझने और उसे बेहतर तरीके से संभालने के तरीके खोजने के लिए आईआईटी खड़गपुर और एम्स भोपाल साथ मिलकर रिसर्च करेंगे। इसके लिए एम्स के सेंटर ऑफ हैप्पीनेस और आईआईटी के रेखी सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर साइंस ऑफ हैप्पीनेस के बीच MOU हुआ है।

विशेषज्ञ बोले- दिमाग बंदर की तरह चंचल- आईआईटी खड़गपुर के रेखी सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर साइंस ऑफ हैप्पीनेस के चेयरमैन डॉ. सतिंदर सिंह रेखी ने 'हू रनिंग युअर लाइफ, यू

आर युअर संकी ब्रेन' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा, मंकी माइंड का मतलब है हमारा दिमाग बंदर की तरह चंचल होना। यह शब्द बौद्ध दर्शन से आया है। इसका मतलब है ऐसा मन जो बार-बार इधर-उधर भटकता है, एक विचार से दूसरे विचार पर कूदता रहता है, जैसे बंदर पेड़ों की डालियों पर कूदता है। यह स्थिति तब होती है जब हमारा मन प्रशिक्षित नहीं होता और ध्यान केंद्रित करने की आदत नहीं होती।

यह सेंटर समय की मांग- एम्स के निदेशक डॉ. अजय सिंह ने कहा, डॉक्टर, मेडिकल छात्र और पैरामेडिक्स अक्सर अत्यधिक मानसिक तनाव में काम करते हैं। खुशी का वैज्ञानिक दृष्टिकोण उन्हें आत्मबल, आशावाद और संतुलन प्रदान करता है। यह पहल समय की मांग ही नहीं, बल्कि आवश्यकता भी है।

सेंटर ऑफ हैप्पीनेस के 2 साल पूरे- एम्स में सेंटर ऑफ हैप्पीनेस की स्थापना 4 अगस्त 2023 को हुई थी। विशेषज्ञों के अनुसार, खुशी एक विज्ञान है और इसका अभ्यास करने की आवश्यकता है। मेडिकल संस्थानों में डॉक्टरों, मेडिकल छात्रों और पैरामेडिक्स को काम की प्रकृति, लंबी ड्यूटी और विस्तृत मेडिकल पाठ्यक्रमों के कारण अत्यधिक तनाव का सामना करना पड़ता है। मरीज और उनके परिजन भी मानसिक, शारीरिक और आर्थिक बोझ से जूझते हैं, जिससे बीमारी से लड़ने की उनकी क्षमता कम हो जाती है। बीते दो साल से यह सेंटर इन्हीं समस्याओं को दूर करने का काम कर रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार, यहां होने वाली गतिविधियों से सकारात्मक मनोविज्ञान, खुशी और भावनात्मक संतुलन को बढ़ावा मिल रहा है।

नाट्य शैली से दूर की भावनात्मक समस्याएं- सेंटर ऑफ हैप्पीनेस ने शुरुआत में एमबीबीएस के नए छात्रों के लिए ओरिएंटेशन सत्र आयोजित किए। जिनमें खुश रहने के महत्व और उसके जीवन पर प्रभाव को समझाया गया।

सेंटर कम करता है इलाज का तनाव- कैंसर पीड़ित बच्चों और उनके परिजनों, साथ ही ब्रेस्ट कैंसर सर्वाइवर के लिए भी विशेष सत्र आयोजित किए गए। इनका उद्देश्य था उपचार के दौरान मानसिक तनाव को कम करना और आशावाद बनाए रखना। मरीजों ने बताया कि इन सत्रों से उन्हें भावनात्मक सहारा मिला और उनका आत्मविश्वास बढ़ा।

कृषि कार्यो की समीक्षा

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के द्वारा हर रोज कृषि उपार्जन कार्यो की गहन समीक्षा की जा रही है। कलेक्टर द्वारा मुख्यतः खाद बीज के अलावा मूंग उपार्जन समेत कृषि विभाग के माध्यम से संचालित केन्द्रीय और राज्य स्तरीय योजनाओं व कार्यक्रमों की अघतन स्थितियों का जायजा लिया गया है। कलेक्टर श्री गुप्ता ने समीक्षात्मक बैठक में कृषि विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया है कि जिले की प्रगतिशील किसानों पर आधारित जानकारी पुस्तिका के रूप में प्रकाशित की जाएं। उन्होंने कहा कि ऐसे किसान जिन के द्वारा शासन की कृषि मुखी योजनाओं का लाभ लेकर देश- प्रदेश स्तर पर ख्याति हासिल की है। उन्होंने नवाचारों के साथ-साथ औसत से अधिक उत्पादन पैदावार करने वाले कृषकों को प्रेरणा स्रोत के रूप में अन्य किसानों तक जानकारी पहुंचाई जाएं। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने समीक्षा बैठक में निर्देश दिए हैं किसानों की समस्यायों के प्रति गंभीर होकर सुनवाई कर निराकरण कराना सुनिश्चित करें।

सेम्पल : कलेक्टर श्री गुप्ता ने निर्देश दिए हैं कि कृषि संबंधी जो भी सेम्पल चाहे वह खाद बीज या फिर अन्य विधा का हो उन सब की जानकारी जिले के किसान भाइयों को सुगमता से मिल सकें ऐसी प्रक्रिया इजाद करें ताकि अमानक स्तर की समाग्री की ठगी से बच सकें इसी प्रकार जिले की सभी कृषि उपज मण्डियों में आने वाले किसानों को भी जानकारी सुगमता से मिल सकें इसके लिए मंडी के विभिन्न सूचना पटलों पर और मंडी के किसानों की केन्टीन में भी प्रदर्शित कराने की व्यवस्था क्रियान्वयन करने के निर्देश मंडी सचिव नोडल अधिकारी को दिए गए हैं।

तौल कांटा : कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने मंडी सचिव को निर्देशित किया है कि जिले की सभी मंडियों में तौल कांटों की संख्या बढ़ाई जाएं। उन्होंने कहा शीघ्र ही प्रस्ताव तैयार किए जाएं। इन तौल कांटों की क्षमता सौ टन तक की हो ताकि किसानों को अपनी उपज की तुलाई के लिए मंडियों से बाहर नहीं जाना पड़े। कलेक्टर चेम्बर में संपन्न हुई इस बैठक में कृषि विभाग के उप संचालक के एस खपेडिया, सहायक संचालक महेंद्र सिंह ठाकुर, मंडी सचिव श्रीमती नीलकमल वैघ, मार्कफेड की जिला प्रबंधक श्रीमती राखी रघुवंशी के अलावा अन्य विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

प्रावधानित मात्रा से अधिक मात्रा में कृषकों को यूरिया बेचने पर 12 उर्वरक विक्रेताओं के विरुद्ध कार्यवाही

विदिशा (निप्र)। जिले में उर्वरकों की कालाबाजारी की रोकथाम एवं कृषकों को आवश्यकता अनुसार उर्वरक उपलब्ध हो को ध्यानगत रखते हुए कृषि विभाग का जिला स्तरीय जांच दल के द्वारा सतत निरीक्षण एवं कार्रवाई की जा रही है। इसी कड़ी में उर्वरक विक्रेताओं द्वारा जून 2025 में कृषकों को कितना-कितना यूरिया विक्रय किया गया इसकी जांच जिला स्तरीय जांच दल द्वारा की गई। जांच में पाया गया कि जिले के 02 डबललॉक केन्द्रों, 08 सहकारी समितियॉ एवं 02 निजी उर्वरक विक्रेताओं द्वारा कृषकों की आवश्यकता से अधिक यूरिया विक्रय किया गया है अर्थात् एक ही कृषक को उसके धारित रकबे के लिए आवश्यक यूरिया की मात्रा से अधिक मात्रा में यूरिया बेचा गया। जिससे अन्य कृषकों के लिए यूरिया की उपलब्धता कम हुई और उन्हें यूरिया क्रय करने हेतु भटकना पड़ा। उर्वरक विक्रेताओं का यह कृत्य फर्टिलाइजर कंट्रोल ऑर्डर 1985 तथा आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 की धारा 3 के विरुद्ध है। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने जांच दल की रिपोर्ट के आधार पर इन उर्वरक विक्रेताओं के उक्त कृत्य पर संज्ञान लेते 12 उर्वरक विक्रेताओं पर रुपए पांच-पांच हजार रुपये का अर्थदंड अधिरोपित किया है। जिन 12 उर्वरक विक्रेताओं पर अर्थ दंड अधिरोधित किया गया है उनमें में. खाद वितरण केन्द्र (डबललॉक) कुरवाई, में. खाद वितरण केन्द्र (डबललॉक) विदिशा, में. प्राथमिक साख सहकारी समिति मर्या. करैया, में. प्राथमिक साख सहकारी समिति मर्या. दीपनाखेडा, में. प्राथमिक साख सहकारी समिति मर्या. पैरवासा, में. प्राथमिक साख सहकारी समिति मर्या. सेऊ, में. प्राथमिक साख सहकारी समिति मर्या. पीपरहूँठा, में. प्राथमिक साख सहकारी समिति मर्या. कॉलिंजा, में. प्राथमिक साख सहकारी समिति मर्या. अहमदपुर, में. प्राथमिक साख सहकारी समिति मर्या. निशोबर्री, में. पीतलिया सीड्स एण्ड फर्टिलाईजर्स विदिशा, में. मुकेश पंथी, नयागोला नटेरन शामिल हैं जिन्हें अर्थ दंड की राशि 7 दिवस के अन्दर शासकीय मद में जमा कर विभाग को सूचना देनी होगी।

विश्व स्तनपान सप्ताह का आयोजन सात तक

विदिशा (निप्र)। विश्व स्तनपान सप्ताह का आयोजन एक अगस्त से शुरू हो गया है जो सात अगस्त तक क्रियान्वयन किया जाएगा। महिला एवं बाल विकास विभाग की जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती विनीता लोढ़ा ने बताया कि विश्व स्तनपान सप्ताह अंतर्गत विभाग के माध्यम से आयोजन शुरू हुआ।आज समस्त पर्यवेक्षको का जिला कार्यक्रम अधिकारी , महिला एवं बाल विकास विभाग, श्रीमती विनीता लोढा की उपस्थिति में शिशु स्वास्थ्य एवं ग्रोथ डेवलपमेंट विषय पर का एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में अजीम प्रेम जी फाउंडेशन के के प्रशिक्षकों द्वारा बच्चों के पालन पोषण के संबंध में समाज में फैली भ्रांतियों पर सरल भाषा में समझाया गया। महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान एवं डिलीवरी उपरांत बच्चों को स्तनपान के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गई साथ ही जिला कार्यकम अधिकारी द्वारा पर्यवेक्षकों को कार्य के दौरान सामने आने वाले प्रश्न पूछे गए प्रश्नों पर सरलता से जानकारी दी गई।

किशोर न्याय अधिनियम, पॉक्सो एक्ट एवं फॉरेंसिक विषयों पर विशेष प्रशिक्षण सत्र का आयोजन हुआ

विदिशा (निप्र)। पुलिस कंट्रोल रूम, विदिशा में किशोर न्याय अधिनियम 2015, पॉक्सो एक्ट एवं फॉरेंसिक मुद्दों पर आधारित समस्या एवं समाधान विषयक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा प्रधान मजिस्ट्रेट, किशोर न्याय बोर्ड एवं पुलिस अधीक्षक, विदिशा के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्देश्य किशोरों से संबंधित अपराधों की विवेचना में पुलिस अधिकारियों, विशेष किशोर पुलिस इकाई, बाल कल्याण पुलिस अधिकारी, वन स्टॉप सेंटर कर्मी एवं न्यायिक क्षेत्र से जुड़े अन्य अधिकारियों को विधिक व व्यवहारिक जानकारी देना रहा। कार्यक्रम के दौरान प्रधान मजिस्ट्रेट श्रीमती शिवांगी श्रीवास्तव द्वारा किशोर न्याय की संवेदनशील प्रक्रिया पर विशेष प्रकाश डाला गया एवं किशोर न्याय अधिनियम के अंतर्गत बालकों के संबंध में चालानी कार्रवाई निर्धारित अवधि जो की दो माह अधिकतम है। उसमें पूर्ण करने हेतु विवेचकों को निर्देशित किया तथा फॉरेंसिक सैंपल कलेक्शन व विवेचना के दौरान या किशोर न्याय बोर्ड में जांच प्रक्रिया के दौरान आ रही समस्याओं पर प्रकाश डाला तथा इस संबंध में विवेचकों को जघन्य मामलों में विवेचना करते समय अधिक सतर्कता बरतने हेतु निर्देशित किया। पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी ने प्रशिक्षण सत्र के दौरान बताया कि पॉक्सो एवं किशोर न्याय अधिनियम से जुड़े मामलों में विवेचक चैन ऑफ कस्टडी का विशेष ध्यान रखें, क्योंकि यदि साक्ष्य की शुद्धता में त्रुटि हुई तो पीड़ित को न्याय नहीं मिल पाएगा।

शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल ने जिला स्तरीय पर्यटन क्विज में पाया प्रथम स्थान

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में बैतूल जिले का करेगी प्रतिनिधित्व

बैतूल (निप्र)। मप्र सरकार पर्यटन विभाग, स्कूल शिक्षा विभाग और जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में जिला स्तरीय पर्यटन क्विज का आयोजन किया गया। जिसमें शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अब विद्यालय की टीम राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में बैतूल जिले का प्रतिनिधित्व करेगी। जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के सहायक संचालक भूपेंद्र वरकडे ने बताया कि जिले से 197 विद्यालयों के 591विद्यार्थियों का पंजीयन था, जिसमें से 171 विद्यालयों के 513 विद्यार्थियों और शिक्षकों ने क्विज में सहभागिता की। क्विज के प्रारम्भ में सुबह 10 से 12 बजे तक लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें 3-3 विद्यार्थियों की 171 टीमों ने सहभागिता की। विद्यार्थियों को 100 प्रश्नों का प्रश्न पत्र हल करने दिया गया। प्रश्न पत्र में विद्यार्थियों से मप्र के ऐतिहासिक, भौगोलिक और पर्यटक स्थलों से सम्बंधित प्रश्न पूछे गए। उन्होंने बताया कि लिखित परीक्षा के परिणाम की घोषणा के पश्चात प्रथम 6 टीमों ने मल्टी मीडिया क्विज में भाग लिया। क्विज के परिणाम के अनुसार क्विज की प्रथम विजेता शा. उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल 315 अंक, द्वितीय स्थान पर शासकीय हाई स्कूल बाकूड 240, तृतीय स्थान पर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सोनोरा 210 अंक, चतुर्थ स्थान पर गुरुकुल विद्यालय मुलताई 195 अंक, पंचम स्थान पर कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल गंज 160 अंक एवं छठवें स्थान पर ओजस विद्यालय आमला ने 150 अंक के साथ प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त किया। कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ.अनिल कुशवाहा जिला शिक्षा अधिकारी जिला बैतूल एवं सहायक अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक श्री सुबोध शर्मा द्वारा विजेता टीमों को बधाई दी गई। इस दौरान टीमों कों मप्र पर्यटन विभाग द्वारा मैडल और शानदार टूर पैकेज कूपन दिए गए।

जिला स्तरीय पर्यटन क्विज में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल की टीम राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में बैतूल जिले का प्रतिनिधित्व करेगी। इस अवसर पर पुरस्कार वितरण समारोह के सहायक संचालक श्री भूपेंद्र वरकडे, मप्र पर्यटन विभाग के श्री एस अवस्थी, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बासंपानी के प्राचार्य श्री नागेश पवार, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बडोरा के प्राचार्य श्री दिलीप डाबड़े, शासकीय उच्चतरमाध्यमिक विद्यालय गंज के प्राचार्य ललित कुमार लिलोरे उपस्थित थे। कार्यक्रम में श्री विनोद लिखितकर, श्री हरिओम बादशाह एवं प्राचार्य , हाई स्कूल मलकापुर प्राचार्य संजय गुहे, स्कूल जासोदी श्री बनाहित, मॉडल स्कूल घोड़ाडोंगरी श्री रामेश्वर नागले का सहयोग प्राप्त हुआ।

विकसित भारत के लिए मानव संपदा का अवदान विषय पर कार्यशाला का आयोजन

सीहोर (निप्र)। सीहोर स्थित प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस में विकसित भारत के लिए मानव संपदा का अवदान विषय पर एक दिवसीय राज्य-स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में जनभागीदारी अध्यक्ष श्री सुदीप प्रजापति ने कहा कि विकसित भारत के लिए शिक्षकों की भूमिका अहम है, शिक्षकों को छात्रों की सोच इस प्रकार से विकसित करना चाहिए कि वह अपने देश के विकास में सहयोगी बने। कार्यशाला के द्वितीय सत्र में जिले के सभी शासकीय कॉलेजों के प्राचार्य एवं आइक्यूएसी समन्वयको द्वारा उच्च शिक्षा विभाग की नीतियों को भारत के विकास के लिए और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुझाव भी दिए गए। कार्यशाला में डॉ. मनोज कुमार सिन्हा, डॉ. हरीश व्यास, डॉ. सुयश कुमार, प्राचार्य डॉ रोहिताश्व कुमार शर्मा सहित अन्य शिक्षकगण उपस्थित थे।

सुविख्यात गायक किशोर ने जीवन के हर रंग से साक्षात्कार कराया : सीएम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मध्यप्रदेश के गौरव, सुविख्यात पार्श्वगायक एवं अभिनेता किशोर कुमार की जयंती पर उनका पुण्य स्मरण किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जीवन के हर रंग से साक्षात्कार कराते खंडवा की माटी के लाल स्व. किशोर कुमार के कालजयी गीत और सदाबहार आवाज का जादू आज भी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि किशोर कुमार ने आपातकाल के दौर में तत्कालीन निरंकुश सत्ता का प्रतिकार करते हुए राष्ट्र सेवा के प्रति समर्पण दिखाया था।

मुख्यमंत्री ने झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन पर दुख व्यक्त किया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिबू सोरेन के निधन पर गहन दुख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्व. सोरेन ने झारखंड राज्य के विकास और जनजातीय समुदाय के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से दिवंगत की पुण्यात्मा की शांति एवं शोकाकुल परिजन और समर्थकों को यह दुःख सहन करने का संबल प्रदान करने के लिए प्रार्थना की है।

रईस खान के अवैध निर्माण को तोड़ा, पुलिस बल तैनात

बुरहानपुर/नेपानगर (नप्र)। नावरा निवासी भाग्यश्री धानुक की लव जिहाद में गला रेत कर हत्या करने वाले आरोपित शेख रईस के अवैध निर्माण पर सोमवार दोपहर प्रशासन का बुलडोजर चला। एसडीएम भागीरथ वाखला, थाना प्रभारी ज्ञानू जायसवाल, नगर पालिका के अधिकारी और नेपा मिल के संपदा विभाग के अधिकारी संयुक्त रूप से दोपहर तीन बजे के आसपास पुलिस बल के साथ पहुंचे थे।

साथ ले जाए गए बुलडोजरों के माध्यम से रेलवे ओवरब्रिज के पास किए गए अतिक्रमण और अवैध रूप से बनाए गए टीनशेड को ध्वस्त कर दिया। इसके अलावा संजय नगर के मकान में किया गया अवैध निर्माण और आंगनबाड़ी के पीछे किया गया अतिक्रमण भी गिराया गया है। मातापुर स्थित दुकान किराए की होने के कारण उस पर कार्रवाई नहीं की जा सकी। कार्रवाई के दौरान बड़ी संख्या में आसपास के लोग भी मौजूद थे। शाम पांच बजे के आसपास कार्रवाई समाप्त हुई। ज्ञात हो कि भाग्यश्री की हत्या के बाद स्वजन और हिंदूवादी संगठनों ने रईस के अवैध अतिक्रमण पर बुलडोजर कार्रवाई की मांग की थी। सांसद ज्ञानेश्वर पाटिल ने भी इसे लेकर अधिकारियों को निर्देश दिए थे। प्रशासन की इस कार्रवाई पर लोगों ने संतोष जताया है।

नंदी रथ पर श्री उमा-महेश स्वरूप में निकले महाकाल

उज्जैन में सवारी में लोकनृत्यों की प्रस्तुति; दो लाख से ज्यादा भक्त पहुंचे

उज्जैन/खंडवा (नप्र)। श्रावण माह के चौथे सोमवार पर उज्जैन में भगवान महाकाल की सवारी निकाली गई। मंदिर के सभा मंडप में भगवान की पालकी का पूजन किया गया। मंदिर के मुख्य द्वार पर सशस्त्र पुलिस बल के जवानों ने पालकी में विराजित भगवान को सलामी दी।

पालकी में श्री महाकालेश्वर श्री चंद्रमोलेश्वर स्वरूप में, गजराज पर श्री मनमहेश रूप, गरुड रथ पर श्री शिव तांडव प्रतिमा, नंदी रथ पर श्री

उमा-महेश जी स्वरूप में दर्शन देने निकले। सवारी के साथ घुड़सवार पुलिस दल, सशस्त्र पुलिस बल, होमगार्ड के जवान, भजन मंडली, झांझ मंडली के सदस्य व पुलिस बैंड भी शामिल हो रहे हैं। इससे पहले सोमवार तड़के ढाई बजे भस्म आरती के दौरान कपाट खोले गए। भगवान महाकाल को जल अर्पित कर भस्म रमाई गई। पंचामृत अभिषेक पूजन कर भगवान महाकाल का भांग चंदन और आभूषणों से राजा स्वरूप श्रृंगार किया गया। दोपहर तक दो लाख से ज्यादा श्रद्धालु भगवान महाकाल के दर्शन कर चुके हैं। इससे पहले श्रावण माह के पहले सोमवार पर 2.5 लाख, दूसरे पर 3 लाख से अधिक श्रद्धालु पहुंचे थे। तीसरे सोमवार को 4 लाख लोग पहुंचे थे।

आदिवासी समाज ने निकाली कांवड़ यात्रा

नर्मदापुरम में दिखी असम के बिहु, ओडिशा के डाकामारा, छत्तीसगढ़ के कछार नृत्य की झलक

नर्मदापुरम (नप्र)। नर्मदापुरम में सावन के चौथे और अंतिम सोमवार को शिवालयों में भक्तों की भारी भीड़ देखी गई।

श्रद्धालु सुबह से ही दूध, दही, बिलपत्र और जल से भगवान शिव का अभिषेक कर रहे हैं। कांवड़ लेकर श्रद्धालु नर्मदा नदी से जल भरकर विभिन्न शिव मंदिरों में पहुंच रहे हैं। आदिवासी शिव मंदिर समिति द्वारा विशाल कांवड़ यात्रा निकाली गई, जिसमें हजारों महिला-पुरुष शामिल हुए। यह यात्रा सर्किट हाउस घाट से शुरू होकर इंदिरा चौक, सतरास्ता, अंबेडकर चौक और ओवर ब्रिज होते हुए आदिवासी शिव मंदिर एसपीएम गेट नंबर 3 तक पहुंची। यहां भगवान महादेव का नर्मदा जल से जलाभिषेक किया गया।

असम, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, गुजरात से आए कलाकारों ने दिखाया संस्कृति का रंग- कांवड़ यात्रा में देशभर से आए आदिवासी कलाकारों ने पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत किए। असम का बिहू, छत्तीसगढ़ का कछार, उड़ीसा का डाकामारा, झाबुआ का भगोरिया और गाडरवाड़ा का आदिवासी नृत्य यात्रियों के आकर्षण का केंद्र रहे। जगह-जगह पर इन कलाकारों की प्रस्तुतियां देख बड़ी संख्या में लोग जुटे।

Mantra of success

राजेश शर्मा

पेड़ - पौधों में अपना जीवन ढूंढती आशासिंह राजपूत

पति की असमय मौत के बाद पेड़ - पौधों को ही बना डाला 'प्राण वायु'

ये उनकी सांसों का हर सुमन पेड़ - पौधे है... मानों 'प्राण वायु' किसी तपस्वी की भांति यह धरा हरीतिमा की चादर ओढ़कर खुबसूरत बने बस यही संकल्प है - यही आराधना है उस तपस्विनी की.... भीषण गर्मी , बारिश हो या ठंड उनकी भोर और शाम तो ये पल्लवित और पुष्पित होते पेड़ पौधें है... मानों पेड़ - पौधों में ही अपना जीवन ढूंढती है किसी साधक की मानिंद...

इरादे बुलंद हो तो कुछ भी नामुमकिन नहीं

बाबा धारनाथ की पावन धरा - राजा भोज की ऐतिहासिक धारा नगरी ... प्रातःकाल की स्वर्णिम बेला, सूरज की मखमली किरणों से आच्छादित धरा , पंछियों का कलरव... मंदिरों से आते घण्टियों के स्वर ... घरों में धीरे धीरे अंगडाई लेकर जागता हुआ जीवन। राम- राम ऊँ नमः शिवाय - हर हर महादेव - जय गुरुदेव की गूंज से गुंजायमान होता गगन ... और इन सब के बीच इस मनोहारी परिवेश में प्रतिदिन की तरह कोमल हाथों से किसी नन्हें से बच्चे की भांति पेड़ - पौधों की परवरिश करती 'आशासिंह राजपूत ... आंखों में आशा भरे सपने लिए मानों अपने नाम

को और जीवन को सार्थक कर रही हो।'

पति की मौत से हौसला नहीं खोया

धार की रहने वाली आशासिंह राजपूत पर्यावरण संरक्षण को लेकर प्रण और प्राण से जुटी एक विधवा नारी शक्ति है। शासकीय सेवारत पति की 2018 दुर्घटना में असामयिक मृत्यु के बाद हौसला नहीं खोया और 2019 से पेड़ - पौधों में ही अपना जीवन ढूंढ रही है आशासिंह ..

लहलहाते पौधें, वृक्ष का आकार धरते पौधे - चहुंओर हरीतिमा देख एक पल पति का विछोह भूल फिर नये सपने बुनती है किसी साधक की।

पति की मृत्यु के बाद मिल रही पेंशन से ही पौधों को खरीद कर - टैंकरों से पानी खरीद कर पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन का पुनीत कार्य कर आशासिंह ने शासन - प्रशासन की सहायता के बिना दृढ़ संकल्प और इच्छाशक्ति से 'उपवन' बना डाला।

शहीद स्मारक वाटिका ही बनी 'जीवन बसेरा'

भोर फटते ही आशासिंह पहुँच जाती हैंअपने सपनों को आकार देने के लिए शहीद भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव की पावन स्मृति रूपी शहीद स्मारक स्थित वाटिका में .... यही अपने हाथों से रौपे पौधों को लहलहाते देख जीवन के दुखों को भूल निकल पड़ती है धरा को संवारने... शहीद स्मारक वाटिका ही मानों 'जीवन बसेरा' बन गया हो... चुनौतियों और कठिनाइयों के बीच में लौह महिला के रूप में आशासिंह हमारे सामने है। ऐसे अनुकरणीय कार्यों को समाज और प्रशासन की गर सराहना मिले तो अन्य लोग भी सामाजिक सरोकारों और पर्यावरण संरक्षण के लिए आगे आएंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने गुना जिले में बाढ़/अतिवृष्टि प्रभावित क्षेत्रों का भ्रमण किया और राहत कार्यों को देखा।

सरकार का पहला कर्तव्य है नागरिकों की सुरक्षा : मुख्यमंत्री

सभी प्रभावितों को शीघ्र प्रदान किया जायेगा मुआवजा : केंद्रीय मंत्री सिंधिया

प्रभावितों को सहायता राशि वितरित

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार को शिवपुरी जिले के ग्राम पचावली पहुंचकर हाल ही में आई बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण किया। उन्होंने बाढ़ से प्रभावित स्थानीय नागरिकों को मकान क्षति तथा खाद्यान्न के लिए सहायता राशि प्रदान की। मुख्यमंत्री ने ग्राम पचावली में ग्रामवासियों की समस्याएं सुनीं।

इस दौरान केंद्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, शिवपुरी विधायक श्री देवेंद्र जैन, कोलारस विधायक श्री महेन्द्र सिंह यादव, पूर्व विधायक श्री प्रहलाद भारती, जनप्रतिनिधि, कलेक्टर श्री रवींद्र कुमार चौधरी, पुलिस अधीक्षक श्री अमन सिंह राठौड़, जिला पंचायत सीईओ श्री हिमांशु जैन भी उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जनहानि, पशुहानि अथवा फसल क्षति जैसी हर स्थिति में सरकार पीड़ितों के साथ है। प्रभावित परिवार को राहत राशि सीधे उनके खाते में प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि वे बाढ़ प्रभावितों के दुख-दर्द जानने आए हैं। सरकार हर हाल में प्रभावित परिवारों के साथ है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सरकार का पहला कर्तव्य हर नागरिक की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि अतिवर्षा से उत्पन्न परिस्थितियाँ हमारे लिए परीक्षा की घड़ी हैं। जनता के सहयोग और प्रशासन के समर्पण से स्थिति पर नियंत्रण पाया गया है। उन्होंने कहा कि अतिवृष्टि एवं बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में राहत कार्य निरंतर जारी रहेंगे। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में चलाए जा रहे राहत कार्यों की लगातार समीक्षा की जा रही है। शासन-प्रशासन पूरी मुस्तैदी के साथ राहत कार्यों में लगा है। उन्होंने बाढ़ प्रभावितों को ढांढस बंधाते हुए कहा कि चिंता न करें, दुख की घड़ी में सरकार आपके साथ है।

केंद्रीय मंत्री श्री सिंधिया ने कहा कि हम सुख-दुख के हर क्षण प्रभावितों के साथ हैं। संकट की घड़ी में हर संभव सहायता सुनिश्चित की जाएगी।

पंकज त्यागी भोपाल रेल मंडल के नए डीआरएम

देवाशीष त्रिपाठी से ली जिम्मेदारी, रेलवे बोर्ड से आए भोपाल, अधिकारियों ने किया स्वागत

भोपाल (नप्र)। पश्चिम मध्य रेलवे के भोपाल मंडल को नया डीआरएम मिल गया है। सोमवार (4 अगस्त) को वरिष्ठ रेल अधिकारी पंकज त्यागी ने मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) का पदभार ग्रहण किया। उन्होंने यह जिम्मेदारी देवाशीष त्रिपाठी से ली।

रेल मंत्रालय में कार्यकारी निदेशक (भूमि एवं अनुज्ञा) के पद पर कार्य कर रहे पंकज त्यागी अब भोपाल मंडल की कमान संभालेंगे। वे 1997 बैच के आईआरएसई (इंडियन रेलवे सर्विस ऑफ इंजीनियर्स) अधिकारी हैं और रेलवे की तकनीकी, परियोजना और प्रशासनिक कार्यप्रणाली में दो दशकों से अधिक का अनुभव रखते हैं।

विदेश में प्रशिक्षण से मिला अंतरराष्ट्रीय विजन

पंकज त्यागी ने सिविल इंजीनियरिंग में डिग्री प्राप्त की है और उन्हें सिंगापुर, मलेशिया, नॉर्वे और यूके में विशेष तकनीकी और प्रबंधन प्रशिक्षण प्राप्त हुआ है। सुरंग निर्माण में उनका विशेषज्ञ अनुभव रेलवे की आने वाली परियोजनाओं में उपयोगी साबित हो सकता है। भोपाल मंडल के अधिकारियों और कर्मचारियों ने पंकज त्यागी के आगमन पर स्वागत किया और शुभकामनाएं दीं।

मुगलसराय से शुरू हुआ सफर, रेलवे बोर्ड तक का अनुभव

पंकज त्यागी ने अपने करियर की शुरुआत पूर्व रेलवे के मुगलसराय मंडल में सहायक अभियंता (निर्माण) के रूप में की थी। इसके बाद उन्होंने फिरोजपुर मंडल में वरिष्ठ मंडल अभियंता (समन्वय), रेलवे बोर्ड में निदेशक (सिविल इंजीनियरिंग योजना) और मुख्य परियोजना प्रबंधक (एनसीआरटीसी) मेरठ जैसे कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है। भारत की पहली रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (आरआरटीएस) परियोजना दिल्ली से मेरठ के बीच के मार्ग निर्धारण, योजना और क्रियान्वयन में पंकज त्यागी की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

बिग बॉस में एंट्री के नाम पर डॉक्टर से ठगी

60 लाख रुपए में तय हुआ था सौदा, दस लाख रुपए एडवांस के नाम पर हड़पे

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल के प्रसिद्ध पॉइजन क्लिनिक के डर्मेटोलॉजिस्ट (त्वचा रोग विशेषज्ञ) डॉक्टर अभिनीत गुप्ता के साथ मुंबई की एक इवेंट कंपनी के डॉयरेक्टर ने टीवी सीरियल बिग बॉस में एंट्री कराने के नाम पर दस लाख रुपए की ठगी कर ली। 60 लाख रुपए में उन्हें एंट्री दिलाना तय हुआ था। एडवांस दस लाख रुपए दिए गए थे।

तीन साल बीतने के बाद भी जब अभिनीत की शो में एंट्री नहीं हो सकी तो उन्होंने अपनी रकम लौटाने की बात मुंबई के ठग से की। जिसके बाद उसने कॉल और मैसेज का रिप्लाई देना बंद कर दिया। डॉक्टर की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धोखाधड़ी समेत विभिन्न धाराओं में केस दर्ज किया है।

एसआई उदय सिसोदे ने बताया कि फ्रेंड्स सोसाइटी चूना भट्टी निवासी डॉ. अभिनीत गुप्ता (36) डर्मेटोलॉजिस्ट (त्वचा रोग विशेषज्ञ) हैं। उनकी कोलार रोड पर पॉइजन एंट्री एजिंग स्किन नाम से क्लिनिक है। उन्होंने पुलिस को बताया कि अंधेरी वेस्ट मुंबई निवासी करण सिंह उर्फ प्रिंस नाम का व्यक्ति इवेंट कंपनी का डॉयरेक्टर है।

जिनोदय परिवार, पैराडाइज हिल टाउनशिप, सिरोंज द्वारा कावड़ यात्रा का भव्य स्वागत

2 जेसीबी मशीन से हुई पुष्पवर्षा एवं प्रसाद वितरण

सिरोंज/पैराडाइज हिल। श्रावण मास के चौथे सोमवार की विशाल पावन कावड़ यात्रा का स्वागत इस बार पैराडाइज हिल टाउनशिप द्वारा एक अनोखे और अभूतपूर्व तरीके से किया गया। संस्था के सदस्यों ने पूरे श्रद्धा और उत्साह के साथ शिवभक्तों पर जेसीबी मशीन की सहायता से पुष्पवर्षा की, जिसने सभी का मन मोह लिया।यह स्वागत शैली सिरोंज नगर में पहली बार देखी गई, जिसने न केवल शिवभक्तों

को भावविभोर किया बल्कि उपस्थित जनसमुदाय को भी आनंदित कर दिया। संस्था के सदस्यों द्वारा ढोल-नगाड़ों और भक्ति गीतों के साथ जोरदार स्वागत किया गया। पूरा परिसर हर हर महादेव के जयघोष से गूंज उठा।

जिनोदय परिवार, पैराडाइज हिल टाउनशिप टीम का यह अभिनव प्रयास समाज में आस्था और नवाचार का सुंदर संगम प्रस्तुत करता है। शिवभक्तों के प्रति ऐसा समर्पण और भावपूर्ण स्वागत अनुकरणीय उदाहरण बन गया है।

फिलहाल राहत... मगर तूफान अभी बाकी है!

राजनीतिक गलियारों में 'मछली गैंग' के कथित संरक्षक एक मंत्री की किस्मत का सितारा फिलहाल गर्दिश में जाने से बच गया है। दिल्ली दरबार में हुई दौड़-भाग और भाग-दौड़ का नतीजा ये रहा कि उन्हें अभयदान मिल गया। चर्चा है आलाकमान उन पर काफी नाराज़ था और उन पर तलवार लटकी हुई थी,

मोहन का मंत्रालय

आशीष चौधरी

लेकिन प्रदेश में चल रहे मानसून सत्र और राजनीतिक दांव-पेच को देखते हुए फिलहाल उनकी कुर्सी बच गई है। मगर मंत्री महोदय ये समझ लें कि ये सिर्फ ब्रेक है, एंड नहीं। ये राहत सिर्फ फिलहाल के लिए है, क्योंकि उनके कारनामों की फाइल अभी भी ठंडे बस्ते में नहीं गई है, बल्कि उस पर नज़र रखी जा रही है। राजनीतिक पंडितों का मानना है कि मानसून सत्र खत्म होते ही और परिस्थितियों के बदलते ही, इस संकट का दूसरा भाग सामने आ सकता है। दिल्ली से आया अभयदान एक छोटा-सा झोंका है, तूफान अभी बाकी है। वैसे चर्चा यह भी है कि सरकार में किसी पर गाज गिराना आसान नहीं होता।

साहब का वास्तु प्रेम, ताकि कुर्सी रहे सलामत

सचिवालय के गलियारों में आजकल एक सीनियर IAS अधिकारी के कक्ष में बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है। साहब के साथ तालमेल बिठाने में आ रही दिक्कतों को दूर करने के लिए, अधिकारी महोदय ने अब वास्तु शास्त्र का सहारा लिया है। जी हाँ, आपने सही पढ़ा। पहले जो साहब के कक्ष में प्रवेश का दरवाजा था, उसे अब पूरी तरह से बंद कर दिया गया है। अब उनका प्रवेश द्वार पूरब दिशा की ओर से है और कुर्सी का रुख उत्तर की ओर कर दिया गया है। लगता है अधिकारी जी ने यह मान लिया है कि कागजी कार्रवाई और नीतियों से ज़्यादा, उनकी कुर्सी की दिशा उनके भविष्य का फैसला करेगी। अब देखना यह है कि क्या यह वास्तु-परिवर्तन साहब के मन का वास्तु भी बदल पाता है या नहीं। यह तो वक्त ही बताएगा, लेकिन इतना तय है कि सचिवालय में अब फाइलें तो अपने हिसाब से चलेंगी, पर अधिकारी जी की नज़र दिशा पर ही रहेगी।

मंत्री की नर्मदा पर अटूट आस्था

राज्य विधानसभा में सोमवार को एक अद्भुत और आस्था का दृश्य देखने को मिला। प्रदेश में गिरते भूजल स्तर और सूखती नदियों पर चर्चा हो रही थी, और हमारे एक मंत्री जी (जिनकी माँ नर्मदा नदी के प्रति अटूट आस्था जगजाहिर है) इसका जवाब दे रहे थे। मंत्री जी ने आधा घंटे से अधिक समय तक जवाब देते समय अपनी चप्पलें उतार दीं और नंगे पैर खड़े होकर अपनी अटूट आस्था का परिचय दिया। उन्होंने नर्मदा के उद्गम से लेकर परिक्रमा तक का ऐसा भावुक वर्णन किया कि सदन में मौजूद सभी विधायक अविभूत हो उठे! तभी संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने इस पल पर सबका ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि, देखिए, हमारे प्रह्लाद पटेल जी की नर्मदा के प्रति कितनी अटूट आस्था है कि वो सदन में भी नंगे पैर खड़े होकर जवाब दे रहे हैं। बता दे कि मंत्री प्रहलाद पटेल दो बार मां नर्मदा नदी की परिक्रमा कर चुके हैं और उन्हें क्षेत्र की जनता नदी पुत्र भी कहती है।

जहाँ नाम भी इत्तेफाक नहीं!

विधानसभा का मानसून सत्र... और एक बार फिर देखने को मिली अपनों के बीच की खींचातानी। इस बार निशाना बना एक मंत्री, और तीर चला एक पूर्व मंत्री की जुबान से। हुआ यूँ कि पूर्व मंत्री जी ने सदन में बड़े जोर-शोर से बुंदेलखंड के एक जमीन घोटाले का जिक्र किया। घोटाला तो घोटाला, लेकिन बात तब दिलचस्प हो गई जब आरोपी का नाम मंत्री जी के नाम से इत्तेफाकन मिल गया। अब इस इत्तेफाक को आप क्या कहेंगे? ये तो वही बात हो गई कि नाम बड़े और दर्शन छोटे (या बड़े, ये तो जांच के बाद ही पता चलेगा!)। जब मीडिया ने मंत्री जी से इस हमले पर सवाल किया, तो उनका जवाब भी कम मजेदार नहीं था। उन्होंने बड़े ही भोलेपन से कहा, 'पता नहीं पूर्व मंत्री जी मुझसे इतना क्यों खफा हैं कि वो सदन में भी मेरे कान खींचने का मौका नहीं छोड़ते।' और फिर जोड़ा, 'जबकि मुझे भाजपा में लाने का श्रेय भी उन्हें ही जाता है।' वाह! क्या बात है। अब इसे दोस्ती कहेंगे या दुश्मनी, ये तो वक्त ही बताएगा। लेकिन एक बात तो तय है, राजनीति की बिसात पर कान खींचने की ये परंपरा अभी भी खूब चल रही है।

दीर्घा में सीनियर्स को तलाशनी पड़ती है कुर्सी

मध्य प्रदेश विधानसभा के गलियारों में सोमवार को एक दिलचस्प दृश्य देखने को मिला। प्रश्नकाल चल रहा था और अधिकारियों की दीर्घा पूरी तरह से भरी हुई थी। तभी एक अपर मुख्य सचिव स्तर के सीनियर अधिकारी का आगमन हुआ। लेकिन... यहाँ तो बैठने की जगह ही नहीं थी! बेचारे साहब, जिनके नाम के आगे फ्रंट शब्द लगा होता है, उन्हें मजबूरन पीछे की सीट पर बैठना पड़ा। यह देख कर विधानसभा के स्टाफ का का ध्यान गया और फिर आनन-फानन में विधानसभा के स्टाफ ने उनके लिए फ्रंट की कुर्सी का इंतज़ाम किया। सूत्र बताते हैं कि यह कोई इत्तेफाक नहीं है। अब अधिकारियों की दीर्घा में मंत्रियों के पी.ए. तक कब्जा जमाने लगे हैं, जबकि नियमों के अनुसार यहाँ सचिव स्तर से नीचे के अधिकारी बैठ ही नहीं सकते। यह तो वही बात हो गई कि प्रोटोकॉल सिर्फ कागजों पर है, जबकि पॉलिटिकल पावर का जलवा ही कुछ और है। अब देखना यह है कि क्या इस घटना के बाद विधानसभा की दीर्घा में बैठने का प्रोटोकॉल फिर से लागू होगा या फिर सीनियर आईएएस अधिकारियों को भी सिटिंग अरेंजमेंट के लिए संघर्ष करना पड़ेगा।